श्री वीतरागाय नमः ।

श्री जीवंधर चरित्र

क्षत्रचूडामणि

गुजराती अनुवाद

मुबाईनिवासी स्वर्गवासी शेठ
भगवानदास कोदरजीना स्मरणार्थे
तेमना पुत्र ठाकोरभाई झवेरी
तरफथी "दिगबर जैन" पत्र
ना ग्राहकोने छठ्ठा वर्षमा
(पाचमी) भेट

प्रकाशक—
मुलचंद कसनदास कापडीआ
ऑ. सपादक,
"दिगंबर जैन"—सुरत.

स्वर्गे शेठ भगवानदास कोदरजी स्मारक ग्रंथमाळा नं. १

दिगंबर जैन ग्रंथमाळा नं. १७

॥ श्री वीतरागाय नमः ॥

श्रीमद् वादीभसिंह सूरिविरचित

श्री जीवंधर चरित्र.

(क्षत्रचूडामणि ग्रंथ)

मूळ संस्कृतना हिंदी अनुवादनुं गुजराती भाषांतर कर्ता

डॉ. भाइलाल कपूरचंद शाह–नार (खेडा.)

संशोधक अने प्रकटकर्ता,

मूळचंद किसनदास कापडीया.

ऑनररी संपादक, "दिगंबर जैन"–सुरत.

मुंबाइ निवासी स्वर्गे शेठ भगवानदास कोदरजीना स्मरणार्थे
तेमना पुत्र ठाकोरभाइ झवेरी तरफथी "दिगंबर जैन"
पत्रना ग्राहकोने छठ्ठा वर्षमां (पांचमी) भेट.

प्रथमावृत्ति — प्रत १६००

वीर संवत २४३९. — विक्र. सं. १९६९

मुल्य रु. ०–८–०

Published by
Moolchand Kisondas Kapadia
Honourary Editor, "Digamber Jain"—SURAT

Printed by
Matoobhai Bhaidas at the "Surat Jain Printing Press",
Khapatia Chakla—SURAT.

प्रस्तावना.

विक्रम संवतना लगभग ११ मा सैकामां थइ गयेला दिगंबर जैन आचार्य श्री वादीभसिंहसूरिए आ "क्षत्रचुड़ामणी" याने "जीवंधर चरित्र" ग्रंथ संस्कृत काव्यमा रचेलो छे, जेनो हिंदी अनुवाद लाहोरनिवासी वृद्ध, विद्याविलासी अने धर्मप्रेमी लाला मुंशीलालजी जैनी एम. ए. (गवर्नमेंट पेंशनर) द्वारा तैयार करावीने मुबाईना 'जैनग्रथ रत्नाकर कार्यालय' द्वारा "जैनहितैषी" पत्रना सपादक श्रीयुत नाथुराम प्रेमीजीए प्रकट कर्यो छे, जेनु गुजराती भाषातर अमदावादनी शेठ प्रेमचद मोतीचद दिगबर जैन बोर्डिगना एक आगला विद्यार्थी अने हाल नार(खेडा)मा डॉकटरी धधो करता डॉ. भाइलाल कपुरचंद शाहे फुरसदनी वखतमां तैयार करी मोकली आपेलु, ते मशोधन करीने आ ग्रथ प्रकट करवामां आवे छे.

आ ग्रंथना नायक श्री जीवंधर स्वामी क्षत्रियोना चुड़ामणी अर्थात् वीरशिरोमणी हता, तेथी आ काव्यग्रथनुं नाम क्षत्रचुडामणी रखायलुं छे. संस्कृत साहित्यमा आ एक अपूर्व ग्रंथज छे. आ ग्रथनी कथा एटली तो रुचिकर, सुंदर, चित्तने आर्कषण करनार तथा अनेक कहेवतो अने दृष्टांतोथी भरपुर छे के, जेथी वाचकोने गम्मत साथे अपूर्व ज्ञान प्राप्त करवानुं एक

उत्तम साधन छे, तथा एमांनी दरेक कहेवत कंठस्थ करवा लायक छे. आपणे चोतरफ द्रष्टी दोडावींशुं. तो मालुम पडशे के, आपणा श्वेतांबरी बधुओमा गुजराती भाषामां पुष्कळ ग्रथो बहार पडी गया छे अने नवीन नवीन बहार पडताज जाय छे, पण आपणामां गुजराती भाषाना ग्रथो मात्र आगलीना वेढा उपर गणाय तेटलाज हजु प्रकट थयेला छे, तेमज गुजरातना दिगंबर जैनोमां उपदेशना अभावने लीधे वाचननो शोख विशेष न होवाथी, जो कोइ पुस्तक किमतथी प्रकट करवामा आवे छे, तो तेनी मुद्दल किमत उपजवी पण मुश्केल थइ पडे छे, जेथी लगभग ४ वर्ष थया अमोए एक एवो प्रयास आरभेलो छे के गुजराती भाषामा नवीन नवीन पुस्तकोना भाषातरो करी प्रकट करवा अने तेनो ज्या सुधी बने त्या सुधी मफत अथवा तो जुज किमते फेलावो करवो आ प्रयासमा अमोने धीमे धीमे सफळता प्राप्त थती जाय छे, जे दि जैन कोमने एक आनंद-दायक बीना छे.

आ मुजब धर्म परीक्षा, सुदर्शन शेठ, सुकुमाल चरित्र, मनोरमा, वगेरे ग्रथो गुजराती भाषामा प्रकट करी जुदा जुदा ग्रहस्थो पासे मदद मेळवी, तेनो मफत फेलावो थइ चुक्यो छे अने आ ग्रंथ पण ते मुजब तदन भेट तरीकेज वेचवा माटे प्रकट थाय छे.

९

मुंबाई निवासी दानवीर जैनकुलभूषण शेठ माणेकचंद हीराचंद जे. पी. ना भाणेजना भाणेज भाइ ठाकोरदास भगवानदास झवेरी के जेओ मुबाई दिगबर जैन प्रांतिक कोन्फरन्सना उपदेशक विभागना सेक्रेटरी तथा ही गु जैन बोर्डिंगना आ. सेक्रेटरी छे, तेओए पोताना स्वर्गवासी पिताश्री शेठ भगवानदास कोदरजीना स्मरणार्थे आ ग्रथ अने ए पछी एवा अनेक ग्रथो प्रकट करवानी जे स्थायी गोठवण करी छे, ते अत्यत धन्यवादरुप अने बीजा भाइआए अनुकरण करवा योग्य छे. जो आ मुजब मृत्युना स्मरणार्थे शास्त्रदान माटे स्थायी रकम काढवामा आवती रहे, तो भविष्यमां ढगलाबध पुस्तको गुजराती भाषामा मफत प्रकट थइ शके आवी रीते शास्त्रदान करवाथी पुण्य, कीर्ति, अमरनाम अने चारे प्रकारना दाननी प्राप्ति थाय छे, माटे श्रीमत बधुओनु आ बाबत उपर लक्ष खेंची आ टुक उपोद्घातथी विरमीए छीए.

वीर सवत २४३९
चैत्र सुदी ४ ता १०।४।१३

जन जाति सेवक
मुलचद कसनदास कापडीया
ऑ सपादक "दिगबर जैन"—सुरत.

स्वर्ग. शेठ भगवानदास कोदरजी स्मारक-
ग्रंथमाळानो उपोद्घात.

सुरतना वत्नी परंतु व्यापारार्थे मुंबाइ निवासी वीसा हुमड दि. जैन ग्रहस्थ शेठ भगवानदास कोदरजी विक्रम सवत १९६७ मां मुबाइमां स्वर्गवासी थया, ते वखते पोताने हाथे पोतानी सावधानीमाज रु. ३५००) नी रकम **विद्यादान अने शास्त्रदान** माटे एवी रीते स्थायी तरीके काढी गया छे के, आ रकम शेठ हीराचद गुमानजी जैन बोर्डिंग (मुंबाइ)ना **ट्रस्ट फंडने** स्वाधीन राखवी अने तेमाथी रु. २०००) ना व्याजमाथी जैन विद्यार्थीओने **स्कोलरशीप** आपवी अने तेमां प्रथम हक दिगबरी विद्यार्थीनो राखवो तथा रु. १५००) ना व्याजमांथी दर वर्षे एकेक धार्मिक पुस्तक प्रकट करावी **सुरतमां** वैशाख सुद १५ने दीने विद्यानंद स्वामीना मदिरनी वर्षगांठ निमित्त विद्यानद स्वामी उपर सर्वे जैनोने वहेचवु तथा सुरतथी प्रकट थता "दिगबर जैन" पत्रना ग्राहकोने पण भेट तरीके वहेंचवुं. आ मुजब आ ग्रंथमालानी शरुआत थाय छे अने तेना प्रथम पुस्तक तरीके आ "श्री जीवधर चरित्र" याने "क्षत्र चुडामणी" ग्रथ आ विद्याविलासी गृहस्थना स्मारक तरीके तेमना फोटा सहित प्रसिद्ध करवामा आवे छे.

प्रकटकर्ता.

थयुं. ९१. योगीन्द्रनुं आ वाक्य सांभळीने जीवंधर महाराज राज्यथी एवा डर्या के जेमके साप वीजळीना खरवाथी डरे छे अने पछी नमस्कार करीने पोताना नगरमां आव्या. ९२.

त्यार पछी तेमना नन्दाढ्य आदि नाना भाईओए अने तेमनी आठे स्त्रीओए पण सद्धर्मरुपी अमृतनुं पान कर्युं अने तेथी ते सर्व विषयभोगोना सुखने विष तुल्य समझ्या. ९३. त्यारे त्या विद्वान जीवंधर स्वामी गंधर्वदत्ताना पुत्र सत्यंधरनो राज्याभिषेक करीने अर्थात् तेने गादीपर बेसाडीने पोते पोतानी आठे स्त्रीओ साथे भगवाननु समोसरण प्राप्त कर्यु. ९४.

समवसरण सभामा आवीने पूज्य राजाए श्रीमहावीर तीर्थंकरनी पूजा करी अने वारंवार स्तुति करी ९५ —हे भगवान! हु ससारना जन्ममरणना रोगथी सदा पीडित अने भयभीत रहुं छुं, तेथी आप जेवा अकारण वैद्यना उपस्थित होवा छता पण शुं ते तीव्र पिडा सहेवा योग्य छे? अर्थात् आप एवो उपाय करो के, जेथी आ पिडा सहेवी पडे नहि.९६. आप बधाना हितकारी छो, सर्व कई जाणो छो, प्रारब्धना बधां कर्मोनो नाश करी शको छो, अने हु एक भव्य छु. पछी मारो आ जन्ममरणरुप भवरोग केम दूर थतो नथी? ९७. हे मोहरहित भगवान! हुं आ देहरुपी पुराणा अने मोटा वनमां मोहरुपी दावानळथी बळी रह्यो छुं. अने तेथी निरन्तर मोहित थई रह्यो छु, मारी रक्षा करो! रक्षा करो! ९८.हे वीतराग! बधी विपत्तिओनु फळ आपनार संसाररुपी विषवृक्षना मारा रागरुपी अकुरोने जडथी उखेडीने फेंकी दो! ९९. हे रक्षा करनार

भगवान ! संसार सागरना मध्यमां डूबता में रत्नत्रयरुपी नौका बहु कठीणाईथी प्राप्त करी छे, तेथी ए नौका मने मोक्षपार पहोंचाडनारी छे. १००.

आ रीते त्रण जगतना गुरु श्रीमहावीर भगवाननी स्तुति कर्या पछी जीवंधर महाराजे आज्ञा लईने जिनदीक्षा माटे गणधर देवने नमस्कार कर्या. १०१. पछी बुद्धिमान राजाए दिगम्बरी दीक्षा लईने ते महावीर भगवान आगळ बहु कठण तप कर्युं, के जेथी ज्ञानावरणीय, दर्शनावरणीय, वेदनी, मोहनीय, अतराय वगेरे आठे कर्मोनो अनुक्रमे नाश थई जाय छे १०२.

त्यारपछी जीवंधर महामुनि त्रणे रत्नोनी पूर्तिने माटे अनन्तज्ञान, अनन्तसुखादि गुणोथी पुष्ट थया. १०३ अने अतमां तेमणे सिद्धपदवी प्राप्त करीने अलौकिक शोभायुक्त केवळज्ञानरुपी अतुल्य, अमुल्य अने अनन्त मोक्षलक्ष्मीनो अनुभव कर्यो. १०४.

आ रीते जे महान इच्छावाळो पुरुष ते महान सुखने प्राप्त करवानी इच्छा करे छे, के जे पवित्र जैनधर्मद्वारा बधां कर्मोनो नाश थवाथी मळे छे, ते बुद्धिमाने कल्याणनी प्राप्तिने माटे पवित्र जैनधर्मनु अवलम्बन करवुं जोईए के जे जैनधर्म कुमतिरुपी हाथीने मारवामां सिंह समान छे १०५.

गुणोए करीने बधा क्षत्रीओना चूडामणि (शिरोमणि), प्रभाव अने युवावस्थाए करीने शूरवीर, अने महान ऐश्वर्यथी कुबेरतुल्य ए राजाओना राजा जीवंधर शोभायमान हो! १०६.

आ प्रमाणे श्रीमान् वादीभसिंहसूरिए रचेल क्षत्रचूडामणि ग्रन्थमां मुक्तिश्रीलम्भ नामे अगीआरमु प्रकरण पूर्ण थयु.

॥ ॐ नमः सिद्धेभ्यः ॥

श्री वादीभसिंहसूरि विरचित,

श्री जीवंधर चरित्र.

(क्षत्र चूडामणी)

प्रकरण १ लुं.

जेनी भक्ति मुक्तिरुपी कन्याने वरवामां द्रव्यनु काम करे छे, अर्थात् वर कन्याने पहेरामणी पल्लु आपीनेज विवाह थाय छे तेम, जेनी भक्तिथीज मुक्ति प्राप्त थाय छे, एवा अंतरंग अने बहिरंग लक्ष्मीना स्वामी श्री जीनेंद्र भगवान! आप संपूर्ण भक्तोनी ईच्छाने पूर्ण करो १

हु जीवंधर स्वामीनु चरित्र सक्षिप्त रीतथी वर्णन करु छु; कारण के बधुं अमृत पीवाथीज कई सुख प्राप्त थतुं नथी. थोडु पीवाथीज थाय छे. सारांश ए छे के, जेवी रीते थोडुं अमृत पण सुखकारक छे, तेवीज रीते सक्षेपथी कहेलु पण आ चरित्र आनंदने उत्पन्न करनार थशे. २.

सुधर्म नामना गणधरे श्रेणिक राजाना प्रश्न करवाथी जेवी रीते वर्णन कर्यु हतु, तेवीज रीते हु पण आ चरित्रनु मोक्ष पामवानी इच्छाथी वर्णन करु छुं ३

आ लोकमा जंबुद्वीपने सुशोभीत करनार भरतखंडनी अतर्गत हेमकोशोनी अर्थात् सोनानी खाणोथी शोभाने धारण करनार एक हेमांगद नामनो प्रदेश छे ४ अने ते प्रदेशमां राजपुरी नामनी राजधानी सुशोभित छे, जे विधाताए बनावेली राजराजपुरी अर्थात् अलकापुरीनी रचनामा मातानी समान आचरण करे छे, अभिप्राय ए छे के, यद्यपि अलकापुरीनी रचना सर्वेथी उत्तम छे, परतु आ नगरी ते अलकाथी पण श्रेष्ठ छे. ५ आ नगरीमा सत्यंधर नामनो राजा राज्य करतो हतो, ए राजा सत्य बोलनार (वक्ता), वृद्धोनी सेवा करनार, बहुज बुद्धिमान, सदा उद्योग करनार अने आग्रह के हठ वगरनो हतो. ६. आ राजानी विजया नामनी मुख्य अने प्रसिद्ध पट्टराणी हती, जेणे पोताना पातिव्रत्यादि गुणोथी ससारनी सपूर्ण स्त्रीओ-पर विजय प्राप्त कर्यो हतो, अर्थात् सर्वने जीती हती, अने तेथीज तेनु नाम विजया राखवामा आव्यु हतु ७ राजा अ-तःपुरनी बधी स्त्रीओमार्थी आनापर अधिक प्यार राखतो हतो, अने कोइपर एटलो स्नेह राखतो नहोतो, कारणके सौभाग्य बहु दुर्लभ छे, अर्थात् बधी स्त्रीओ सौभाग्यवती होती नथी, कोइ कोइ होय छे. ८.

जो के निष्कटक राज्य करनार आ राजा बुद्धिमानोनो शिरोमणि हतो, तोपण पोतानी राणी विजयामा रातदिवस आ-शक्त रहेतो हतो अने कई जाणतो नहोतो. ९. **जे पुरुषोनुं चित्त विषयोमां लागेलुं रहे छे, तेना बधा गुण नाश पामे छे.** तेनामा पाण्डित्य रहेतु नथी, मनुष्यभाव रहेतो नथी, कुलीनता रहेती नथी अने सच्चाइ रहेती नथी १०. कामी माणस कोइ वातथी डरतो नथी, पारकी सेवा सबधी दीनताथी, चाडी खावा थी. निन्दाथी, अने पोतानो पराभव थवाथी पण—तिरस्कार थवाथी पण डरतो नथी ११ कामथी पीडीत माणस भोजन, दान, विवेक, वैभव अने मानादिक सर्वने छोडी दे छे, बीजु तो शु. परतु पोताना प्राणनो पण त्याग करी दे छे. १२.

पछी ते राजाए एवु धार्यु के, बधु राज्य **काष्ठांगारने** सोपी दउ, कारणके जे लोक राग के अनुरागथी आधळा होय छे तेने विचार के अविचार होतो नथी, अर्थात् ते ज्या सुधी सारी रीते ओळखवामा आवे नहि, त्या सुधी सुदर मालुम पडे छे १३ ते वखते तेना मुख्य मुख्य मन्त्रिओए आवीने कह्यु के, हे देव ! आपने विदित छे अने आप जाणो छो, तोपण अमारी आ प्रार्थना साभळो, १४ ज्यारे राजाओए पोताना हृदयपर पण विश्वास करवो जोईए नहि, तो पछी बीजा मनुष्य उपर भरोसो राखवो सर्वथा अनुचित छे, राजा नटोनी माफक आचरण करे छे, अर्थात् फक्त बहारथी विश्वा-सपात्र देखवामा आवे छे, लोक समजे छे के, अमारा पर

विश्वास करे छे, परंतु अंदरथी एवुं होतुं नथी. कोईनो पण विश्वास करतो नथी. १५. ज्यारे धर्म अर्थ अने कामनुं एक बीजानो विरोध कर्या विना यथोचित सेवन कराय छे; अर्थात् केवळ धर्मज सेवन करातो नथी, तेम अर्थ (धन) अने काम पण नहि, परतु त्रणे जीतवा जोईए. तेटला परिमाणमा सेवन कराय छे, त्यारेज निर्विघ्ने सुख प्राप्त थाय छे, अने पछी अनुक्रमे मोक्ष अर्थात् चोथा पुरुषार्थनी प्राप्ति थाय छे. १६. तेथी तथा राजाओए सुख प्राप्त करवानी इच्छाथी धर्म अने अर्थ छोडवा नहि, अने जो आप केवळ कामद्वारा सुखनी इच्छा करता हो, तो ते थइ शकती नथी, कारणके निर्मूळने सुख क्यां ? अर्थात् कामना मूळभूत धर्म अने अर्थ (धन) छे ज्यारे ए बन्नेज नहि होय, त्यारे कामसेवन केवी रीते होय ? १७ जे वस्तु नाश पामनार छे अने आगळ आववावाळी छे, तेने पहेलां प्राप्त करवी जोइए. अने ज्यारे ते प्राप्त थइ गइ, त्यारे तेना फळोनो विचार करीनेज आगळ कोइ उपाय करवो जोइए, नहि तो पश्चात्ताप करवो पडे छे १८

जो के मत्रिओए राजाने ए रीते सर्व उचुनीचु जणाव्यु, तोपण तेणे मूर्खताथी काष्ठांगारने राज्यभार सोंपी दीधो, सत्य छे के, बुद्धि कर्मने अनुसार काम करे छे. अर्थात् जेवुं थनार होय छे तेवीज बुद्धि सुझे छे. १९. विरक्त पुरुषोनो समय विषय भोगादिकनो आंधळो विचार करवामा अर्थात् तेने मूर्खतानु काम समजवामा व्यतीत थाय छे, परतु राजा प्रबळ भोगादिकथी

आकृष्ट थईने अने गाढ रागमां लिप्त थईने पोतानो समय गाळवा लाग्यो. २०.

एक दिवस उंघमा सूतेली विजया राणीए प्रभातने वखते अर्थात् पाछली रात्रे स्वप्न दीठु; कारणके ज्यां सुधी स्वप्न आवतुं नथी, त्या सुधी शुभ के अशुभनो (इष्ट के अनिष्टनो) प्रादुर्भाव (उत्पत्ति) कदापि थतो नथी. २१. पछी शौचादिकथी निवृत्त थईने राणी पोताना स्वामी राजा पासे आवी अने अर्धा आसन उपर बेसीने पृथ्वीना उपभोग करनारा राजाने कह्युं–"(मने स्वप्नमां पहेलु ए देखायु के एक अशोक वृक्ष छे, जेने कोईए काप्यु छे, पछी तेनी जग्याए एक सोनानुं अशोक देखायु, त्यार पछी आठ माळाओ दीठामा आवी)" २२ राजा आ त्रणे स्वप्नो साभळीने कईक उद्विग्नचित्त अर्थात् उदास थई गयो, अने तेनु फळ क्रम रहित कहेवा लाग्यो. अर्थात् पहेलु प्रथम स्वप्न छोडीने पाछला बे स्वप्ननु फळ कहेवा लाग्यो २३ कारणके धन, दोलत, पुत्र, मित्र, स्त्री आदि सर्व कई होवा छता पण मनुष्योना हृदयोने पोतानो प्राण नाश थवानो डर शकु अथवा त्रिशूलनी माफक पीडा आपे छे २४ हे देवी ! ते स्वप्नमा जे तरुण अशोक मोर सहित दीठु छे तेथी, ए विदित थाय छे के, तारे एक मोटो प्रतापी पुत्र उत्पन्न थशे अने आठ माळाओ तेनी आठ वहुओने बतावे छे, अर्थात् तेनी आठ स्त्रीओ थशे २५ राणीए कह्यु–" हे आर्यपुत्र ! तेना पहेला जे वृक्ष दीठु हतु अने फरी तेनो नाश थतो हतो, तेनु शु फळ छे ?

राजाए कह्युं–" हे देवी ! अशोक वृक्ष पण कइ कहे छे, अर्थात् तेने जोवाथी पण कइ सूचित थाय छे. (एवु कहीने राजाए वात उडावी दीधी एटले स्पष्ट उत्तर आप्यो नहि.) २६ परतु स्वामीनु ए वचन सांभळीने अने तेना मुखनी मलीनता जोइनेज राणी जमीनपर पडी गइ अने मूर्छित थइ गइ, कारणके **हृदयनो भाव मुखनी चेष्टाथी प्रगट थाय छे.** २७. त्यारे राजाए मोहथी मोहित थईने राणीने जागृत करी अने कह्यु,–कारणके पिशाचपीडा अने महा कष्ट थवा छता पण पुरुषत्व जागृत रहे छे २८. "हे राणी ! स्वप्न देखवाथीज तु केम मने तत्काळ मरेलो समझे छे ? जे लोक फळवाळा वृक्षनी रक्षा करवा इच्छे चे, ते तेने बाळता नथी, तेथी तु मने अत्यारथीज केम मारे छे ? २९ **विपत्ति दूर करवाने माटे मनुष्योने शोक करवाथी शो लाभ थाय छे ?** तग के उष्णतानु दु ख निवारण करवाने माटे कोई आगमा पडतु नथी ३० तेथी एम निश्चयथी जाणी ले के, **आपत्तिनो उपाय धर्मज छे.** कारणके जे देशमा दीवो बळतो रहे छे, त्या अधकार होतो नथी, अर्थात् **धर्मरुपी दीपकज विपत्तिरुपी अंधकारनो नाश करनार छे.** " ३१ स्वामीना आ प्रकारना वचन साभळीने तेने धीरज आवी अने ते पहेलांनी माफक पति साथे फरी रमण करवा लागी, कारण के दु खनी पीडा थोडाज वखतने माटे थाय छे ३२.

स्वप्नद्वारा राजाने जागृत करवानु इच्छ्युं हतुं, परतु ते जागृत थयो नहि. अर्थात् तेणे विषय भोगने छोडीने पोताना राज्यने सभाळ्यु नहि हवे राणीए गर्भ धारण कर्यो, तेथी मानो के तेणे राजाने फरी सबोधित कर्यो के सचेत थई जाओ. ३३. हवे राजा, राणीने गर्भवती जोईने अने स्वप्ननु फळ निश्चय करीने पोतानी रक्षाने माटे तत्पर थईने पश्चाताप करवा लाग्यो. ३४ " हु बहु अभागी छु, के मे मत्रिओना वाक्योनु वृथा उलघन कर्यु "सत्य छे के अविवेकी अर्थात् मूर्ख पुरुप **अन्तकाळेज सज्जनोना बचनपर विश्वास करे छे,** पहेला नहि. ३५ विना समये करेली इच्छा मनोरथने पूर्ण करती नथी. जुओ, ज्यारे फळ लागवानो वखत आवे छे त्यारे शु फूल एकठां करवामा आवे छे ' कदापि नहि." ३६.

राजाए ए रीते मनमा दु खी थईने पोताना वंशनी रक्षाने माटे एक **मयुराकृति यंत्र** बनाव्यु, कारणके सज्जनोनी आस्था आ नाशवान शरीरमा होती नथी, जेटली के यशरुपी शरीरमा होय छे ३७ अने पछी ते पोतानी गर्भवती राणीनी दोहद क्रीडाओनो अनुभव करवाने माटे क्रीडा करवा लाग्यो अने तेने ते केकीयत्रमा (मयुर यत्रमा) बेसाडीने आकाशमां विहार करवा लाग्यो. ३८

एवा वखतमा राजानो वध करवानी कृतघ्नता करनार अने पृथ्वीने पोताना ताबामा लावनार काष्ठागार विचारवा लाग्यो के–३९. **"जीवोने पराधीन जीवन व्यतीत करवाथी**

तो तेमनुं मरवुं सारुं छे (पराधीन स्वप्नमा सुख नथी) अथवा वनमा मृगेंद्र के सिंहने प्रभुताई कोणे आपी छे? अर्थात् प्रत्येक मनुष्य पोतानाज पुरुषार्थ अने बाहुबळथी स्वतंत्र थई शके छे" ४०, पछी तेणे मंत्रिओने कह्यु के-" राज्यद्रोह करनार दैवत नित्य एम कहे छे के, तमे राजद्रोह करो अर्थात् राजानी साथे वेर करो-तेने मारी नाखो. ४१. परंतु तेनो अंत सारो छे के खोटो अने तेनु परिणाम शु थशे, ते वातोने तमे विचारो. आ वार्ता हजु सुधी तर्क वितर्क करीने विचारवामा आवी नथी अने ज्यारे ते तर्कपर चढशे अर्थात् सारी रीते विचारवामा आवशे त्यारे स्थिर के पाकी थई जशे. ४२ हु देवना डरथी आ वचन कहेता पण लजाउ छु अर्थात् मने आ वात कहेता लाज आवे छे" सत्य छे के, पापीओना मनमा कई होय छे, वाणीमां कई अने कार्यमा कई होय छे, अर्थात् पापी अने दुष्ट लोक विचारे छे कंई, कहे छे कंई अने करे छे कंई. ४३. काष्टागारनी आ वात सांभळीने कुलीन पुरुष तो निन्दाथी डर्या, संयमी प्राणी हिंसाथी डर्या अने क्षुद्र के हलका पुरुष दुर्भिक्ष के अकाळथी डर्या ए रीते बधा सज्जन पुरुषो भयभीत थई गया. ४४. ते वखते धर्मदत्त नामे मंत्रि पोतानोज नाश करवावाळा वचन बोल्यो. कारण के स्वामीना विषयमां जे भक्ति होय छे, ते बहु भारे होय छे अने ते भक्तिथी पोताना प्राणनी पण कई परवा करतो नथी. ४५. धर्मदत्ते कह्यु,-"राजाज प्राणीओना प्राण होय छे, तेना जीववाथीज प्राणी मात्रनु जीवन निर्भर छे.

तेथी राजाओना विषयमां जे कंई इष्ट के अनिष्ट कर्म करवामां आवे, ते मानो के बधा लोकनी साथे इष्ट के अनिष्ट करवा जेवु छे. ४६. ए रीते जे राजद्रोहना करनार छे, ते बधा द्रोहना उत्पादक छे, शु राजद्रोही पंच महा पापोना करनार नथी ? अवश्य छे, अर्थात् ते हिंसा, जुठ, चोरी, कुशील अने परिग्रह ए पांच महापापोना करनार छे. ४७ आ लोकमां राजा लोक देव अने जीवधारी बन्नेनी रक्षा करे छे, परतु देवता पोते पोतानी पण रक्षा करता नथी तेथी सिद्ध छे के. राजाज सर्वोत्कृष्ट देवता छे. ४८. अने वळी सांभळो,–देवता तो फक्त एक देवद्रोही मनुष्यनेज मारे छे, परतु राजा तो राजद्रोहीना वशने बल्के वशथी उल्टा बीजा सबधी लोकोनो पण तत्काळज नाश करे छे. ४९. धनवान पुरुषोना जीवननो उपाय करनार अने शत्रुओनो नाश करनार राजाओनी अग्निनी समान सेवा करवी जोईए. जेम अग्निनी जो अनुकूळ थईने सेवा करवामा आवे छे तो तेथी जीवननो उपाय भोजनादि थाय छे अने जो तेनाथी विरोध करवामा आवे छे तो नाशनु साधन थाय छे, तेवीजरीते राजाओ साथे अनुकूळता प्रतिकूळता करवाथी हानि थाय छे" ५०

धर्मदत्त मन्त्रिनु एवु धर्मयुक्त वचन पण ते दुष्ट कर्मवाळा काष्ठांगारने मर्मभेदी के हृदयविदारक लाग्यु अर्थात् तेने बहुज खोटु लाग्यु, सत्य छे के पित्तज्वरवाळाने दूध पण तीखुं लागे छे. ५१. तेणे कृतघ्नतादि दोष अने गुरुद्रोह, अने बधा-

रामा पोतानी निन्दानो पण कई विचार कर्यो नहि, कारणके **स्वार्थी लोक दोषने किंचित् मात्र पण देखता नथी. ५२.**

काष्ठांगारनो एक **मथन** नामनो साळो हतो. तेने तेनी (काष्ठागारनी) वात बहु सारी लागी. अर्थात राजद्रोह करवानी वातनी तेणे बहु प्रशसा करी, अने तेनु आ सारु मानवुंज शत्रुता करनारना हाथमा हथीयार आववा समान थयु ५३. खेद छे के ए पछी ते दुष्ट बुद्धिवाळाए राजाने मारवाने माटे सेना मोकली. कारण के मोमा गएला दधने क्या तो पी शके छे के ओकी शके छे, अर्थात् काष्ठागारे ज्यारे राजद्रोहनी वात बहार काढी, त्यारे क्या तो ते तेने दबावी देतो, पेटमा राखतो, के बहार काढीने घात करवाने माटे तैयार थतो. त्रीजो कोई मार्ग नहोतो ५४

राजा, दरवानना मुखथी आ वात साभळीने क्रोधनो मार्यो युद्ध माटे उठीने उभो थयो कारण के युद्धमा राजसी-भाव स्थीर रहेतो नथी अर्थात् प्रगट थया वगर रहेतो नथी. ५५. परतु ते वखते राजा पोतानी गर्भवती प्यारी स्त्रीने अर्धासनथी पडेली अने मरणतुल्य जोईने पाछो उलटो विचार करवा लाग्यो, कारणके स्त्रीओ माटे निरादर के अपमान सहन थतु नथी ५६ पृथ्वी-पति राजा पोते जागृत थईने पोतानी स्त्रीने जागृत करवा लाग्यो, कारण के पीडा थता अर्थात् **विपत्ति काळमां पंडितोनुं साचुं ज्ञान जागृत थाय छे. ५७.** बस, हवे शोक करवो जोईए

नहि, पुण्यरहित पापीओने पापनु शु फळ नथी मळतुं ? अर्थात् आ सर्व अमारा पापनुज फळ छे. जो दीवानो प्रकाश जतो रहे छे तो पछी अंधकार संततिने बोलाववानीज शु अपेक्षा छे ? अर्थात् दीपकना होलवाताज अंधकार पोते पोतानी जातेज आवे छे. ए रीते **पुण्य के धर्मनो नाश थवाथी पापनो उदय थाय छे** अने पापनु खराब फळ अवश्य मळे छे. ५८. जोबन, शरीर अने धन ए सर्वनो नाश थाय छे, एमां काइ नवाइनी वात नथी. पाणीनो परपोटो बहु वखत सुधी टकवामां आश्चर्य छे. तेनो नाश थवामा कंइ अचरज नथी. ५९. **जेनो संयोग थयो छे तेनो वियोग अवश्य थाय छे.** बिजु तो शु, पण आ अगनो अगनी साथे पण योग रहेतो नथी, अर्थात् देही (जीव) देह छोडीने आ संसारथी एकलो चाल्यो जाय छे. ६०. जो के आ संसार अनादि छे, तो कोइने कोइनी साथे मित्रता नथी अने कोईने कोईनी साथे शत्रुता नथी, अर्थात् कोई पूर्व जन्ममा एक बीजाना मित्र अने शत्रु थई चुक्या छे, तेथी कोईने सर्वथा शत्रु अने मित्र मानवो कल्पना मात्र छे. आ सर्व जुठी कल्पना छे. ६१. राजाना आ प्रकारना धर्मयुक्त वचनोए राणीना हृदयमा घर कर्युं नहि, कारण के जो बळेली जमीनमा बी वाव्यु होय, तो तेमा अकुर कदापि फूटता नथी. ६२.

त्यार पछी राजाए पोतानी गर्भवती राणीने **केकियंत्रमां** बेसाडीने पोतेज ते यंत्रने उडाडयुं ! अहो ! दैव केवो कठोर

छे ! ६३. ए यंत्रने आकाश मार्गे उपर जवा पछी राजाए मोहवश थईने लडवानु शरु कर्यु, परंतु सहाय विनानी आगळी पोते जातेज शब्द करी शकती नथी, अर्थात् ज्यारे राजानी पासे सेना विगेरेनी सहायता रही नही अने स्त्री पुत्र पण न रह्या, त्यारे ते एकलो शु करी शके एम हतो ? ६४. पछी बहु वखत सुधी युद्ध करीने राजाए विचार्यु के, फोकटमां प्राणीओनी हिंसा करवाथी शो लाभ थशे ? अने ते विचारथी तेने वैराग्य थई गयो; कारण के मन गतिने आधिन होय छे. अर्थात् जेवी गति थनार छे तेवाज सारा के नठारा विचार सूजे छे ६५ हे आत्मन् ! तें पोते पोताने आ विषयाशक्तिना दोषमा प्रवृत कर्यो हतो, तेथी हवे तुंज आ विषरुपी अथवा हळाहळ झेर समान विषय भोगादिकमां इच्छा करवी छोडी दे ६६ हे आत्मन् ! तें आ सर्व (राजपाट वगेरे) ने पहेला भोगव्या छे अने हवे तु एने फरी भोगवाने इच्छे छे. तथा आ तारु पहेला भोगवेलु राज्य उच्छिष्ट छे अने तेथी तुं आ उच्छिष्ट (एठु) राज्यने छोडी दे, कारणके देहधारी प्राणीओना अनन्त जन्म थाय छे. ६७. जो विषय-भोगादिक चिरस्थायी होवा छता पण अवश्य नाश पामे छे, तो तुं पोतेज तेने छोडी दे, कारणके मुक्ति एमाज छे, नहि तो अनेक जन्ममा पडीने दुःख भोगववु पडशे ६८. जे पुरुष राज्यमा रक्तचित्त रहे छे तेने ते राज्य छोडी दे छे अने जे राज्यने छोडी दे छे ते राज्य तेनी स्वय सेवा करवा इच्छे छे,

तेथी विवेकी पुरुषोए राज्यनो त्याग करवो जोइए. ६९. ए रीतनी भावनाथी राजाने उत्कृष्ट वैराग्य थयो. पछी ते तेज लडाईमां संपूर्ण परिग्रहने अने शरीरने छोडीने दिव्य सम्पत्तिने अर्थात् स्वर्ग-लोकने प्राप्त थई गयो ७०.

सर्व नगर वासी अने देशवासी लोको उदास अने विरक्त थई गया, कारण के नवी अने तरतनी पीडाथीज मनुष्योने घणुं करीने वैराग्य थई जाय छे. ७१. स्त्रीओना विषयमां प्रीति के अनुराग बहु क्रुर अथवा कठोर छे. अने जे लोक रागान्ध थईने तेनाथी ठगाय छे, ते प्राज्य राज्य अर्थात् बहु भारे ऐश्वर्य अने प्राणनो पण त्याग करे छे. सत्य छे, के रागी पुरुष शु छोडतो नथी ? अर्थात् सर्व कई छोडी दे छे. ७२. बहु खेदनी वात छे के, मूर्ख माणस स्त्रीओनी जांघना छिद्रमां स्थीत अने मळमूत्रथी भरेला चामडाथी विष्टा खानार सुअरनी माफक सुख माने छे: अर्थात् मूढ माणस महा निकृष्ट विषयभोगा-दिकमाज आनन्द समझे छे ७३ स्त्रीओना संगथी जे सुख प्राप्त थाय छे, ते वगर विचारेज रमणीय जणाय होय छे. परतु ज्यारे ए विचारे के, आ सुख शु छे, केवु छे, केटलु छे, क्या छे, तो पछी ते सुख, दुःखज थइ जाय छे ७४. निष्फळ अने दुष्फळ बुद्धि अर्थात् फळरहित (व्यर्थ) अने खोटा फळवाळी बुद्धि निवारण करवा छतां पण खोटा काममां प्रवृत्ति थाय छे अने यत्न करवाथी पण सारा काममां प्रवृत्ति थती नथी, तेनु

शु कारण छे ? ते बतावो. ७५ हे आत्मन् ! जो तु पापनो हेतु जाणीने पण खोटी वातोनु निवारण करवामा असमर्थ छे, तो ए समजवु के, ए तारा खोटा कामनी प्रभुताइ छे के जे तने खोटी वातोथी हठावीने सारा काममा प्रवृत थवा देती नथी. ७६. जे बुद्धि पोते जातेज अधम काममा होय छे अने यत्न करवाथी पण शुभ कार्यमा प्रवृत थती नथी तेनो हेतु पूर्व जन्मनां दुष्कर्म छे अने ए हेतुथी आत्मा पण तेवाज काम करवा लागे छे. ७७. जो दररोज ए रीते विचार करवामां न आवे के-हु कोण छु ? मारामा केवा गुण छे ? हु क्याथी आव्यो छु ? हु शु कई प्राप्त करी शकु छु ? अने हु कया निमित्तथी छु ? तो मनुष्यनी बुद्धि बे ठेकाणे थई जाय छे, अर्थात् अनुचित कार्योमां प्रवृत्त रहे छे ७८ मोहनीय कर्म संपूर्ण कर्मोनो बनावनार अने धर्मनो शत्रु छे. ए कर्मथी मोह उत्पन्न थाय छे, जेथी के देहधारी मोहित थाय छे ७९ हे आत्मा ! तु शु करवा लाग्यो हतो अने हवे तु शु करे छे ? बहु खेदनी वात छे के तु पोताना प्रारभ करेला कार्योने छोडीने बाह्य शरीरादिकथी मोहने वश थाय छे. ८०. हे आत्मा ! आ इष्ट छे, के अनिष्ट छे, ए रीते वृथा सकल्प करीने तु बाह्य पदार्थोमा केम मुग्ध थाय छे ? तारे पोताना अतरगने अर्थात् मनने पोताना वशमा राखवु जोइए. ८१ बहु खेदनी वात छे के, तारु मन जे बन्ने लोकोनु अनिष्ट करनार छे अने जेमा शान्त भाव नथी तेने तु खराब

कहेतो नथी, अने मूर्खताथी कोइ बीजाने शत्रु मानीने तेथी द्वेष करे छे तूं जेम, पुरुष बीजाना दोष देखे छे, तेमज जो ते पोताना पण दोष देखे, तो ते समान बीजो कोइ पुरुष नथी. एवो पुरुष शरीरधारी थइने पण निश्चयथी मूक्त छे, अर्थात् बीजाना दोषनी माफक **निजदोषदर्शी पुरुष जीवनमुक्त थाय छे.** ८३.

जे वखत त्याना लोक आ रीते विचारमां निमग्न थइ रह्या हता, ते वखत ते **मयूरयत्र** जेमा राणी बेठी हती, ते आकाशमा चाल्युं गयु अने पछी तेणे ते नगरनी बहार स्मशान भूमिमा विज्या राणीने जइने नाखी अभिप्राय ए छे के, ते यत्र उडता उडता प्रेतभूमिमा जइने पड्यु ८४.

पूर्वकाळमा श्रुति अथवा शास्त्रोद्वारा जे मनुष्योना पापोनी विचित्रताना वृतान्त साभळता हता ते हवे पोतानी आखोथी प्रत्यक्ष जोइ लो " मानो के जे राणी पहेला लक्ष्मीनी समान हती ते हवे कइ पण रही नहि ' ८५ **महाराणीनी आ दुर्दशा** जोइने लोकोए आ वातनो सर्व प्रकारथी निर्णय करी लीधो के, ऐश्वर्य अर्थात् **धनसंपति क्षण मात्रमां नाश पामे छे.** सत्य छे के. दृष्टान्तथीज बुद्धि फरे छे, अर्थात् उदाहरणने जोइनेज खरे-खर वात समजमा आवे छे. ८६. जे राणी बे पहोर पहेला राजानी मोटी मानवती हती, तेज हवे स्मशानभूमिनी शरणमा जइ पडी छे. तेथी हे पंडितो ! पापथी डरो. ८७.

राणीए मूर्छाने वश थइने प्रसूतिनी पीडा जाणी नहि अने तेज दिवसे प्रसव मासमा अर्थात् नवमे महिने पुत्र प्रसव्यो. ८८. ए वखते तेज स्थानमा पुत्रना पुण्यथी कोइ देवी धावना स्वरूपे तेनी पासे आवीने बेठी, कारणके ज्यारे पुण्यनो उदय होय छे त्यारे कोइ पण वात दुष्प्राप्य थती नथी अर्थात् पुण्यनो उदय थवाथी सर्व कंइ प्राप्त थाय छे. ८९ ते धावने जोइने राणीना हृदयनो शोकसागर उभराइ गयो, कारणके पोताना बंधुओना पासे आववाथी दु ख उभराइ आवे छे अर्थात् तेथी पण वधारे प्रगट थाय छे. ९०. देवीए बाळकना भवाना मध्यमा भमरी इत्यादि अनेक प्रकारना चिन्ह बतावीने तेनु माहात्म्य वर्णन कर्युं अने राणीने धीरज आपीने कह्युं;–९० " हे देवी ! तु पुत्रना पालण पोषणमा जरा पण चिन्ता करीश नहि आ क्षत्रिपुत्रने योग्य तारा पुत्रनु कोईने कोई पालण पोषण अवश्य करशेज " ९२. आवु कहेताज कोई पुरुष एवो दीठामा आव्यो, जे पोताना मरेला पुत्रने स्मशान भूमिमा राखीने आव्यो हतो अने सत्यवक्ता योगीन्द्रना वचनानुसार त्यां पुत्रने शोधतो हतो. ९३. तेने जोईने राणीए तेनु (धावनु) वचन खरु मान्यु, कारण के स्थिर, विसवाद रहित अविरोधी अने सत्य वाक्यथीज पदार्थनो निश्चय थाय छे. ९४ त्यार पछी राणी बीजो कोई उपाय नहि जडवाथी ते देवीनी प्रेरणाथी पोताना पितानी मुद्रा (वींटी) पहेरेला पुत्रने आशीर्वाद आपीने अन्तर्ध्यान थई गई ९५

वैश्योनो आगेवान गन्धोत्कट जो के त्या पुत्रने शोधतो दीठामा आव्यो हतो, ते राजपुत्रने जोइने तृप्त थयो नहि. शु लाकडु के हलकी वस्तु शोधनार पुरुषना हृदयमा मणि जेवी उत्तम वस्तु जोइने प्रीति के आनन्द थतो नथी ? अवश्य थाय छे. ९६ गंधोत्कट ते पुत्रने खोळामां लइने हर्षथी रोमांचित थइ गयो अने ' जीव ' अर्थात् ' जीवतो रहे ' ए रीते आशी-र्वाद साभळीने तेणे तेनु नाम ' जीवक ' के 'जीवंधर' राख्यु, " जीव " एवो आ आर्शीवाद राणीए पोताना पुत्रने त्यांथी अतर्ध्यान थती वखते आप्यो हतो. ९७ त्यार पछी तेणे घेर जइने पोतानी स्त्री साथे क्रोधित थइने कह्यु के, तें वगर मरेला पुत्रने अज्ञानथी मरेलो केम कह्यो ? अने पछी आनन्दित थईने पुत्रने तेने सोपी दीधो ९८. वैश्यनी स्त्री सुनन्दाने पण पुत्रने जोईने आनन्द थयो अने तेने हर्षसहित अंगिकार कर्या, पुत्र प्राणनी माफक प्रीतिदायक होय छे, अने जे पुत्र मरीने फरी जन्म धारण करे छे तेनु तो कहेवुज शु ? ९९

ए पुत्रनी माता अर्थात् विजयाराणी पोताना भाईने घेर (पीयेर) जवानु इच्छती नहोती तेथी ते देवी तेने दंड-कारण्यनी वचमा आवेला तपस्विओना आश्रममा लई गई. १०० पछी ते तप करती राणीने सतुष्ट अने प्रसन्न करीने देवी पोते कोई बहानाथी चाली गई. मनोकामना सिद्ध थवाथी

कोनुं मन सतुष्ट थतु नथी? १०१. बिचारी तपस्विनी राणी पोताना मनरुपी घरमां पोताना पुत्रने राखती हती अने जिन भगवानना चरणकमळनु पग ध्यान करती हती. १०२. घणुज रु अथवा कोमळ वस्तुओवाळी कोमळ शय्याथी, प्रसव बधन सहित फुलथी पण जेने अत्यत खेद के दु ख थतु हतु, तेज राणीने दर्भनी सेज (पथारी) पण सारी लागी ! १०३ पोताने हाथे कापेला जगली धान्यज तेनो आहार अथवा भोजन हतु अने बीजा अन्नथी तेने कई प्रयोजन नहोतु, कारण के जे शुभ अन अशुभ कर्म कर्यां होय छे तेनुं फळ अवस्य भोगववुं पडे छे १०४.

त्यार पछी मूर्ख काष्टांगारे गधोत्कटे करेला उत्सवने (जे के तेणे पोताना पुत्रने माटे कर्यो हतो,) पोताने माटे समजीने अर्थात् एवु जाणीने के मने राज्य मळवानी खुशीमा एणे आ आनद मान्यो छे, प्रसन्नताथी गधोत्कटने बहु धन आप्यु १०५ तेज वखते ते नगरमा जे पुत्रो उत्पन्न थया हता, तेमने पण गधोत्कटे काष्टागारनी आज्ञा लइने पोताना पुत्रनु ते मित्र बाळकोनी साथे पालणपोषण कर्यु. १०६

पछी गधोत्कटनी स्त्री सुनन्दाना गर्भथी नन्दाढय नामनो एक बाळक बीजो उत्पन्न थयो ए बाळकथी जीवंधर बहुज शोभीत थयो, कारण के सारो भाइ मुशीबतेज मळे छे. १०७. ए रीते आ सज्जन बधुओनो मित्र राजपुत्र दररोज

वधतो वधतो निष्कलक अथवा निर्दोष शरीरवान कान्ति अने तेजमां शितळ किरणोवाळा चंद्रमाथी पण वधी गयो. १०८.

त्यारपछी बाल्यावस्थाए पहोंचवानी इच्छा करतो अने बधां व्यसन अथवा बुराइओथी दूर रहेतो जीवंधर पांच वर्षनो थइ गयो. सत्य छे, के **भाग्य उदय थवाथी पीडानुं शुं काम ?** १०९. पछी अर्थरहित अस्पष्ट अने तोतडी पण अति मनोहर अने प्यारी वाणीने छोडीने ते अतिशय स्पष्ट वाणीवाळो थइ गयो; कारण के स्त्रीओ पोते जातेज सारा पुरुषने वरे छे. अभिप्राय ए छे के, वाणीरुपी स्त्री पोते जातेज जीवधरना हृदयमा स्फुरायमान थइ गइ. ११०.

त्यारपछी शुभ पुण्यना उदयथी कोइ आर्यनन्दी नामना प्रसिद्ध आचार्य जीवधर कुमारना गुरु थया. निश्चयथी गुरुज देव थाय छे. १११ पछी आ राजपुत्रे निर्विघ्न सिद्धि प्राप्त करवा माटे पहेला सिद्धोनी पूजा करी अने नित्य (अनादिनिधन) वर्णमाळाद्वारा पूर्ण विद्या शीख्यो ११२.

श्रीमान् वादीभसिंह कविए रचेल क्षत्रचूडामणि ग्रथमा " सरस्वतीलम्ब " नामे प्रथम प्रकरण समाप्त थयुं.

प्रकरण बीजुं.

त्यार पछी मित्रगणथी भूषित राजपुत्र कोई पाठशाळा अथवा विद्यालयमा दाखल थयो, अने त्या पडिते तेने बधी विद्याओ भणावी, ए रीते ते बहु मोटो पडित अथवा विद्वान थई गयो १ तेणे गुरुप्रत्ये जे प्रीति, सेवा, उपासना अने चतुराई प्रगट करी, तेथी तेने बधी विद्याओ याद थई गई, अर्थात् जे रीते भूलेली विद्या याद थाय छे, ते रीते तेने सहेलाईथी बधी विद्या आवडी, कारण के गुरुनी शिष्यनी तरफ प्रीतिज बधी इच्छाओ पूरी करनार होय छे, अर्थात् राजपूत्रे विनयपूर्वक गुरुनी सेवा करी अने तेनी आज्ञानुसार बधा काम कर्या, तेथी गुरुए प्रसन्न थईने प्रीतिपूर्वक तेने भणाव्यो अने बधी विद्याओमा प्रवीण करी दीधो २. आ संसारमां जेटला पंडित छे, ते सर्व जीवंधरथी हेठ छे, अर्थात जीवंधर अद्वितीय विद्वान छे, एवो निश्चय करीने आचार्य महाराज तेनापर पोतेज बहु प्रीति करवा लाग्या ३. जो के मनुष्योने पोतानु काम गमे तेवु खोट्ठ होय पण सफळ थवाथी सारु लागे छे, तो पछी सारुं काम केम सारु लागे नहि ? अने विद्यादानथी वधीने उत्तम कामज क्यु छे ? ते तो सारु लागवुंज जोईए. ४.

एक दिवस गुरुए प्रसन्न चित्तथी पोतानी पासे बेठेला शिष्यने एकातमा कह्यु;–५. " शास्त्र विद्याथी सुशोभित हे महाभाग ! (उत्तम भाग्यवान पुत्र !) आ कोईनुं वृतान्त साभळ के जे विचार करवाथी मनमा अति दया उत्पन्न करनार छे. ६ विद्याधरोना लोकमा लोकपाल नामनो कोई राजा लोकनु पालन करतो करतो पोतानो समय व्यतीत करतो हतो.७. एक दिवस ते महाराजाए जोतजोतामाज शीघ्र नाश पामतो मेघ जोयो, तेथी मानो ए प्रतीती थई के, उन्मत्तोनु ऐश्वर्य क्षण मात्रमा नाश पामे छे. ८. तेने जोईने राजाने वैराग्य उत्पन्न थयो, कारण के मोक्षनी ईच्छा करनार भव्यजीवोने समयना पक्व थवाथी संसारीक वातोमां उदासीनता थई जाय छे. (जेमके पक्वरुतुमा फळ पाकीने आपो आपज खरी पडे छे). ९. तेथी आ पृथ्वीपति राजाए राज्यकारभार पोताना पुत्रने सोपीने गुरुपासे जैनमतनी दीक्षा ग्रहण करी, जेमा शरीरने पण हेय एटले त्यागवा योग्य समज्या छे. १०. ज्यारे आ राजा तप करवा लाग्यो, त्यारे केटलाक दिवसे तेने भस्मिक नामनो महारोग थयो, जेथी खाधेलुं पीधेलु सर्व क्षणमात्रमा भस्म थइ जतु हतुं.क्षुधा बराबर लाग्या करती हती अने कदापि उदर तृप्ति थती नहोती. ११. ठीकज छे के थोडीज तपस्याथी दुष्कर्मनुं निवारण थतुं नथी. शु लीलु लाकडुं जराक चीणगारीथी बळी शके छे? अर्थात बळतु नथी. १२.

शक्तिहीण थइने राजाए राज्यनी माफक तप करवानु पण छोडी दीधु, खरु छे के-" शुभ कार्यमां घणां विघ्न आवी पडे छे." ए पुराणी कहेवत छे, आजकालनी नथी. १३. पातकी अर्थात् पापी पुरुष तपनी अंदर बेठो बेठो जे धारे ते पोतानी इच्छानुसार करे छे, जेमके झाडीमा सताएलु नाफल नामनुं पक्षी मरघां अथवा नानी नानी चकलीओने पकडया करे छे. १४.

पछी ते राजा पाखंडिओनी माफक तप करीने पोतानी इच्छानुसार आचरण करवा लाग्यो, ए बहु आश्चर्यनी वात छे, कारणके जैन मतनी तपस्या तो स्वेच्छाचारथी विरुद्ध छे. १५.

हवे एक दिवस ए भीखारी तपस्वी जो के पोते रोगथी पीडातो हतो, तथापि धर्म करनार पुरुषोने माटे एक मोटो सारो वैद्य हतो ते भूख्यो थईने गंधोत्कटने घेर गयो. १६. कारण के धार्मिक पुरुषज धार्मिकोने त्यां जईने शरण ले छे, अने बीजे नहि. बीजा मनुष्य तो साप नोळीआनी माफक पोतानी प्रकृतिर्थीज शत्रु होय छे

त्यार पछी हे पुत्र ! भिक्षुके ते घरमां तारा जेवो श्रेष्ठ पुत्र जोयो अने तें तेने जोईने जाणी लीधु के आ भूख्यो छे. १८. ते वखते तु भोजन करतो हतो. तें पाकशाळा (रसोडा) ना अध्यक्षने कह्यु के आ भिक्षुकने भोजन आपी दो, त्यारे तेणे (रसोईआए) तेने भोजन आप्युं. १९. परतु ते पाकशाळामां जेटलु अन्न हतुं तेथी तेनु उदर पूर्ण थयुं नहि. अहो ! पापी

घोराकृति अन्नासमुद्रनी कोण पूर्ति करी शके छे? २०. तेथी तें भोजन करवानु छोडी दीधुं अने पछी विस्मयपूर्वक बेठेला ते करुणाथी अथवा तेना पुण्यथी प्रसन्नतापूर्वक पोताना हाथमांनो कोळीओ तेने आपी दीधो. २१. ते कोळीओ खावाथी तेज वखते ते ब्रह्मचारीनी जठराग्नि तृप्त थई गई, जेमके आशानो समुद्र निराशाथी पूर्ण थई जाय छे. अहो! पुण्यनो महिमा मोटो छे. २२. त्यारे ए तपस्वी पण तेज वखते तृप्त थइने लांबा वखत सुधी ए विचारतो रह्यो के हु आ महान उपकारीनो शो प्रत्युपकार करु? २३. पछी एवो निश्चय कर्यो के, एनो प्रत्युपकार परमोत्कृष्ट फळवाळी विद्याज छे, तेथी तेणे श्रीमान् चिरंजीवीने अर्थात् तमने विद्वान बनाव्या. २४. विद्या मळी होय अने जो ते बीजाने आपवामां आवे, तो पण वध्या करे चोर वगेरे तेने चोरी शकता नथी, अने मननी ईच्छाओने ते पूर्ण करे छे. २५. पडित्व अथवा विद्याथीज कुलीनता, प्रभुता सज्जनो द्वारा सत्कार अने सभ्यता मळे छे, अने वधारामा विद्वाननो सर्व जग्याए आदरसत्कार थाय छे. २६. मनुष्योनुं पंडित्व जीवन पर्यंत आनिन्दनीय अर्थात् स्तुत्य छे, अने मोक्षनो पण मार्ग छे, जेमके दूध क्षुधानी शान्ति पण करे छे, अने औषधि जेवो गुण पण करे छे २७

शिष्ये गुरु पासे आ वात साभळीने पोतानी वाणीथी तो कंई उत्तर दीधो नहि, परंतु गुरुना मोंढानी चेष्टाथीज तेना

अभिप्रायने समजी गयो. ठीकज छे, के शिष्यपणु अने गुरु-पणु एवुज छे, अर्थात् गुरु शिष्यनी वर्तणुंक एवीज होय छे. २८. ते गुरुनी शुद्धि अर्थात् विशुद्धताने जाणीने तेपर तेथी पण अधिक प्रीति करवा लाग्या, कारण के प्राप्त करेल मणिनी शुद्धि जोईने अधिक हर्ष थाय छे २९

गुरु एवा होवा जोईए के जे त्रणे रत्न अर्थात् सम्यग् ज्ञान, सम्यगदर्शन अने सम्यक्चारित्रथी युक्त होय, पात्र अने योग्य पुरुषोमां स्नेह राखनार होय, परोपकारी होय. धर्मनुं पालण करनार होय अने भवसागरथी पार उतारनार अर्थात् जन्म मरणना दु:खथी मोक्ष प्राप्त करावनार होय ३०. शिष्य एवा होवा जोईए के जे गुरुनी सेवा करनार, ससारना आवा-गमनथी तरनार, नम्र, धार्मिक, सारी बुद्धिवाळा, शान्त स्व-भावी, आळस विनाना अने शिष्ट अर्थात् शिक्षा ग्रहण करनार होय. ३१ ज्यारे गुरु प्रत्येनी भक्तिथी मुक्ति प्राप्त थाय छे, त्यारे ते द्वारा बीजी हलकी वस्तुओ शुं प्राप्त थई शकती नथी ' अवश्य थाय छे. शुं तुष अर्थात् भूसु (अनाजना छोडा) त्रिलोकी मूल्यवाळा रत्नना बदलामा पण मळी शकतु नथी ' अर्थात् जरुर मळी शके छे गुरुभक्ति त्रिलोकीमूल्य रत्ननी समान छे. ३२. जे गुरुनो द्रोह करनार, कृतघ्न छे, अर्थात् उपकारना बदलामां अपकार करे छे, तेना बधा गुण नाश पामे छे, अने तेनी विद्या विजळीनी माफक क्षणभगुर होय छे.

ठीकज छे के निर्मूळ वस्तु सहाय विना केवी रीते रही शके छे? ३३ जे लोक गुरुद्रोही छे, ते समग्र जगतनो नाश करनार छे अने ते कदापि विश्वास करवा योग्य थई शकता नथी. जे माणस गुरुनी साथे द्रोह करवाथी डरतो नथी, तेने बीजानी साथे द्रोह करवामां जरा पण भय होतो नथी. ३४. त्यार पछी कृत्यने जाणनार आचार्ये विधिपूर्वक कृत्य करनार शिष्यने गृहस्थीओना साचा धर्मनी शिक्षा आपी अर्थात् श्रावकाचारनी बधी वातो बतावी. ३५ पछी गुरुए तेने ए बताव्यु के तेनी उत्पत्ति राजाना वशथी छे अर्थात् ते राजानो पुत्र छे. प्रसन्न थईने बधो वृतान्त तेने संभळाव्यो. ३६.

ज्यारे गुरुना वचनद्वारा सत्यंधरना पुत्रने ए विदित थयुं के, आ काष्ठांगार तेना बापने मारनार छे, त्यारे तो ते क्रोधमा आवीने काष्ठागारने मारवा माटे कौवच पहेरीने तैयार थई गयो. ३७. पडित महाशये तेने वारवार निवारण पण कर्युं, पण ते शान्त न थयो. हाय! ज्यारे क्रोधी माणस पोतें पोतानोज नाश करी नांखे छे त्यारे तो बीजुं शुं शुं करतो नथी? ३८.

गुरुए ज्यारे तेने ए कहीने निवारण कर्युं के- "हे पुत्र! एक वर्षने माटे वधारे क्षमा कर. बस, एज मारी गुरु दक्षिणा छे!" अर्थात् तारी पासे हु गुरुदक्षिणामा फक्त एज इच्छु छु के एक वर्ष सुधी तु काष्ठागारने हजु पण छेडीश नहि, त्यारे तो ते शान्त थई गयो. कारणके कयो पुरुष एवो छे के जे गुरुना हुकमनु उलघन करे. ३९.

गुरुए क्रोधनी वखते तेनी पराधीनता जोईने पछी तेने आ रीते शिखामण आपी, कारण के गुरुनी वाणी कुमार्ग अथवा अधर्मनो नाश करनार अने सुमार्ग अथवा धर्ममा प्रवृत्त करनार होय छे. ४०. " हे श्रेष्ठ पुत्र ! तु मोहने वश थइने आटलो क्रोधी केम थयो ? विकारनु कारण होवा छता पण विकार उत्पन्न थाय नहि, तेनुं नाम धीरता छे ४१. जो तुं पोतानुं भुडुं करनार पर क्रोध करे छे, तो तु क्रोध के कोपपरज क्रोध केम करतो नथी ? कारण के क्रोध, धर्म अर्थ काम मोक्ष अने जीवननो पण नाश करनार छे. तेना समान भुडु करनार बीजु कोण छे ? ४२. क्रोधरुपी अग्नि पोते पोतानेज अर्थात् क्रोधी-नेज भस्म करे छे, बीजी कोई वस्तुने भस्म करतो नथी. तेथी जे पुरुष कोई बीजाने भस्म करवानी इच्छाथी क्रोध करे छे, ते पोतानाज शरीरपर अग्नि नाखे छे ४३. जो उत्कृष्ट अने निकृष्ट अथवा भलाई बुराईनु ज्ञान न होय, तो शास्त्रमा परिश्रम करवो निष्फळ छे. जे डागर(भात)ना दाणामा चोखा नथी, ते कापवाने परिश्रम करवाथी शो लाभ ? ४४. जे लोक तत्त्वज्ञान के शास्त्रविरुद्ध आचरण करे छे, तेने माटे तत्वार्थनु जाणवु व्यर्थ अने निष्फळ छे. जे मनुष्य दीवो हाथमा होवा छता कुवामा पडे छे, तेने दीवाथी शो लाभ ? ४५ तेथी तारे तत्व-ज्ञानने अनुकूळ आ रीते आचरण करवु जोईए के, मोहादिक चोरोथी बुद्धिरुपी धन चोराई जाय नहि, अर्थात विचारीने

कार्य करवुं अने पोतानी बुद्धिने लोभ क्रोध मोहादिकनी वशमां राखवी नही. जेओ स्त्रीओ द्वारा सबध जोडे छे, अने पोताना स्वार्थ मार्गे चालवाने उत्सुक रहे छे, ते साप समान दुष्ट दुर्जनोनी सगत छोडी देवी जोइए, सापनी अने दुर्जनोनी अहीं समानता बतावी छे. दुर्जननी समान साप पण स्त्रीमुखथी अर्थात् उल्टा मुखथी मार्ग करे छे, अने पोताना मार्गपर चालवाने तैयार रहे छे. सत्य छे, के दुष्ट पूरुष **अने साप ए बन्नेज सर्वनो नाश करे छे.** ४७. सापने छेडवाथी तो मनुष्योनो देहपातज थाय छे, परतु **दुष्टजनना संयोगथी कुलीनता, प्रभुताइ, पंडिताई, क्षान्ति, (क्षमा) अने यश आदि सर्व कंइ क्षणवारमां नाश पामे** छे. ४८ दुष्ट पुरुष बधा लोकने दुष्ट बनावी दे छे, परतु सज्जन तेमने सज्जन बनावी देता नथी, केमके पदार्थोनो नाश करवो तो सुगम छे, पण तेनुं उत्पादन करवु कठण छे. ४९. सारा पुरुषोए इच्छवु के, सर्वथी प्रथम यत्नपूर्वक सज्जनोनी वन्दना करवी शु अनायासथी प्राप्त करेलु रत्न आ ससारमा माटीनी माफक स्तुत्य होय छे ? अर्थात् रत्न जो परिश्रम वगर मळी जाय, तो पण ते स्तुत्य होय छे. ए रीते सज्जन पुरुष सदा पूज्य होय छे. ५०

विशेषमां सज्जनोनां वचन अजमायशथी उत्पन्न थएल अमृत छे, अर्थात् अमृत जळाशयथी (जडरुप समुद्रथी) उपजे छे, अने वचनामृत अजळाशय अर्थात् सचेतन (अजडाशय)

सज्जनोना मुखथी उत्पन्न थाय छे. ए रीते **सज्जनोनां वचनामृत साक्षात् अमृतथी पण उत्कृष्ट छे.** अने अन्य गुणमां समान छे कारण के जे रीते अमृतथी जागृति (चैतन्यता) अने सौमनस्यत्व (अमरपणुं) प्राप्त थाय छे, तेज रीते वचनामृतथी पण जागृति अने सौमनस्यत्व अर्थात् सज्जनता प्राप्त थाय छे. ५१ **यौवन** (जुवानी) अथवा युवाअवस्था, बळ अने ऐश्वर्य अथवा प्रभुता ए हरेक विकारना करनार छे. अने ज्या ए त्रणे एकठा होय, त्या तो पछी कहेवानुज शु छे? तेथी तेना होवा छता पण चित्तमां विकार थवो जोइए नहि ५२. कारण के ते मळवाथी पण सज्जनोना चित्तमा विकार थतो नथी. जे देडको गायनी खरीना जेटला पाणीमा हाली चाली शके छे, ते शु समुद्रना जळने रोकी शके छे? कदापि नहि **सज्जननुं चित्त समुद्रनी समान गभीर** तथा स्थिर होय छे. थोडा कारणोना मळवाथी ते कटाळता नथी ५३. देश काळ अने दुर्जन जो के कारण छे, परतु एकला ते शु करी शके छे? यथार्थमा चलायमान बुद्धिज विकार उत्पन्न करनार छे तेथी पोताना स्वभावमां स्थिर रहेवुं जोइए, कारण के चित्तनी स्थिरताज मुक्तिनु कारण छे. ५४. पुण्य क्षीण थवाथी हजारो शिखामणथी पण धर्मबुद्धि उपजती नथी, परतु पात्रमा अर्थात् जेनी सत्तामां पुण्य विद्यमान छे, तेमा वगर उपदेशेज बुद्धि पोते स्फुरायमान थाय छे. तेथी सिद्ध थाय छे के, पोतेज पोताना

गुरु छे अर्थात् बीजाना उपदेशादि बुद्धि स्फुरायमान थवामां मुख्य कारण नथी. ५५ ए विचारवुं जोइए के जे पुरुष धनमां उन्मत्त छे, ते सन्मार्ग अथवा धर्मने सांभळतो नथी, जाणतो नथी, अने ते पर चालतो नथी; अने चाले पण छे, तो कार्यना अन्त सुधी चालतो नथी. ५६. गुरु आ रीते राजपुत्रने आशीर्वाद आपीने अने तेने धीरज रखावीने पोते कोइने कोई रीते तप करवाने चाली गया, कारणके लोकमा प्राण नीकळती वखते कोई उपाय थई शकतो नथी. साराश ए छे, के गुरुमहाराज कोईपण उपायथी रोकाया नहि अने तप करवाने चाल्या गया. ५७. त्यार पछी ते दिक्षा लईने तप करवा लाग्या अने तेना प्रभावथी नित्य आनन्द स्वरुप मोक्षने प्राप्त थई गया, कारणके विघ्न रहित कारणोथी कार्यनी सिद्धि थाय छेज. ५८.

गुरु देवना तपोवनमा चाल्या जवाथी जीवंधर कुमारने बहुज शोक थयो, मातापितामा अने गुरुमा फक्त गर्भाधान क्रियानीज न्यूनता होय छे. अन्य बधी वातोमा गुरु, माता पितानाज समान छे, तथा गुरुना चाल्या जवाथी जीवधरने पोताना माता पिताना वियोग समानज शोक थयो. ५९. पछी तेणे तत्वज्ञानना जळथी शोकरुपी अग्नि बुझाव्यो, शु ठडीना जागृत थवाथी कदी आ ताप क्लेश के तडकानी पीडा थई शके छे? कदापि नहि. साराश ए के, तत्त्वनो विचार करवाथी तेनो शोक शान्त थई गयो. ६०. त्यार पछी जे समये ते पोतानी विद्याथी विद्वा-

नोना हृदयमा, शरीरनी कान्तिथी स्त्रीओना हृदयमा, अने शस्त्रकळानी चतुराईथी रथमा शोभतो हतो, ते समयनी एक प्रासंगिक वात कहेवामां आवे छे; ६१

एक दिवस घणाज गोवाळीआ राजाना आंगणामा आवीने उभा रह्या अने ए रीते उच्च स्वरथी बोल्या के-" वाघे गायोने रोकी लीधी छे" ६२. काष्ठांगार पण ए अवाजनो शब्द साभळीने बहु गुस्से थयो, कारण के जो नचि पुरुष मोटानो अनादर करे, तो ते सहन थतो नथी. ६३. अने तेणे गायोने छोडाववाने एक सेना मोकली, परतु ते पण हारी गई. कारण के पोताना स्थानमां ससलुं हाथीथी पण विशेष बळवान होय छे. (कुतरो पण पोताना फळीआमा मीर थाय छे) ६४.

त्यारपछी वाघनी सेना जीती गई. ए सांभळीने भरवाडना गामोमां पण खळभळाट थयो, अर्थात् शत्रुओथी लडवाने भरवाड पण उत्तेजीत थइ गया कारणके आजीविकानो नाश थवाथी लोक कोइथी पण डरतो नथी. ६५

हवे ते वखते ते वाघने जीतवाने माटे एक नन्दगोप नामनो पुरुष विचार करवा लाग्यो, कारण के जे लोकोने कोइ प्रकारनी पिडा थाय छे, ते एज चिता करे छे के, शु करवु जोइए, अने तेथी शु फळ थशे' ६६ मनुष्योने धन कमावानी अपेक्षाए तेनी रक्षा करवामा, अने रक्षानी अपेक्षाए तेनो क्षय थइ जवामा उत्तरोत्तर अनन्तगणी पिडा थाय छे. ६७. तो

पण यथाशक्ति उपाय करवो जोइए अने जो उपाय व्यर्थ पडे, तो तेमां शोक करवाथी शो लाभ थशे ? कंइ पण नहि, कारण के शोक नज करवो ए तेनो उपाय छे. ६८. ए विचार करी- ने तेणे एवो ढंढेरो पटाव्यो के, जे वीर पुरुष ए बनवासी वाघने जीतशे, तेने हुं मारी पुत्री अने सात बीजी पण कल्याण पुत्रीओ परणावीश. ६९. सत्यधरना पुत्र जीवंधरे आ साभळीने ते ढढेरो बध करी दीधो, अर्थात् तेणे ए कबुल कर्युं के हु वाघने जीतीने तमारा दु:खनु निवारण करीश, कारण के उदारचित्त पुरुष आ बधा लोकने पोताना कुटुब समजे छे ७०. हवे जीवकस्वामी अर्थात् जीवधर वाघने जीतीने पशुओने लई आव्या, निश्चयथी आगीओ अधकारनो नाश करी शकतो नथी, सूर्यज करी शके छे अभिप्राय ए छे के, जे वाघने बीजा कोई जीती शकता नहोता, तेने जीवधरे जीती लीधो ७१ नन्दगोप पण गोधनने प्राप्त करीने बहु हर्षित थयो, कारण के प्राणीओने माटे धन प्राणथी पण अधिक श्रेष्ठ छे ७२

त्यारपछी तेणे पोतानी पुत्री जीवधर स्वामीने आपवाने जळ मूक्युं, कारण के जे मनुष्य अत्यंत स्नेहथी अंध बने छे, ते कृत्य अकृत्यनो विचार करतो नथी, अर्थात् ते ए विचारतो नथी, के आ काम करवु जोईए के आ न करवु जोईए. नन्द- गोपे ए विचार्युं नहिं के, जीवधर मारी पुत्रीने लेशे, के नहि ?

ते कुलीन छे, मोटा छे अने हु तेथी हलको छुं. ७३. जीवंधरे पण " पद्मास्य आ कन्याने योग्य छे, " एम कहीने तेनुं आपेलुं जळ ग्रहण करी लीधु, अर्थात् ए कन्यादानना जळनो पोते जाते स्वीकार कर्यो नहि, पोताना मित्रने माटे स्वीकार कर्यो. कारणके सज्जन पुरुषोनी प्रीति अयोग्य कार्योमा थती नथी. ७४. पछी ए कह्यु के, हे श्वसुर ! आप पद्मास्यने माराज जेवो समजो कारण के खरी मित्रता तेज छे, के जेमा शरीर मात्रनी जुदाइ होय छे. अने कंइ पण भेद होतो नथी७५.

त्यार पछी पद्मास्य अग्निने शाक्षी करीने नन्दगोपद्वारा प्रसन्नता पूर्वक मळेली गोदावरीनी पुत्री गोविन्दाने परण्या. नन्दगोपनी स्त्रीनु नाम गोदावरी हतु ७६

आ प्रमाणे श्रीमान् वादीभसिंहसूरिए रचेल क्षत्रचूडा-मणि ग्रन्थमां " गोविन्दालम्भ " नामे बीजुं प्रकरण पूर्ण थयु.

प्रकरण त्रीजुं.

वे पद्मास्य तो गोविन्दाने परणीने रमण करवा लाग्यो अने राजकुमार शूरवीरतारुपी लक्ष्मीने प्राप्त करीने क्रीडा करवा लाग्यो. आ विषयमां अहिं एक प्रासगिक वातनु वर्णन करवामां आवे छे'—१.

ते नगरनो अर्थात् राजपुरीनो रहेनार श्रीदत्त नामे एक वैश्य हतो. तेणे धन प्राप्त करवानी इच्छा करी, कारण के कयो एवो पुरुष छे के जेने धननी आशा न होय ? अर्थात् धननी आशा सर्वेने होय छे २ पछी तेणे धनोपार्जननुं कारण अने तेनु फळ विचार्युं, कारण के ससारना उपाय विचारवामां मनुष्योने कोई रोकतुं नथी ३ " बापदादानु धन गमे तो विशेष होय, तो तेथी शुं ? कारण के उद्योगी पुरुषने बीजाना अन्नपर गुजरान चलाववुं ठीक लागतुं नथी. ४. धन गमे तो बहुज होय, पण ज्यारे आवक होती नथी अने ते धनमांथी खर्चेज थयो जाय छे, त्यारे ते बधुं धन खरचाई जाय छे. कारण के निरन्तर भोगमां लाववाथी तो पर्वत पण नाश पामे छे. ५. मनुष्योने दरिद्रताथी वधारे दुःखकारक अने पीडाजनक बीजी कोई वस्तु नथी, कारण के दरिद्रताथी प्राणी प्राण त्याग कर्या विनाज मरी जाय छे अर्थात् जीवताज मरेला छे.६.

जेना हाथ खाली छे, अर्थात् जेनी पासे कई नथी, तेना बधा गुण जो प्रसिद्ध करवा योग्य होय, तोपण प्रकाश पामता नथी; अर्थात् दरिद्रना बधा सारा गुण पण नाश पामे छे. बीजुं तो शुं दरिद्रमां विद्या पण होय, तो ते शोभा आपती नथी. ७ दरिद्र निर्धनताथी ठगाइने कंई पण करी शकता नथी, बीजुं तो शुं ? दरिद्री पुरुष सर्वथा धनवानना मुख तरफ कई मळवानी आशाथी जोई रहे छे. ८. धननी प्राप्तिनुं फळ एज छे के, तेथी सज्जनोनु पालणपोषण थाय. जुओ, जो के लींबडाना फळने (लींबोळीओने) कागडा खाय छे, तोपण लींबडानु फळ आम्रफळ (केरी) नी माफक स्तुत्य होतुं नथी. ९. असत् पुरुषो अर्थात् दुर्जनोनी वस्तु बन्ने लोकने हितकारी होवा छता पण सुखदायक नथी. जेमके, खारा समुद्रमा गयेलु नदीनु पाणी खारु थई जवाथी कशा कामनुं रहेतु नथी तेम १० " ए रीते विचार करीने ते वणिक्पति अथवा वैश्य होडीमा बेसीने चाल्यो. कारण के धननो ईच्छनार फक्त समुद्रनोज आश्रय करतो नथी, परतु पृथ्वीना अंतर्भागनुं पण अवगाहन करे छे.

ते जळयात्रा करनार वणिक केटलाक दिवस पछी देशान्तरथी बहुज धन एकटु करीने पाछो फर्यो निश्चयथी जीवोने धन कमावानु कारण अतर्क्य (धार्या विनानु) छे. अर्थात् आ विषयमां तर्क चाली शकतो नथी. ए समजमां

आवी शकतुं नथी के, कोने कया कारणथी अथवा कया प्रयत्नथी धन प्राप्त थशे. १२.

ज्यारे ते नाविक (नावमा बेठेलो वणिक) समुद्रनी आ पार आवी गयो त्यारे अहीं आवतां धारासंपातथी अर्थात् खूब जोरथी वरसाद वरसवाथी तेनी होडी अटकी, कारण के विपत्तिनो समय मनुष्योने विदित थतो नथी अर्थात् विपत्तिनी घडी क्यारे आवशे ते जणातुं नथी. १३. अने होडीवाळा ते होडीना समुद्रमां डूबता पहेलांज शोकरुपी समुद्रमां डूबी गया. तेमना शोकनो कई अत रह्यो नहि. अने पछी नाव (होडी) नो नाश थवाथी तो तेमणे परम दुःखनुं दृष्टान्त दीठु. १४. परतु वैश्ययात्री श्रीदत्त बुद्धिमान हतो, तेथी ते कोई रीते गभरायो नहि, कारण के जो मूर्ख अने ज्ञानी बन्ने गभराइ जाय, तो पछी मूर्ख अने ज्ञानीमां भेदज शो रह्यो ? १५ " हे पंडितो! आगळ आवनार विपत्तिओना विचारथी तमे केम दुःखी थाओ छो ? शुं सापना भयथी डरीने तमे सापने मोढे हाथ देशो ? अभिप्राय ए छे के, जे दुःख आवनार छे, ते तो आवशेज. तेना विचारमा पहेलेथीज दुःखमां पडवुं ए शु बुद्धिमानोनु काम छे ? १६ विपत्तिनो उपाय ए के शोक करवो नहि. ' डरवुं नहि ' एज एनो उपाय छे. अने ते डरवु नहि अर्थात् निर्भयपणुं तत्त्वना जाणनारनेज होय छे. तेथी हे बुद्धिमानो ! तत्वोने जाणवाने प्रयत्न करो. १७ " ते बुद्धिमान वणिक नाववाळाने

पण आ रीते शिक्षा अने उपदेश आपवा लाग्यो. कारण के **यथार्थ ज्ञान मनुष्योने माटे बन्ने लोकमां सुखकारी छे.** १८. एटलामां तेणे नाश पामती नावमां दोरडी बाधवाना एक लाकडाना टुकडाने दीठो. सत्य छे के ज्यारे आयुष्य बाकी होय छे, त्यारे प्राणीओना प्राण बची जाय छे. १९. त्यार पछी **श्रीदत्त** ते लाकडाना टुकडा पर चढीने एक द्वीप के देशमा पहोंच्यो, अने त्या पहोंचीने बहु प्रसन्न थयो जो मनुष्यनुं राज्य जतु रहे परंतु प्राण बची जाय, तो ते बहु सतुष्ट रहे छे. २०. जोके तेनु एकठु करेलु बधु धन जतु रह्यु हतु, पण ते गभरायो नहि. अने ए विचारवा लाग्यो के, हवे आगळ शु करवु ? **जे पुरुषमा तत्वज्ञानरुपी धन होय छे, तेनुं दुःख पण सुखने माटे होय छे.** अर्थात् यथार्थ ज्ञानी पुरुष दु.खमा पण सुख अनुभवे छे २१. " हे मूर्ख आत्मा ! तृष्णानी अग्निथी पीडीत थइने तु मोहने वश केम थाय छे ? कारण के बन्ने लोकना हितना नाश करनार पुरुष अने तृष्णाथी पीडीत पुरुषमा कई भेद नथी अर्थात् जे पुरुष तृष्णाथी व्याकुळ अने आशा निमग्न रहे छे, ते बन्ने लोकमा पोताना हितनो के कल्याणनो नाश करनार छे २२ हे आत्मा ! जो तु बन्ने लोकमा पोतानी भलाई ईच्छतो होय, तो **आशा तृष्णा** छोडी दे. आशाथी तारा धर्म अने सुखनो नाश थाय छे. आशा करवी ते फळ पामवानी इच्छाथी वृक्षनो नाश करवा बरोबर छे. धर्म अने सुखने कापनार आशा, फळ

पामनारने वृक्ष कापवा तुल्य छे, अर्थात् एवी आशा रहेवाथी धर्म अने सुखरुपी फळआश्रयनो नाश थवाथी ते क्यारे उत्पन्न थाय छे ? २३. अहो ! 'आ संसार असार छे,' हवे आ वात प्रत्यक्ष दीठी. कारण के कर्युं कंई अने थई गयुं कंई. २४. तेथीज मोटा मोटा योगी अने रुषि–मुनी घणीज धनसंपदावाळी इद्रपदवीने पण छोडीने मुक्ति प्राप्त करवा माटे तप करे छे. एवा योगीने हुं नमस्कार करुं छुं." २५. ए रीते विचार करतो पण ते वणिक जो कोई मनुष्य नजरे पडतो तो तेने पोतानी पीडानुं वर्णन कहेतो हतो. कारण के ज्यां सुधी मोहनीय कर्मनो नाश थतो नथी, त्यां सुधी योगिओने पण वच्चे वच्चे चपळता आवी जाय छे. २६.

एटलामा एक मनुष्ये आ रीते आवीने तेनी बधी व्यथा सांभळी, तेथी मालूम पडतु हतु के आ जाणी बूझीने आव्यो नथी. २७ आ बधी वात साभळीने अने कोई बहानाथी राजाभूधर अर्थात् विजयार्धगिरिपर लइ जइने तेणे वणिकपतिने पोताने आववानु बधु कारण आ रीते कह्यु. २८.

विजयार्ध पर्वतथी दक्षिण श्रेणीए मंडनरुप एक गान्धार नामे देश छे. ते देशमा नित्यालोका नामनी एक प्रसिद्ध नगरी छे. २९. ते नगरीनो राजा गरुडवेग तथा तेनी राणी धारिणी छे अने तेनी पुत्री गंधर्वदत्ता छे, जे यवीयसी अर्थात् पुर जुवान थई गई छे ३०. ज्योतिषिओए गंधर्वदत्ताना जन्मलग्नमा कह्यु के आ पृथ्वीपर राजपुरी नगरीमां आ एक वीणावीजयी स्त्री थशे.' ३१. तेथी राजा के जे मारा

पर बहु प्रीति राखे छे, तेणे पोतानी स्त्री साथे एकान्तमां सलाह करीने मने ए आज्ञा आपी के,–३२. हमारे श्रीदत्त साथे परंपरानी मित्रता छे अर्थात् तेना अने अमारा कुळमा बापदादाओथी मित्रता चाली आवी छे, तेथी जल्दी जइने श्रीदत्तने अही लइ आवो. ३३. मारु नाम धर छे मे पराधीन थईने नावना तूटी जवानो भ्रम आपने जणाव्यो अने पछी एक आवश्यक कार्य माटे आपने अही लाव्यो छु ३४ " श्रीदत्त पण आ वात साभळीने बहु प्रसन्न थयो, कारण के मनुष्योने दु.खनी पछी सुख बहुज सारु लागे छे. ३५ पछी ते वैश्य विद्याधरोना राजा गरुडवेगने जोईने बहुज सुखी थयो. पोताना मित्रना, तेमा राजा मित्रना जोनारथी विशेष बीजो कोण सुखी होय छे? एक तो सामान्य मित्रना दर्शनथीज बहु सुख थाय छे, पछी जो ते राजा होय, तो कहेवानुज शु छे ? ३६. पछी ते विद्याधरे पोतानी पुत्री तेने सोपी दीधी कारणके मित्र एवाज होवा जोइए, के जे प्राणोमा पण प्रमाण होय, अर्थात् प्राण आपवामा पण कोइ प्रकारनो वाधो समजे नहि ३७. अने तेने तरतज विदाय कर्यो, कारण के पुत्रिना युवान थवाथी वृथा वखत खोवो ठीक नथी. ३८. गृहस्थोने कन्याओनी सावधानीथी रक्षा करवानु कष्ट बहुज पीडा आपे छे. ३९.

हवे श्रीदत्त ते कन्याने साथे लईने पोताना नगरमां आव्यो अने तेणे तेनी बधी वात पोतानी स्त्रीने कही दीधी. निश्चयथी स्त्रीओनी बुद्धि खोटीज होय छे. ४० पछी तेणे

राजानी आज्ञा लईने छावणीमां ए ढढेरो पीटाव्यो के, आ मारी सर्वोपमा योग्य पुत्री, जे वीणा वगाडवामा सर्वथी अधिक प्रवीण हशे, तेने परणाववामा आवशे. ४१. कारण के राजा-ओनी आज्ञाथी माणसोने निर्भयता रहे छे. जो राजाओनी आज्ञा न होय तो बीजी वात तो एक बाजु रही, परंतु सदाचारी पुरुषोनो सदाचार पण स्थीर रहेतो नथी. ४२. एटलामां बधा राजा महाराजा वीणा मडपमां आवी पहोंच्या. आ जगतमा एवा कोण छे के जे स्त्रीना अनुरागथी ठगाय नहि, अर्थात् स्त्रीनी प्रीति सर्वने खेंची लावे छे. ४३. वीणा वगाडवामा बधा राजा कन्याथी हारी गया. नक्की जाणो के, अधुरी विद्याज कइ कंइ निरादर अने अपमाननुंज कारण थाय छे. ४४ परतु जीवंधरकुमारे ते कन्याने वीणामां जीती लीधी, कारणके पूर्ण विद्या बन्ने लोकना फळ आपनारी छे.४५.

हवे ते कन्या पोतानी हारने जयथी पण वधारे अधिक जाणीने तेनी पासे आवी, कारण के लक्ष्मी पुण्यवानने शोधीने तेनी पासे पहोंची जाय छे. ४६. त्यार पछी ते केळनी समान जाघवाळी कन्याए जीवकना हृदयमा माळा घाली दीधी. 'तप करो', एज ते सर्वने कहेती हती. ४७.

काष्ठागारे आ जोईने बिजा राजाओने भडकाव्या, कारणके दुर्जनोनुं एज लक्षण होय छे के ते बीजानो प्रताप अने भाग्योदय जोईने खेद करे छे. ४८. " वैश्यनो पुत्र जे सोना

चांदी सिवाय तांबा पीतळनी धातुओने खरीदे छे अने वेचे छे अर्थात् जे पैसा टकाना व्यवहार कर्या करे छे, ते राजाओने योग्य एवी सुदर स्त्रीओने केवी रीते लइ ले ? आ बहु आश्चर्यनी वात छे. ४९ " ए रीते भडकाववाथी ते राजा युद्ध करवा लाग्या, कारणके बुद्धि स्वभावथीज अकार्य करवाने तत्पर थइ जाय छे, पछी खोटी शीखामण पामवाथी तो कहेवुज शुं ? अर्थात् एवी अवस्थामां तो खोटा कार्यमा प्रवृत्त थाय छेज. ५० परंतु ते धनुर्धारियोना चक्रवर्तीथी ते बधा राजा हारी गया. हजारो कागडाना एकत्र थवाथी शुं प्रयोजन नीकळे छे ? ते बधाने माटे तो एक पत्थरज बहु छे. ५१.

बधा सज्जन पुरुषोए हर्षथी ए कह्युं के—आ कन्यानुं मन योग्य पुरुषमा आशक्त थयु छे आ लोकमा चद्रमाथीज अमृतनी उत्पत्ति थाय छे शु आ आश्चर्य छे ? अर्थात् आमा कोई आश्चर्यनी वात नथी तेने एवोज योग्य वर मळवो जोईतो हतो. ५२

त्यार पछी अग्निने साक्षी आपीने श्रीदत्ते आपेली गंधर्वदत्ताने जीवकस्वामी विधिपूर्वक परण्या. ५३.

आ प्रमाणे श्रीमान् वादीभसिंहसूरिए रचेल श्री क्षत्रचूडामणि ग्रंथमां 'गंधर्वदत्तालम्भ' नामे त्रीजु प्रकरण पूर्ण थयु.
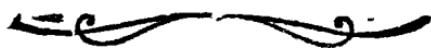
प्रकरण ४ थुं.

र पछी जीवंधरस्वामी पोतानी स्री गंधर्वदत्ता साथे रमण करवा लाग्या–सुख भोगववा लाग्या, कारण के ससारमां मनुष्य. पोताने योग्य वस्तुओनेज भोगववाथी सुख अनुभवे छे. १

हवे वसन्तऋतुए नगरवासीओने जळक्रीडा करवा लगाड्या अर्थात वसन्तऋतु आववाथी नगरना बधा माणसो फाग खेलवा लाग्या. जे लोक अनुरागथी आधळा छे, तेमने वसन्तज भाई छे जेमके अग्निनो बधु पवन. २. जीवंधर कुमार पण पोताना मित्रोनी साथे नदीना जळनी आ नवी क्रीडा जोवाने गया, कारण के ससारना मनुष्य हमेशां नवी नवी वस्तुओने इच्छे छे ३

त्यां केटलाक ब्राह्मणोए एक कुतरो, के जेना बोटवाथी घी दूषित थई गयु हतु, तेने मारी नाख्यो कठोर हृदयवाळा अने धर्मना विरोधी लोक शुं शुं कार्य करता नथी अर्थात् ते सर्व कई नीच कर्म पण करी नाखे छे. ४. हाय ! अधर्मी पुरुष जीवोने विना कारणज मारी नांखे छे अने जो तेने मारवामां जरा पण कहेवा सांभळवानुं कारण मळी जाय तथा कोई निवारण करनार न होय, तो तो पछी कहेवुंज शुं ? ५

कुमारे कुतरानी दुर्दशा अने पीडा जोईने बहु खेद कर्यो. करुणा अथवा दया तेनेज कहे छे के, जेमा बीजाना दुःखमां पोताना दुःखनी समान पीडा अनुभवाय छे. ६ तेणे बहु कई प्रयत्न पण कर्यो, परतु ते कुतराने बचावी शक्यो नहि, तेथी तेणे परलोकना हेतु अने कल्याणने माटे ते कुतराने (मरती वखते) पंच नमोकार मंत्रनो उपदेश आप्यो ७. कारण के जो वखत आववे प्रयत्न करवामां आवे नहि, तो ते बीलकुल सफळ थतो नथी मोक्षमार्गमां जनार माटे आ मूळमत्रज तेनी मार्ग सामग्री (भाथुं) छे. तेने बीजा प्रकारनी सामग्रीनु शु प्रयोजन ? ८. मंत्रनी शक्तिथी ते कुतरो मरीने यक्षेद्र अर्थात् यक्ष जातिना देवोनो इद्र थयो जेमके रसायणना योगथी काळु लोढु पण सोनुं थइ जाय छे तेम ९. जे मत्रने अत समये पामीने कुतरो पण देवता थई गयो, ते मूळमत्रने कयो बुद्धिमान नहि जपे ? अर्थात् ते मूळमत्र बधा बुद्धिमानोए जपवो जोईए १०.

ते देव जे पहेला कुतरो हतो, ते कृतज्ञताथी जीवंधर कुमारनी पासे तेज वखते आवी गयो, कारणके देवोना शरीरनी उत्पत्ति अंतर्मुहूर्तमां थइ जाय छे ११ शुद्ध वाणी बोलनार अने आनदथी उभरायलो ते यक्षेद्र देव, कुमारने जोईने बहु प्रसन्न थयो कयो चेतन प्राणी एवो छे के, जे उपकारने याद न राखे ? १२ तेने जोईने जीवधर स्वामि मत्रनी उत्कृष्टता के उत्तमतानो विचार करीने विस्मित थया नहि, अर्थात् स्वामीने ए वात आश्चर्य लागी नहि, कारणके मुक्तिना

आपनार मंत्रने लीधे देवतायोनिनुं मळवुं कठण नथी. जे मंत्रथी मोक्षनी प्राप्ति थाय छे, तेथी देवगति मळवी ते तो बहुज सहेल छे. १३. त्यार पछी "हे भाग्यशाळी पुरुष! मने याद करजो" एवु कहीने ते देव अन्तर्धान थयो. चेतनप्राणी पोतानो उपकार करनार माटे प्रत्युपकार करवानी इच्छा केम करे नहि' अर्थात् कृतज्ञ प्राणी उपकारने बदले प्रत्युपकार अवश्य करेज छे. १४ ज्यारे ते देव जीवंधर कुमारनु वारंवार आलिंगन करीने अने कुशळक्षेम पुछीने चाल्यो गयो, त्यारे त्यां जे कई थयुं तेनु वर्णन करवामां आवे छे. १५.

सुरमंजरी अने गुणमालाने चूर्णने माटे परस्पर इर्ष्या थई, अर्थात् पहेली बीजीने कहेवा लागी के जो, कोनु पटवस्त्र वधारे सुगंधित छे' सत्य छे, के आ संसारमा एकज पदार्थनी इच्छा करवाथी कोनी कोनी इर्ष्या वधती नथी' अर्थात् सर्व एज इच्छे छे के, हुज आ पदार्थने लई लउ अथवा मारीज वस्तु बीजानी वस्तुओथी अधिक स्तुत्य छे. १६. पछी ते बन्ने सखीओए माहोमाहे शरत करी के, आपण बन्नेमा जे कोई हारे, ते आ नदीना जळमां स्नान करे नहि. सत्य छे के द्वेषभावथी शु नाश थतो नथी' अर्थात् पोतानुं सारुं काम पण नाश पामे छे. १७. पछी तेमणे बे दासीकन्याओने सज्जनोनी पासे मोकली. सत्य छे, के मत्सर अने द्वेष करनारने गमे तेवु खोटु काम होय, पण ते सारु लागे छे. १८. तेथी ते बन्ने दासीओ चतुर अने बुद्धिमान जीवकनी

पासे जई पहोंची, कारण के प्रशसनीय अने निर्मळ विद्या लोकमां कई वातनो प्रकाश करती नथी ? अर्थात् उत्तम विद्यार्थी आ लोकमां बधी वातनो निर्णय थई जाय छे १९. त्यारे जीवधरे गुणमालाना सुगन्धित द्रव्यने सारी रीते जोईने तेने गुणवाळुं कह्यु, अर्थात् गुणमालाना चूर्णनी प्रशंसा करी (अने सुरमंजरीना चूर्णने गधरहित कह्युं) सत्य छे के पदार्थोना गुण अने दोषनो निर्णय करवो तेज पांडित्य छे २०. सुरमंजरीनी दासी आ वात सांभळीने क्रोधमा आवी गई अने बोली,—"जे बीजाओए कह्युं हतु, तेज आपे पण कही दीधु शु तेमणे आपने पण भणाव्या छे—शीखव्यु छे ? " २१ आ साभळीने स्वामीए ते बन्ने चूर्णोना गुण अने दोषोनो निर्णय माखीओ द्वारा कर्यो. खरु छे, के जो बुद्धिमानो पासे विवादरहित विधि न होय, तो पछी तेमनी चतुराइज शा कामनी ? २२ तेमणे बीजा चूर्णने अर्थात् सुरमजरीना चूर्णने खराब कह्यु, कारणके ते अकाळमा (खोटे-वखते) बनाववामा आव्यु हतु, तेथी सुगधीरहित थइ गयुं हतु. ठीक छे के जे काम वखत वगर करवामां आवे छे, तेथी कार्यनी सिद्धि थती नथी. २३ त्यार पछी ते बन्ने दासीओ कुमारनी स्तुति अने वन्दना करीने चाली गइ सत्य छे के जे पुरुष सत्यनो निर्णय विवाद रहित करी दे छे, तेनी कोण स्तुति करतुं नथी ? २४. परतु आ वात सुरमंजरीने विरागनु कारण थइ गइ, कारण के जेना मनमा इर्ष्या भरेली होय छे, तेने न्यायनी वात सारी लागती नथी. २५. गुणमालाए सुरमजरी-

ने प्रार्थना पण करी, परतु तेणे स्नान कर्यु नहि. ते बहुज क्रोधमा आवीने तरतज पाछी चाली गइ, कारणके इर्ष्या स्त्रीओथीज उत्पन्न थइ छे. अर्थात् सर्वथी अधिक इर्ष्या स्त्रीओमाज होय छे. २५. फरीथी " हु जीवकना सिवाय बीजा कोइ पुरुषने नहि देखु " एवी प्रतिज्ञा करीने ते पोताने घेर चाली गई. सत्य छे, के **स्त्रीना मनने कोई पण फेरवी शकतुं नथी.** (त्रण हठ प्रसिद्ध छे— स्त्रीहठ, बाळहठ अने राजहठ) २७. सखीना आ रीते न्हाया विना जता रहेवाथी गुणमाळा तेने माटे बहु दु खी थई, कारण के जेम अनिष्टथी सयोग अने इष्टथी वियोग जेटलो पीडाजनक होय छे तेथी वधु कोई वात दु:खदायी होती नथी. २८.

एटलामा ते नगरना रहेनारने एक गन्धहस्तीनो डर लाग्यो, अर्थात् काष्ठागारनो एक हाथी छूटी गयो अने तेथी नगरनिवासी भयभीत थया विपत्तिओ तो पीडा देनार होय छेज, किन्तु मूर्खोने तेनो डरज पीडा आपे छे. २९. ते वखते हाथीने देखताज गुणमालाना नोकर चाकर तेने एकली मूकीने जता रह्या. सत्य छे, के **विपत्ति पडवाथी मनुष्योना बंधु रहेता नथी,** अर्थात् विपत्तिकाळमा बधा जुदा थई जाय छे. ३०. परतु कोई दायण दयाथी तेने (गुणमालाने) पोतानी पीठ पाछळ राखीने आगळ उभी रही अने बोली के, " पहेलां हुं मरीश अने पछी आ कन्या मरशे. ३१. सत्य छे, के **आ संसारमां बधु तेज छे के जे सुख दुःखनी वखते समानता**

बतावे. विपत्‌काळमां तो यमना दूत पण दूर जता रहे छे, अर्थात् दु खी प्राणीने काळ पण खातो नथी. ३२ एटलामा जीवंधर स्वामीए दांतोथी प्रहार करनार ते हाथीने जोईने हठाव्यो. सत्य छे के परार्थ साधनमां लागेला अर्थात् बीजानुं हित करनार सज्जन पुरुष पोतानी विपत्तिने देखता नथी. ३३. बीजानु हित ईच्छनार सज्जन पुरुष कई कई स्थळे अवश्य विद्यमान छे. जो कंई पण सुजनता के साधुभाव न होय तो, आ ससारज केम करीने चाले ? ३४

त्यार पछी कुटुम्बना लोक पण पोतपोतानी मेळे एवु कहेता दोडता आव्या के, 'पहेलो हु, पहेलो हुं' सत्य छे, के सुखमा ते लोक पण बन्धु बने छे के जमने पहेला कदी दीठा होता नथी ३५ तेज वखते एक बीजाने परस्पर जोईने कन्या अने कुमारमा प्रीति उत्पन्न थई गई सत्य छे के, मनुष्योने दु.खनी पछी सुख अने सुखनी पछी दु ख होय छे ३६ पछी ते कन्या जेनु अत.करण कामपीडाथी अशान्त अने सतप्त थई गयु हतुं, ते जेम तेम करीने पोताने घेर गइ. सत्य छे के जो विवेकरुपी जळनो प्रवाह न होय, तो रागरुपी अग्नि केम करीने शान्ति थइ शके ? ३७. पछी घेर आवीने तेणे स्वामीनी पासे क्रीडाशुक अर्थात् पोतानो पाळेलो पोपट मोकल्यो. सत्य छे के जे माणस रागथी आंधळो थइ जाय छे, तनामां योग्य अने अयोग्यनो

विचार क्या रहे छे ? अर्थात् कामी माणस ए विचारतो नथी के, मारे आ वात करवी जोइए अने आ वात करवी जोइए नहि. ३८. पोपट पण तेने जोइने पोताना अभिप्रायनी सिद्धि माटे खुशामद करवा लाग्यो, कारणके एवी खुशामदथीज बीजा लोक वश करवामा आवे छे ३९. "बधा विषयोमां पोतानी ईच्छाओने हमेशां सफळ करनार अने पोताना माननीय गुणोनी रक्षा करनार अथवा सर्व जगतमा स्तुत्य गुणमालाने जीवतदान आपनार तमो दीर्घायुष्य रहो " ४० आ आशीर्वाद सांभळीने कुमार पण ते पोपटना सदेशाथी बहु प्रसन्न थया, कारण के इष्ट स्थानमा वृष्टि थवाथी अधिक प्रसन्नता अने हर्ष थाय छे. ४१. पछी जीवंधरे पण पोपटना सदेशानो प्रत्युत्तर कर्यो, कारण के जे पुरुष बुद्धिमान होय छे, ते पोतानी अपेक्षा करनारनी उपेक्षा करता नथी; अर्थात् जे पोतानी पासेथी कई इच्छे छे, तेनो तिरस्कार करता नथी, पण ते पर ध्यान दे छे. ४२ गुणमाला पण पक्षीने पत्र सहित जोईने बहु प्रसन्न थई, कारण के पोतानो करेलो यत्न सफळ थवाथी अधिक प्रीति थाय छे ४३. पछी तेना मावाप पण आ वात साभळीने बहुज प्रसन्न थया, कारण के आ संसारमां भाग्यवान् अने योग्य वरनुं मळवुं बहु कठण होय छे. ४४. ते पछी कोई बे अपरीचित प्रख्यात पुरुष गन्धोत्कटनी पासे आव्या. (अने तेमणे जीवधर–गुणमालाना सबंधना विषयमा वाडी खाधी) सत्य छे, के नीचनी मनोवृत्ति

निश्चल रहेती नथी, अर्थात् कईने कई खोटु करवामां तत्पर रहे छे. ४५ परतु गन्धोत्कटे ते बन्नेनां वचन सांभळीने उलटी तेमनी (जीवंधर--गुणमालानी) प्रशसा करी सत्य छे, के दोष रहित अभिप्राय बीजाना कहेवाथी दुषित थतो नथी. ४६ त्यार पछी जीवंधर कुमार कुबेरमित्रे आपेली विनयमालानी पुत्री गुणमालाने विधिपूर्वक परण्या ४७

आ प्रमाणे श्रीमद् वादिभसिंहे रचेल श्रीक्षत्रचूडामणि ग्रंथमां 'गुणमालालम्भ' नामे चोथु प्रकरण पूर्ण थयु
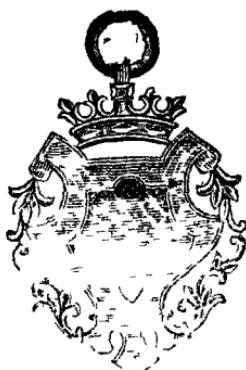
प्रकरण ५ मुं.

वे जीवंधर कुमार गुणमालाने परणीने तेने अतिशय दुर्लभ्य समझ्या. तेओ तेथी बहु स्नेह करवा लाग्या. सत्य छे के जे वस्तु यत्नथी मळे छे, ते बहु व्हाली लागे छे. १.

स्वामीए पहेलां गुणमालाने बचावी त्यारे ते गंधहस्तीने कडु मार्युं हतु, तेथी ते हाथीए पडाइने खावानुं खाधुं नहि. सत्य छे, के पशुओथी पण तिरस्कार सहन थतो नथी, अर्थात् पशु पण पोतानो तिरस्कार सहन करतां नथी. २. काष्ठांगार आ साभळीने स्वामीपर बहु क्रोधायमान थयो, कारण के अग्निमां घी होमवाथी तेनी झाळ वधारे वधे छे. ३. अनंगमाळा वारागना के जेना उपर काष्ठांगार आशक्त हतो, तेनो संग करवाथी, गायोरुपी धनना ओरनार वाघने जीतवाथी अने वीणाविजयी होवाथी काष्ठागारना हृदयमा क्रोधनी अग्नि स्थपाइ हती. ४. कोइनामां गुणोनी उत्कर्षताने जोइने नीच माणसोना मनमां पीडाज उत्पन्न थाय छे. अने जो गुणोने जोइने प्रीतिज उत्पन्न थाय, तो पछी नीचपणुज क्यां रहे ? ५. नीच मनुष्योनी साथे उपकार करवो, ते अपकारनु कारण पण थाय छे जेमके सापने दूध पावाथी विषनीज वृद्धि थाय छे तेम. ६. पछी काष्ठागारे सेना मोकली के, कुमारनो हाथ

पकडीने तेने लइ आवो. बहु खेदनी वात छे के, **मूर्खोनो क्रोधरुपी अग्नि अनुचित स्थानमां पण वधे छे;** अर्थात् ज्या क्रोध न करवो जोइए, त्यां पण मूर्ख माणस क्रोध करे छे. ७. ते सेनाए कुमारना घरने चारे तरफथी घेरी लीधु, परतु जो हरणो सिंहनी चारे तरफ तेने घेरीने खडा थइ जाय, तो ते तेने शु करी शके छे ? ८. ए जोइने कुमार पण क्रोधवश थइने सेनाने मारवानो प्रारभ करवा लाग्यो. सत्य छे के **जो तत्त्वज्ञानरुपी जळ न होय, तो क्रोधना अग्निने कोण बुझावी शके छे ?** ९. त्यारे गंधोत्कटे धीरेथी समझावीने तेने कवच पहेरीने सेनाने मारवा जता रोक्यो अने जीवधरने रोकावुं पडयु, कारण के हित अथवा कल्याणना इच्छनार पुत्र पिताना वचननु कदी उल्लघन करता नथी १० पछी गंधोत्कटे जीवधर कुमारने पाछळ बाजुएथी हाथ बाधीने सेनाने सोंपी दीधा. सत्य छे, के पुरुषार्थथी पण पाछला जन्मनां दुष्कर्म निवारण थइ शकता नथी ११ तेने एवी दशामा जोइने पण दुष्ट बुद्धि काष्ठागारे तेने मारी नाखवाने आज्ञा आपी सत्य छे के, सज्जन मनुष्य तो शान्ति प्रकट करवाने नम्र थइ जाय छे, परतु तेनी ए नम्रताथी **दुष्ट मनुष्य वधारे उद्धत अने अभिमानी थाय छे.** १२ ते वखते कुमारे गुरुनी आज्ञानुसार काष्ठांगारने मार्यो नहि (जो ते इच्छे, तो मारी शके.) कारण के प्राण जतो रहे, परतु **बुद्धिमान पुरूष गुरुना वचननुं उल्लंघन करता नथी.** १३. स्वामी जाणता

हता के, 'मारे हवे शुं करवु जोइए' तेथी तेमणे यक्षने याद कर्यो, जेथी करीने यक्ष तत्काळज आवीने तेमने उठावी गयो. सत्य छे के, चेतन पुरुष उपकारने बदले प्रत्युपकार केम करे नहि? अर्थात् अवश्यज करे छे. १४

पछी लोकोए अत्यत शोकित थईने ए विचार कर्यो;– 'लोक गुणना ओळखनार होय छे' एवी जे प्रसिद्ध कहेवत छे ते बिलकुल खरी छे १५. "दुष्ट बुद्धिवाळा काष्ठांगारनी आ बहु भारे धूर्तता छे, परतु पोताना स्वामी राजानी साथे पण द्रोह करवाथी जे डरता नथी, तेमने तो आटली धूर्तता कई पण नथी; अर्थात् ते तो एथी पण वधारे धूर्तता करी शके छे. १६. हाय! यम अथवा धर्मराज पण जे सर्वनी साथे एक सरखो वर्ताव करे छे, ते पण नीच राजानी माफक दुराचारी थई गया. बहु खेदनी वात छे के, ते पण नि:सार समझीने दुर्जनोने लेता नथी. १७. जेवी रीते हंस पक्षी पाणीमाथी साररुप दूधने ग्रहण करी ले छे, तेज रीते सज्जन पुरुष जे काई साभळे छे, तेमाथी सार ग्रहण करी ले छे अने दुष्ट पुरुष पोतानी रुचि अनुसार काम करे छे. १८ सुजनतानु लक्षण एज छे के, बीजा कोई हेतु उपर ध्यान न देता गुण अने दोष होवा छता फक्त गुणोने ग्रहण करे छे अने दोषने त्यागी दे छे. जेम हस दूधने पी ले अने पाणीने जुदु करी नाखे छे तेम १९. बहु भारे बुद्धिमान पडित अने प्रतापी राजा थईने पण जो योग्य अने अयोग्यनो विचार करीने युक्तिसिद्ध अने उचित कार्यथी विमुख थई

आय-अर्थात् ते न करे, तो एवा पांडित्य अने ऐश्वर्य होवानुं शुं फळ ? अर्थात् कंई पण नहि." २०. ज्यारे आवो विचार करीने बधा लोक मनमां पीडावा लाग्या, त्यारे कुमारना बधा मित्र तेना भाई नन्दाढ्य सहित पश्चाताप करवा लाग्या अने युद्ध करवाने तैयार थया. २१. तथा तेना माता पिता मुनिनां वाक्यने याद करतां जीवतां रह्यां जो मुनिना वाक्य पण जुठां थयां, तो पछी कोई वचननुं पण प्रमाण न रह्युं. २२. ते वखते स्वामीने हर्ष के खेद कंई पण थयुं नहि, परतु पूर्व जन्ममां करेलां कर्मोनुं फळ अवश्य भोगववु पडशे, एवो विचार तेमना मनमां उत्पन्न थयो २३

त्यार पछी ते यक्षेन्द्र जीवंधरस्वामीने चंद्रोदय पर्वत पर पोताने घेर लई गयो अने त्या तेणे तेमने जळथी स्नान कराव्यु २४. अहीं एवुं समजवुं जोईए के, पुण्य कर्मना उदयथी विपत्ति सम्पत्तिनुं कारण थई जेमके सूर्य ससारने तो तापथी तपावे छे, परंतु कमळने खीलावीने शोभायमान बनावे छे. २५ यक्षेन्द्रे स्वामीनो क्षीरसागरना जळनी धाराथी अभिषेक करीने कह्यु के-तमे मने कुतरानी अवस्थामा पवित्र कर्यो हतो, तेथी आप पवित्र छो. २६. पछी तेणे स्वामीने त्रण मंत्रनो उपदेश कर्यो, जेथी ते पोतानी ईच्छानुसार जेवी आकृति ईच्छे तेवी ग्रहण करी शके, गायन विद्यामां प्रवीण थई गया, अने सापनुं विष दूर करवामां समर्थ थया. २७. अने तेणे ए पण कह्युं के, " हे पवित्र स्वामी ! तमे एक वर्षमां राजा थई जशो अने

पछी मोक्षे जशो. " २८. ए रीते यक्षेन्द्रे स्वामीनो बहु वखत सुधी आदरसत्कार कर्यो. पछी स्वामीने बीजा देशो जोवानी ईच्छा थई. सत्य छे के जे वात थनार होय छे, तेनो मनमां विचार थाय छे, अर्थात् भावी अटल छे ते सर्व कंई करावे छे. २९. अने विद्वान कुमारनी ईच्छाने जाणीने तेमना हितेच्छु देवे पण तेमने सम्मति आपी, कारण के देवता त्रणे काळनी वात जाणे छे. ३०. ए रीते आगळना मार्गनु बधुं वृतान्त बतावीने यक्षेन्द्र सुदर्शने तेमने जवानी समति आपी अने ते पछी रजा लईने स्वामि चाल्या गया, कारणके मित्रता हितने माटेज होय छे. ३१

त्यार पछी स्वामी नीडर (बीक वगरना) थईने अहिं तहि एकला विहार करवा लाग्या, कारण के पोताना पराक्रमथी पोतानी रक्षा करनार पुरुषने सिंहनी माफक कइ पण डर नथी. ३२. एकला होवा छता पण ते जीतेंद्रिय स्वामीने जरा पण उद्वेग थयो नहि, कारण के सम्पति अने आपत्ति मात्रथी अर्थात् ऐश्वर्य अने दरिद्रता प्राप्त थवाथी मूर्खनाज चित्तमां विकार उत्पन्न थाय छे. बुद्धिमानोना चित्तमां नहि. ३३.

आगळ कोई वनमा दावाग्निथी घेराएला अने अग्निमा बळता हाथीओने जोईने स्वामीए तेमने बचाववानी ईच्छा करी. ३४ दया धर्मनुं मूळ छे अने जीवोपर कृपा करवाने अथवा अनुकम्पा थवाने दया कहे छे, तेथी धर्मात्मानुं लक्षण ए छे के, जेने कोई आश्रय के सहाय नथी, तेने शरण राखे अथवा तेनी

सहायता करे. ३५. ते वखते मेघ गरज्यो अने वरस्यो. अहो ! निश्चयथी पुण्यवानोनी इच्छा अने मनोकामना सफळज थाय छे. ते हाथीओने बचेला जोईने जीवधर बहुज सतुष्ट थया, परतु पोते पोताना बधन अने विमोक्षमा उदासीन रह्या, अर्थात् दावाग्निमा पोताना फसाई जवाना अने पछी तेथी बची जवाना ख्यालथी तेमणे शोक कर्यो नहि, तेमज हर्ष पण कर्यो नहि. ३७. सज्जन पुरुषोनो ए स्वभावज छे के, ते पोताना सम्पत्ति अने आपत्तिकाळमा तो मध्यस्थ रहे छे, परंतु बीजानी सम्पत्तिमा सुखी अने तेनी विपत्तिमा दु:खी थाय छे. ३८.

पछी जीवधर स्वामी त्याथी नीकळीने तीर्थोमा पूजा करवा गया, कारण के वस्तुओनुं खरु के खोटापणु अने खराब के सारापणु तेना ससर्गथी के पासे जवाथीज जणाय छे ३९. त्यां धर्मनी रक्षा करनार एक यक्षिणीए आवीने ते धर्ममूर्ति कुमारने सारी रीते अन्न वस्त्र आपीने आदर सत्कार कर्यो ४०. अने लोक तो शु, परतु देवता पण धर्मात्मा पुरुषोनी पूजा करे छे, तेथी सुख इच्छनारे धर्ममां प्रीति राखवी जोइए. ४१

पछी ते स्वामी चालता चालता पल्लवदेशनी चन्द्राभा नामनी नगरीमा शुभ निमित्तथी गया, कारणके आगळ थनार वातनु कंइने कंइ निमित्त क कारण अवश्यज होय छे. ४२. त्यां तेमणे राजा धनपतिनी पुत्री, के जेने सापे करडी हती, तेने जीवतदान आप्यु सत्य छे के सज्जनोनो स्वभाविक गुण

एज छे के, हेतु विना बीजानी रक्षा करवी. ४३. ते पुत्रीना मोटा भाइ लोकपाले ते जाइने स्वामीनो बहु आदर सत्कार कर्यो, कारणके जीवनदान देवावाळानो बीजो कोइ प्रत्युपकार नथी. ४४. सज्जन पुरुष पोते पूजनीक होय छे अने बीजा सज्जनोना पूजक पण होय छे, कारणके पूज्यनी पूजानु उल्लंघन करवाथी पूजा शु ? अर्थात् जे पूज्यनी पूजा करता नथी, ते पण पूजवाने योग्य नथी ४५ बुद्धिमानोनी आगळ नम्रता अवश्य राखवी जोइए, कारणके नम्रताथीज आत्मा वशीभूत थाय छे. धनुषना नमवाथीज धनुर्धारियोना मनोरथ सिद्ध थाय छे. ४६ ते लोकपाले जीवधर स्वामीना शरिरने जोताज तेमना ऐश्वर्यनो निर्णय करी दीधो. सत्य छे के चेष्टाना जाणनार लोकोनु शरीरज तेमनु दौरात्म्य (दुर्जनता) अने महात्म्य कही दे छे ४७, त्यार पछी राजाए पोतानुं अर्धु राज्य अने कन्या जीवधर स्वामीने आपी दाधां. सत्य छे के लक्ष्मी योग्य पुरुषनी पासे पोते जातेज चाली आवे छे ४८. अने पवित्र जीवधर स्वामीए लोकपालनी मारफत आपेली तिलोत्तमानी पुत्री पद्मा के जे युवान हती, तेनी साथे लग्न कर्यु ४९.

आ प्रमाणे श्रीमान् वादीभसिंहसूरिए रचेल श्री क्षत्रचूडामणि ग्रथमा "पद्मालम्भ" नामे पांचमु प्रकरण पूर्ण थयु.

प्रकरण ६ ठुं.

र पछी पद्मा साथे विवाह करीने अने तेनी साथे केटलोक समय सुख भोगवीने जीवंधर स्वामी त्याथी चाल्या गया सत्य छे के धर्मात्मा पुरूष कृतार्थ होवा छता पण सुखने विरक्त थइने भोगवे छे १ पद्मा पोताना पतिना वियोगथी दु:खसागरमा डूबी गइ, कारणके जेने सम्यग् ज्ञान होतुं नथी, ते सदा दु:खज भोगवे छे. २. लोकपालना नोकर चाकर कुमारने शोधवा पण गया, परतु ते तेमने रोकी शकया नहि, कारण के बुद्धिमानलोक जे कामनो प्रारभ करे छे, तेमने बीजा लोक रोकी शकता नथी. अथवा ते कार्यमा कंइ विघ्न करी शकता नथी. ३

त्यार पछी जलदीथी चालनार स्वामीए तीर्थोनी पूजा करी, कारणके स्थान पण महापुरुषोना सबधथी पवित्र थइ थाय छे. ४ जे पृथ्वीपर सज्जन अने महात्मा पुरुष रही चुक्या छे, ते पृथ्वी पूजवा योग्य छे; ए कांइ आश्चर्यनी वात नथी, कारण के काळुं लोढुं पण रसायणना योगथी सोनुं बनी जाय छे. ५. सज्जनो अने दुर्जनोनी सगतिथीज मनुष्य सज्जन अने दुर्जन थाय छे, ए माटे सज्जन पुरुष हमेशां सज्जनोनी

साथेज मळेला रहे छे अने दुर्जनोथी दूर रहे छे. ६.

पछी जीवंधर स्वामी तीर्थस्थानोमां फरता फरता अने तेनी पूजा करता करता अनुक्रमे अरण्यना मध्य भागमां एक तपस्वीना आश्रममां पहोंच्या. ७ त्यां अनुचित अने असत् तप जोईने ते तपस्वीओ उपर दया करवा लाग्या, कारणके जे लोक बधाने हितकारी होय छे, ते बधा प्राणीओ पर साची दया करे छे. ८. जेने यथार्थ ज्ञान नथी, तेना पर पण तत्त्वार्थना जाणनार दया करे छे. सत्य छे के, जे बाळक कुवामा पडवा इच्छे छे, तेनो उद्धार करवा कोण इच्छतु नथी ? अर्थात् तेने बधाज कुवामा पडवाथी बचावे छे. ९. तत्त्वना जाणनार स्वामीए आदरपूर्वक तेमने पण यथार्थ तत्त्वनो बोध कराव्यो. साभळनार भव्य होय के न होय, अर्थात् अभव्य होय, परतु सज्जन पुरुषोनुं चित्त बीजानो उपकार करवा तरफज रहे छे. १०. " तमारा वेदनु वाक्य छे के, " मा हिंस्यात् सर्वभूतानि " अर्थात् " कोई प्राणीनी हिसा करशो नहि " तो पछी हे बुद्धिमानो ! तमे एवुं तप केम करो छो के जेनु फळ केवळ हिसाज छे. ११. पाणीमा नहाती वखते जे जीव वाळमां वळगे छे अने लाकडामां पडेला जीव पण जे फरी अग्निमां गरी पडे छे, तेने तमे तमारी आंखनी सामे मरता देखो छो ? १२ तेथी पंचाग्नि तप करवुं सर्वथा निकृष्ट अने अनुचित छे. ए तपमां जन्तुओनो वध

अर्थात् जीवहत्या थाय छे, तथा ए तप जन्ममरणरुप संसारनुं कारण छे. मोक्षनो हेतु नथी. १३. तप एज छे, के जेमां जीवोने कदापि सताप के पिडा थाय नहि, अने ते तप खेती व्यापारादि आरभोनो त्याग करवाथीज थाय छे, कारणके आरभथी हिंसा थाय छे. १४. अने आरभनी निवृत्ति अर्थात् त्याग निर्ग्रन्थ मुनिओमाज होय छे, कारणके पृथ्वीमां जे लोक कार्यथी विमुख होय छे ते कारणनी शोध करता नथी, अर्थात् जेने कोइ ससारीक कार्य करवानुज होतु नथी, ते तेने माटे आरभादि पण करता नथी १५ यतिधर्म के आरंभत्यागज वास्तविक तप छे. तेथी उल्टु जे कंइ छे, ते ससार अर्थात् जन्ममरणनां साधक छे जे लोक मोक्ष ईच्छे छे, ते बीजु तो शु, परतु पोताना शरीरने पण तुच्छ समझे छे १६ ससार तो रागद्वेषादि दोषोमा फसावनार छे, तेथी तेनाथी परिक्षय अर्थात् मोक्षनी प्राप्ति थती नथी. जे वस्त्र रुधिरथी दूषित छे, ते शु रुधिरथीज शुद्ध थई शके छे ? कदापि नहि. १७ जे लोकोने यथार्थ तत्त्वज्ञान नथी, तेमनु यति थवु पण निष्फळ छे जेम के पाणी, अग्नि, थाळी वगेरे सामग्रीना होवा छता पण जो चोखा न होय तो अन्न पकावी शकातु नथी तेम १८ जीवादि तत्त्वोनो (जीव, अजीव, आस्रव, बंध, संवर, निर्जरा अने मोक्ष ए सात तत्त्वोनो) यथार्थ निश्चय थवो अर्थात् तेमनुं जे स्वरुप छे, तेने तेज रुपे जाणवु ते सम्यग्ज्ञान छे अने लोकमां तेथी जे उलटु ज्ञान छे तेने मिथ्याज्ञान के मिथ्यात्व कहे छे.

१९. साचा जिनेश्वरदेव, तेमणे उपदेश करेल शास्त्र अने जीव, अजीव, आश्रव, बध, सवर, निर्जरा, मोक्ष, पुण्य अने पाप ए नव पदार्थ ए त्रणना यथार्थ ज्ञानने सम्यग्ज्ञान कहे छे. तेमां रुचि अथवा श्रद्धा होवाने सम्यग्दर्शन कहे छे अने ए बन्नेने अर्थात् सम्यग्दर्शन, सम्यग्ज्ञानने पोताना आत्मामां अस्खलित वृत्तिथी धारण करवाने अथवा आचरण करवाने सम्यक्चारित्र कहे छे २०. आज त्रण अर्थात् सम्यग्दर्शन, सम्यग्ज्ञान अने सम्यक्चारित्रनी एकता मुक्ति प्राप्त करवानो मार्ग छे तेथी भिन्न बीजा कोई मार्ग नथी. तेथी उल्टा जे बधा बाह्य तप छे, ते ए त्रणना साधक छे. (बाह्य तप छ प्रकारना छे,–१. अनशन अर्थात् उपवास करवो, २. उनोदर अर्थात् थोडुं खावु, ३ वृत्तिपरिसंख्या अर्थात् कोई एक अन्नने ग्रहण करवु अथवा भोजनमां कोई प्रकारनी आखडी लेवी, ४. रसपरित्याग अर्थात् घी, दूध वगेरे रसोमाथी कोई एक अथवा बे त्रण के बधा रसो खावानो त्याग करवो, ५. विविक्तशय्यासन अर्थात् कोई एकाद स्थानमा नियत आसनथी रहेवुं, ६. कायक्लेश अर्थात् टाढ तडको वगेरे शारीरिक कष्ट सहन करवा.) २१. बाह्य तप विना अभ्यन्तर तप थइ शकतु नथी, जेमके अग्नि वगेरे सिवाय भात चढतो नथी तेम (अभ्यन्तर तप पण छ प्रकारनां छे,–१. प्रायश्चित्त अर्थात् कार्य करवामां जे दोष लाग्या होय, तेनो गुरुनी आगळ साचा मनथी प्रकाश करवो अने आपेला दडने सतोषथी सहेवो. २ विनय अथवा नम्रता.

३. वैयावृत्ति अर्थात् बरदास्त, सेवा. ४. स्वाध्याय अर्थात् भणवुं भणाववु विचारवु वगेरे. ५ व्युत्सर्ग अर्थात् इंद्रिय अने क्रोधादिकने वशमा राखवां अने ६. ध्यान अर्थात् आत्मामा चित्तनी एकाग्रता.) २२. अने जुठा देव शास्त्रादि-गोचर जे मिथ्यादर्शन, मिथ्याज्ञान अने मिथ्याचारित्र छे, ते मोक्षनां साधन नथी, कारणके आ गरुड छे, एवु मानीने ध्यान धरेलुं बगलु झेरने दूर करी शकतु नथी, अर्थात् जेम झेर गरुडनुं ध्यान धरवार्थीज दूर थाय छे, तेम गरुडना समान देखानार बगलाथी थइ शक्तु नथी, तेज रीते मोक्षनी प्राप्ति साचा देव, साचा शास्त्रादिथी थइ शके छे आप्तना समान देखानार जुठा देव अने जुठा शास्त्रादिथी नहि. २३ तमे तरतज ए रीतनु तप करो, के जे सर्व प्रकारना दोषोथी रहित छे अने जे वीतराग अर्हत् परमेश्वरे जिनवाणीमां बताव्यु छे. फोकटमां चोखा विनाना छोडां खाडवाथी शो लाभ थशे ? २४. जे देवमां रागादि दोष विद्यमान छे, ते प्राणीओने भवसागरथी पार करी शकता नथी, कारण के जे पोतेज डूबनार छे, ते बीजानो हाथ पकडी शकता नथी २५. ए जिनेश्वर प्रभुमा क्रीडा नथी, कारणके क्रीडा तो छोकरामाज देखाय छे ते तो तृप्त अने ईच्छा रहित छे तेने क्रीडाथी शो लाभ ? जे तृप्त नथी, तेज क्रीडाथी पोताने तृप्त करवा ईच्छे छे. २६. ईश्वर स्वेच्छाचारी पण नथी, कारणके तेथी तेना ईशत्वमां हानि आवे छे अने अमे मनुष्यादिको साथे द्वेष कर-

वानुं पण ते सर्वोत्कर्षवान् परमश्वरने केवी रीते बने ? अर्थात् ते कोईथी रागद्वेष पण करता नथी. २७. जो ईश्वर दोषरहित छे, अने तेने कोई कार्य पण करवानुं बाकी रह्यु नथी, तो पछी ते कृतीने [करनारने] कृत्यथी शु ? अर्थात् ते कार्यज शुं करशे ? जो कहेशो के, स्वेच्छाचारथी करे छे, तो ते पण ठीक नथी, कारणके स्वेच्छाचार तो उन्मत्तमाज देखाय छे, उत्तम पुरुषमा नहि; अर्थात् उन्मतज स्वेच्छाचारी होय छे. २८. आ रीते उपदेश आप्यो, तेथी केटलाक तपस्वी धर्मात्मा बन्या, कारणके पाणी सीचवाथी सारी माटी तो ओगळी जाय छे, परंतु पत्थर ओगळता नथी. २९ त्यारे ते पडित, स्वामी धर्ममां लागेला तपस्वीओने जोईने बहु प्रसन्न थया. सत्य छे के आ ससारमां सज्जन पुरुषोने पोताना उदय के कल्याणनी अपेक्षाए बीजानु कल्याणज अधिक प्रीतिदायक होय छे. ३०. पुरुषोनुं त्रणे लोकमा सम्यग्दर्शन, ज्ञान अने चारित्रनी प्राप्तिथी अधिक बीजु ऐश्वर्य कयु हशे ? बीजा इद्रायणना फळ समान ऐश्वर्यना धोकामा नांखनार ससारीक ऐश्वर्यथी शु ? अर्थात् जेम इद्रायणनु फळ जोवाथी सारु होय छे, परतु ते अंदरथी बहुज खराब होय छे, ए रीते ससारीक ऐश्वर्य जोवामां सारुं लागे छे, परतु यथार्थमां ते अदरथी बहुज खराब होय छे. खरुं ऐश्वर्य सम्यग्दर्शन–ज्ञान चारित्ररुप रत्नत्रयनुं प्राप्त करवुं तेज छे. ३१.

त्यांथी चालीने जीवंधर स्वामी दक्षिण देशमां सहस्रकूट चैत्यालय पहोंच्या, अने त्या तेमणे जिनालयनी आ रीते स्तुति

करी,–३२. " हे भगवान् ! मारा दुर्नयरुपी अधकारथी व्याप्त मार्गमां आप मोक्षनो प्रकाश करनार दीपक होजो, अर्थात् मने परम ज्ञान आपो, जेथी मारु अज्ञान दूर थाय ३३. हे भगवान्! हु आ जन्म जरा मरणरुप संसार वनमां जन्मांधनी माफक फरी रह्यो छुं अहीं आपनी भक्तिज मने मुक्ति आपनार अने सन्मार्गमां प्रवृत्त करावनार छे. ३४. विवादरहित अने अखडित स्याद्वादमतना मुख्य प्रवर्तक अने उपदेष्टा श्रीशान्तिनाथ जिनदेव भवसागरना दुःख निवारण करवाने मारा मनमा दृढ शान्ति उत्पन्न करो " ३५. ए रीते स्तुति करवाथी ते जिनालयनां कमाड आपोआप उघडी गयां, कारणके जे मुक्तिरुपी द्वारनां कमाडने पण तोडीने उघाडे छे, ते कइ चीजने तोडी शकता नथी? अर्थात् मोक्षदाता स्तोत्र सर्व कइ करी शके छे ३६. एमा काइ आश्चर्य नथी के, ते पूजनीके ते वात करी बतावी के जेने बीजुं कोइ करी शकतु नहोतु सूर्य बधा लोकमा प्रकाश करी दे छे, परतु तेथी कोइने पण आश्चर्य थतु नथी ३७.

एटलामा कोइ पुरुषे तेनी पासे आवीने प्रीतिपूर्वक नमस्कार कर्यो. सत्य छे के प्राणी पोतानी मनोकामना प्राप्त करीने शुं सतुष्ट थता नथी? अर्थात् जेना मनोरथ सफळ थाय छे, ते सतुष्ठ थाय छेज, ३८ स्वामीए तेने जोइने पूछ्यु के, " हे आर्य ! आप कोण छो?" सत्य छे के नम्र पुरुषोमा एकरुपता राखवी अर्थात् नीच पुरुषोने पोताना समान समजवा तेज प्रभुओनी प्रभुता अने मोटानु मोटपण छे. ३९. ए वात पुछताज ते पण तरतज

उत्तर देवा लाग्यो,-कारणके इच्छित सहायताना होवाथी पण प्रयत्न फळदायक नीवडे छे. ४०. " आ स्थानमा क्षेमपुरी नामनी एक राजधानी शोभे छे, अने आ नगरीनो स्वामी नरपति देव राजा छे. ४१ ते राजाना श्रेष्ठी पद पर [नगरशेठनी पदवीपर] प्रतिष्ठित एक सुभद्र नामनो शेठ छे, जेनी स्त्रीनु नाम निर्वृत्ति छे अने क्षेमश्री ए बन्नेनी पुत्री छे. ४२. ज्योतिषिओए ए कन्यानां जन्मलग्नमां ए हिसाब बताव्यो हतो के, जे पुरुषना निमित्तथी आ जिन मंदिरना द्वार आपोआपज उघडशे, ते पुरुष आ कन्यानो पति थशे ४३ मारु नाम गुणभद्र छे. हु शेठनो नोकर छु, अने तेमनो मोकलेलो ते पुरुषनी परीक्षा माटेज अहीं रह्यो छु आज मे आपने दीठा छे, अर्थात् जे पुरुषनी तपासमा हु हतो, ते आपज छो " ४४ एवु कहीने तेणे फरी नमस्कार कर्या अने पछी तरतज पोताना मालीक पासे जईने अने बहु प्रसन्न थईने स्वामीनु वृतान्त कही बताव्यु. ४५. सुभद्र पण ए वात सांभळीने ते वखते तेनी साथे आव्या अने तेमणे जीवधर स्वामीने जिनदेवनी पूजामा तत्पर दीठा. ४६ ते वखते वैश्यपति अथवा शेठे तेनु फक्त शरीरज दीठु नहि, परतु ऐश्वर्य पण दीठु. शु सुगन्धित पदार्थनी सुगन्धि सोगन खावाथी नक्की थाय छे ? नहि तेतो जाते मालुमज पडे छे. अभिप्राय ए छे के, कोईना कह्या विना तेणे जीवंधरना वैभवने जाणी लीधो ४७. पूजाना अतमा ते बन्नेनो परस्पर यथायोग्य सुश्रूषानो व्यवहार थयो. जेम धान्यनी नम्रता तेनी

पक्वताने प्रगट करे छे, तेमज सज्जनोनी नम्रता तेमनी पक्वता अर्थात् योग्यता के मोटपण प्रगट करे छे. ४८. हवे ते बंधुओना प्यारा जीवधर स्वामी शेठना आग्रहथी तेमने घेर गया, कारण के लोकमा सज्जन पुरुषोनी मित्रता अरसपरस बे चार वातो करवाथीज थई जाय छे. 'साप्तपदीन सख्यम्' ए कहेवत प्रसिद्ध छे, अर्थात् एक बीजा साथे सात पद उच्चारण करवाथी मित्रता थई जाय छे. ४९. कोण एवुं छे के, जे आ ससारमां आवती लक्ष्मीने लात मारे ? तेथी तेमणे शेठनी दीनता अथवा नम्रताथी कन्या साथे लग्न करवानो स्वीकार कर्यो. ५०. त्यार पछी पवित्र जीवधर स्वामीए शुभ लग्नमा शुभद्र शेठ द्वारा समर्पण करेली क्षेमश्रीनी साथे विधिपूर्वक लग्न कर्युं. ५१.

आ प्रमाणे श्रीमान् वादीभसिंहसूरिए रचेल क्षत्रचूडामणि ग्रन्थमां 'क्षेमश्रीलम्भ' नामे छट्ठु प्रकरण पूर्ण थयु

प्रकरण ७ मुं.

छी सुयोग्य स्वामीए ए स्त्री साथे केटलुंक सुख अनुभवीने त्यांथी बीजा स्थानमां जवानी चेष्टा करी. १. अने बहुज रात्रीओ व्यतीत थवा पछी स्वामी कह्या विनाज चाल्या गया, कारण के **भोळा लोक सज्जनोना वचनमां कदी विश्वास करता नथी;** अर्थात् पतिना विश्वासमा आवीने स्त्रीओ तेने कदी जवा देती नथी. २. ते स्त्री तेना वियोगमां बळेली रसीना समान दुबळी अने कान्ति वगरनी थई गई. कारण के **परणेली स्त्रीओना, प्राण तेना पतिज होय छे,** बीजा कोई नहि. ३. सुभद्र पण ते पवित्र स्वामीने शोधीने ते न मळवाथी मनमा बहु दुःखी थया, कारण के जे वस्तु बहु यत्नथी मळे अने जो ते हाथथी चाली जाय, तो मनमा बहु खेद थाय छे. ए रीते **जीवंधरनो विरह** सहन थयो नहि. ४. प्रशस्त बुद्धिवाळा स्वामीए जती वखते ए विचार्युं के, हु मारां आभूषणो आपी दउ, कारण के **बुद्धिमानोने बुद्धिज भूषण छे,** बीजा आभरणादि दोषने माटेज होय छे. ५. ते वखते तेमणे पोतानां आभूषणोने कोइ. धार्मिक पुरुषने आपी देवानो संकल्प कर्यो, कारणके जे वस्तु पात्रने आपवामां आवे छे ते एक वस्तु पण **बीजनी माफक हजारघणी**

फळे छे. ६. एटलामांज सज्जनोना सहायक जीवंधर स्वामी पासे कोइ पुरुष आव्यो, कारण के प्राणीओनी बधी प्रवृत्तिओ तेमना भाग्यानुसार थाय छे. ७. त्यारे स्वामीए पोतानी पासे आवेला ते नीच पुरुषने पूछ्यु,—"तु क्यांथी आव्यो, क्यां जइश अने तु सुखी छे के नहि ?" ८ तेणे पण प्रसन्न थइने नम्रतापूर्वक उत्तर दीधो—कारण के मोटा पुरुषनी सन्मुख बोलवु, एज नीच मनुष्यने माटे राज्याभिषेक थवा अर्थात् राजगादी मळवा समान हर्षदायक होय छे, ९. "हे पूज्य! हु कार्यनी इच्छाथी अहीं तहीं फर्या करु छु. हुं सुखी छुं, अने आपना दर्शनथी मारा काममां बीजु पण विशेष सुख थशे अर्थात् मारु कार्य सफळ थशे." १०. ए सांभळीने कुमारे फरी ते शुद्र पुरुषने कह्युं,—"हे शुद्र! खेती वगेरे कर्मथी साचु सुख उत्पन्न थतु नथी ११. असि, मसि, कृषि, वाणिज्य, शिल्प अने विद्या ए छ प्रकारना कामथी जे सुख उत्पन्न थाय छे, ते तृष्णानु मूळ छे, थोडो वखत रहे छे अने ते तरतज नाश पामे छे, पापनु कारण छे, बीजानी अपेक्षा करे छे अर्थात् पराधीन छे, तेनो अंत पण खोटो छे, अने दुखथी भरेल छे. १२. वस्तुत पोताना आत्मामांज उत्पन्न थएल स्वास्थ्य के सुखज आनन्ददायक छे ए सुख आत्माथीज मळी शके छे, अडचण अथवा पीडा रहित छे, सर्वोत्कृष्ट, अनन्त, तृष्णारहित अने मुक्तिदायक छे १३. ए आत्मसबधी परम सुख पोताना अने पारकाना भेदज्ञान, यथार्थ रुचिरुप श्रद्धान अने चारित्र

परिपूर्ण थवाथीज पूर्ण थाय छे. १४. आत्मानेज अनन्त ज्ञान, अनन्तदर्शन, अनन्त आनन्द अने अनन्तवीर्यादि गुणवाळो जाणीने, पुत्र, स्त्री वगेरेने तो शुं, परंतु पोताना शरीरने पण आत्माथी भिन्न समज. १५. ए रीते आ भिन्न स्वभावनो धारण करनार जीव अज्ञानताने लीधे शरीरने निजत्व बुद्धिथी जाणे छे, अर्थात् शरीरने पोतानाथी पृथक् समझता नथी. अने तेथी देहथी बंधाय छे अर्थात् वारवार शरीर धारण करे छे. १६. संसारमा आत्मा अज्ञानताथी शरीर धारण करवाना कारणभूत कर्म बांधे छे अने पछी शरीरथी अज्ञानता थाय छे. आ प्रबन्ध अनादि काळथी चाल्यो आवे छे; अर्थात् अज्ञानताथी शरीर धारण थाय छे, शरीरथी अज्ञानता थाय छे, अने तेज कर्म बधननो प्रबध ससार छे. १७. आत्माने आत्मत्वथी अने देहने देहत्वथी जोइने तु आत्माथी भिन्न जे देह छे, तेने त्यागवानी बुद्धि कर, कारण के अन्य प्रकारना नाश थनार कार्योथी शो लाभ ? १८. पर पदार्थोनो त्याग करनार अथवा त्यागी बे प्रकारना जाणवा जोइए, एक अनगार के यति अने बीजा सागार के गृहस्थी. एमाथी पहेला जे यति छे, तेमनुं शरीर मात्र धन छे, अर्थात् शरीर सिवाय तेमने बीजा कोइ प्रकारनो परिग्रह होतो नथी, अने ते बधा पापोथी रहित होय छे. १९. परतु तुं ते यतिओना मूळोत्तरादि गुणने धारण करी शकीश नहि, जेमके वनायु देशना घोडा हाथीनां पलाण अथवा झूलना भारने उठावी शकता नथी. २०. तेथी तुं

हवे गृहस्थना धर्मनो स्वीकार कर, कारण के एकज वखते उच्च श्रेणी पर चढवुं कठण होय छे--अनुक्रमे चढाय छे. २१. त्रण प्रकारना गुणव्रत, चार प्रकारना शिक्षाव्रत, अने पाच प्रकारना अणुव्रतयुक्त, सम्यग्ज्ञान अने सम्यग्दर्शन सम्पन्न अने दोष सहित पुरुष गृहस्थ होय छे. २२. ए गृहस्थोना आठ मूळगुण आ छे;—पांच अणुव्रत अने त्रण मकारनो त्याग. १. अहिंसा (हिंसा करवी नहि.) २. सत्य (साचुं बोलवु.) ३. अस्तेय (चोरी करवी नहि.) ४. ब्रह्मचर्य (पोतानी स्त्री साथे पण नियमित भोग करवो.) ५ मितवस्तुग्रहण (निर्वाह मात्रने माटे धनादिनो संग्रह करवो). ६—७—८. मदिरा, मांस अने मधनो त्याग. २३. मूळ गुणने वधारनार त्रण गुणव्रत छे. पहेलु दिग्व्रत, बीजुं अनर्थ दंडव्रत अने त्रीजु भोगोपभोग परिमाण व्रत. २४. प्रोषधोपवास, सामायिक, देशावकाशिक अने वैयावृत्य ए चार शिक्षाव्रत छे. २५. दशे दिशाओमा नियमित मर्यादा सुधी जवुं, प्रयोजन विनाना पापोनो त्याग करवो, अने परिमित अन्न स्त्री वगेरे भोग उपभोगना पदार्थोनुं सेवन करवु, ए त्रण गुणव्रतोना त्रण कार्य छे. २६. आठम चौदश वगेरे पर्वना दिवसोमां उपवास अर्थात् १६ पहोर सुधी चारे प्रकारना आहारनो त्याग करवो, आत्माना भावने सर्व जीवोमां समता वगेरे चिन्हथी निर्मळ राखवो, अने गमन करवानी निरतर अवधि बांधवी अर्थात् दिग्व्रतमां ग्रहण करेली मर्यादानी अतर्गत वर्ष, छ महिना, दिवस, पहोर वगेरे वखतना नियमथी गमन करवानी

प्रतिज्ञा करवी, अने दान वगेरेथी संयमी पुरुषोनी सुश्रूषा करवी, ए चार शिक्षाव्रतोनां अनुक्रमे चार कार्य छे. २७. **अणुव्रती श्रावक** ए सात शीलथी अर्थात् गुणव्रतो अने शिक्षाव्रतोथी कोइ कोइ देशनी अपेक्षाए (जेनो त्याग करी चूक्या छे) अने कोइ कोइ वखत (सामायिक आदि धारण करवाथी) **महाव्रतीनी समान गणाय छे**, तेथी गृहस्थ धर्म धारण करवो जोइए." २८. आ सांभळीने ते शुद्रे गृहस्थधर्मनो स्वीकार कर्यो. सत्य छे, के भाग्यनो उदय थवाथी कयो पुरुष क्यारे अने केवो थतो नथी अर्थात् शुभ कर्मनो उदय थवाथी सर्वने सर्व समय बधी वातनो लाभ थाय छे. २९ पछी ते दानना जाणनार दानी कुमारे तेने पोताना भूषणवस्त्र उतारीने बहु आदरथी आपी दीधा. सत्य छे के सज्जनोनु चित्त आपवामाज प्रसन्न रहे छे, लेवामा नहि. ३०. आ अमूल्य अने अकल्पित अर्थात् धार्या विनाना धनना लाभथी ते बहुज प्रसन्न थयो, कारण के संसारमा तात्कालीक विषय-सुखनी प्रीतिज विशेषताथी थाय छे, अर्थात् जीवने ज्यारे विषय सुख मळे छे, त्यारे ते बहुज आनन्दित थाय छे. ३१. त्यार पछी स्वामी तेने छोडीने तेनु स्मरण करतांज त्यांथी चाल्या गया सत्य छे के सज्जन पुरुष सन्मुख अने पीठ पाछळ बन्ने अवस्थामा एक सरखाज रहे छे. ३२.

आगळ चालता जीवंधर कुमार थाकीने कोई जंगलमां उपद्रव रहित थईने बेठा. पुण्यज सर्व जीवोने शरण आपनार छे, बीजु कोई नहि. ३३. त्यां तेमणे एक एकली स्त्रीने जोईने

म्हों फेरव्यु, कारण के साधु पुरुषोना मनमा जे दया उत्पन्न थाय छे ते सर्वथा दोष रहित होय छे. ३४. परंतु ए स्त्री ते श्रेष्ठ स्वभावाळा पराक्रमी पुरुषने जोईने तेनी साथे विषय-भोगनी इच्छा करवा लागी—कामवती थई गई, कारण के स्त्रीओनी रुचि अप्राप्त पुरुषमाज थाय छे, प्राप्तमा कदी नहि; अर्थात् स्त्रीओ घरना पतिने छोडीने नवा पुरुषनेज इच्छे छे. ३५. ते वखते मनना अभिप्रायने मारनार कुमारे तेने पुरुषा-भिलाषीणी समझीने विरक्तभाव प्रगट कर्यो, कारण के जे वस्तु मुर्खोने अनुराग के प्रीति करावनार होय छे, ते वशी अर्थात् जीतेंद्रिय पुरुषोने वैराग्यनुं कारण होय छे. ३६. " जो शरीर आत्माथी जुदुं बनाववामां आवे तो, तेमा फक्त चामडी, मास मळ, हाडका वगेरेज रही जाय, तोपण अज्ञानी जीव आ घृणित (चीतरी चढे तेवु) मांसमळादिना ढगला पर मोहित थई जाय छे, ए बहु खेदनी वात छे ३७ विवेचन करवाथी अर्थात् सारी रीते विचारपूर्वक निरीक्षण करवाथी तो आ शरीरमा दुर्गंध, मळ, मासादिक सिवाय बीजु कइ देखातु नथी, पछी तेमा जीव कोण जाणे केम मोह करे छे, तेनु शु कारण छे ? ३८ तेने अज्ञान स्वरुप, तर्क शून्य अने अप-वित्रतानु बीज अर्थात् मळमूत्रथी भरेलु समझीने पण जे आत्मा तेमा स्पृहा करे छे—तेने इच्छे छे, ते मानो पोते कहे छे के, हु कर्मोने आधीन छु, अर्थात् जीव कर्मोना वशमा रहीनेज अपवित्र शरीरमा राग करे छे. कर्मनी परवशता होत नहि, तो

कदापि करत नहि. ३९. आ विचारशून्य स्त्री मारा बळवान शरीरने जोइने परवश तथा कामान्ध थइ गइ छे, तेथी अथवा मारा कल्याण माटे मारे अहींथी चाल्या जवुं जोइए. ४०. स्त्री अंगारा जेवी अने पुरुष माखण समान होय छे. तथा स्त्रीओना सहवास मात्रथीज पुरुषोनां मन पीगळी जाय छे. ४१ तेटला माटेज पापथी डरनार पुरुष जुवान बाळकी साथे, वृद्ध स्त्री साथे, माता साथे, पुत्री साथे के आर्जिका साथे बोलवु, हासी करवी अने पासे निवास करवो वगेरे छोडी देवु जोइए. ४२. ए रीते वैराग्यनी वातो चींतवीने कुमार त्यांथी जवा लाग्या, कारण के पडितोए मूर्ख पुरुषोना कार्योथी डरवुज जोईए ४३ त्यारे ते अनुरागिणी स्त्रीए निश्चय करी लीधो के, पडित जीवंधर कुमार विरक्त छे, कारण के स्त्रीओमा शरीरादिनी चेष्टा परथी अंदरनो अभिप्राय जाणी लेवानु ज्ञान स्वभावथीज होय छे. ४४. तोपण तेणे तेना मनने वश करवाने पोतानुं आ वृतान्त कह्यु,—कारण के स्त्रीओनी दुर्बुद्धि ठगाईनी रीतमां अनेक द्वारवाळी होय छे, अर्थात् बीजाने ठगवाने ते नाना प्रकारनी वातो करे छे ४५. " हे भाग्यशाळी पुरुष ! आप मने एक विद्याधरनी अनाथ कन्या समजो. मारा भाइनो साळो मने अहीं बळात्कारे लाव्यो छे अने पोतानी स्त्रीथी डरीने मने अही मूकी गयो छे ४६. मारुं नाम अनंगतिलका छे. हे पुरुषोना शिरोमणि ! मारी रक्षा करो, एटला माटे के आप श्रेष्ठ पुरुष छो अने जेने कोई शरण के

आश्रय होतो नथी, तेनो आश्रय श्रेष्ठ पुरुष होय छे. ४७."
एटलामां ते विद्वान कुमारे कोई पुरुषने दुस्सह आर्तस्वरथी एवुं कहे-
तां सांभळ्यो के,–"हे प्यारी! तुं क्यां चाली गई? मारा तो तारा
विरहमां प्राण नीकळी जाय छे." ४८. त्यारे ते तरुणी कोइ
बहानुं काढीने कुमारनी पासेथी एटली जल्दी चाली गइ के
जेटली वारमां एक क्षण चाली जाय, कारण के स्त्रीओनी चित्त-
वृत्ति स्वभावथीज मायामयी अर्थात् छळकपटवाळी होय छे.
४९ पछी ते माननीय कुमारने जोइने ते दु खी पुरुष दीनता-
पूर्वक कहेवा लाग्यो,—कारण के जे रागान्ध पुरुष अपवादथी
के निन्दाथी डरतो नथी, तेनी दशा बहुज शोचनीय थाय छे
५०–" मान्यवर ! मारी पतिव्रता स्त्री तरसथी व्याकुळ हती,
तेथी हु तेने अहीं बेसाडीने पाणी लेवाने गयो हतो, परतु हवे
हु पाछो आव्यो, तो तेने अहीं देखतो नथी ५१ हु विद्याधर छु अने
विद्याधरमां जे विद्या होवी जोईए ते मारामा विद्यमान छे,
परंतु आ वखते ते अविद्यमान जेवी थई गई छे, अर्थात् ते स्त्री
न मळवाथी हु सर्व कई भूलीने कर्तव्यमूढ जेवो थई गयो छु
तथा हे पुरुषोत्तम, हवे कहो के, आ बाबतमा मारु कर्तव्य शु
छे. हु शु करु ? ५२ आ साभळीने ते अभयकर अर्थात् बीजाने
पण भयरहित करनार जीवंधर कुमार स्त्रीओमा आतिशय लव-
लीन थवाथी डर्या, कारण के खोटी वातथी डरवामाज मोटानु
मोटपण छे. ५३. त्यार पछी पडित जीवधर विद्याधरने आ

रीते समजाव्यो;—कारण के बीजानुं हित ईच्छनार पुरुष नक्कीज उत्तम फळ आपनारी वात कहे छे. ९४. " हे भवदत्त ! तुं विद्यारुपी धन पामीने पण केम व्यर्थ दु:खी थाय छे ? कारण के विद्या होवाथी सुंदर वस्तुओमाथी **एवी कोईपण वस्तु नथी, के जे मळी शके नहि.** ९९. हे विद्याधर ! विद्वान तो अहीं तहींनी विपत्तिओ आववाथी निश्चल रहे छे, अने मूर्ख शोक करवा माडे छे, ते सिवाय विद्वान अने मूर्खमा कई पण भेद नथी. ९६. हजारो प्रकारनी बुद्धिवाळी स्त्रीओमा **पातिव्रत्य** धर्म कयो ? तेमनु पातिव्रत्य तो जवा आववाना अभावमां रहे छे अने ते पण कई कई भाग्येज--अर्थात् जो ते अहीं तहीं कई जाय नहि, तो पतिव्रता रही शके छे ९७ **स्त्रीओनां आभूषण** मद, मात्सर्य, माया (छळ), इर्ष्या (विरोध), राग (प्रीति), अने क्रोध वगेरे छे अने तेना धन जूठ, अपवित्रता, कुटिलता, शठता (लुच्चाई) अने मूर्खता छे. ९८. आ स्त्री कृपा रहित, दयाहीन, क्रूर, अव्यवस्थित चित्तवाळी, अकुश रहित (स्वतंत्र), पापरुप अने पापनु कारण छे, पछी एवी स्त्रीमा तारी इच्छा केम थई ? अर्थात् तुं एटलो रागी केम थइ रह्यो छे ? ५९. " परतु आ बधो उपदेश ते विद्याधरना हृदयमा रह्यो नहि, जेमके कुतराना पेटमा घी रहेतुं नथी तेम. ६०. तेथी स्वामीने तेनी मूर्खाईपर बहु दया आवी, कारण के कुमार्गगामीओ पर बुद्धिमानोए दया राखवी अथवा अनुकम्पा थवीज योग्य छे. ६१.

त्यार पछी स्वामी त्यांथी चालीने कोई **बागमां** गया, **कारण के** मन घणु करीने एवी वस्तु जोवानी उत्कठा करे छे के जेने तेणे पहेला दीठी होय नहि. ६२. ते बगीचाना आंबाना फळने कोई पण मनुष्य धनुष्यथी पाडी शकतो नहोतो. ठीकज छे के जे मनुष्योमा शक्ति होती नथी, तेमने सहज काम करवुं पण कठण लागे छे. ६३. परतु स्वामी ते फळने पोताना **बाणथी** छेदीने बाणनी साथेज लाव्या, अर्थात् ते केरी तेमना बाणमांज छेदाईने चाली आवी, कारण के प्रत्येक कार्यमा एवो उत्साह करनार पुरुषज ईच्छित फळने पामे छे. ६४. आ काम जोईने जेनु बाण निशान पर लाग्यु नहोतुं. तेने बहु आश्चर्य लाग्यु, कारण के उत्तम काम अशक्त पुरुषोने आश्चर्यकारकज लागे छे. ६५ तेथी तेणे स्वामीथी डरता डरता नम्र थईने पोतानु आ वृतान्त कह्यु,--कारण के समर्थ पुरुषोनी आगळ असमर्थ मनुष्य तुच्छ छे ६६ --" हे धनुर्विद्यामां चतुर ! हु जे कई कहु छु, ते आप करो के न करो अने मारु वचन कडवु पण लागे, परतु आप तेने कृपा करीने अवश्य सांभळो ६७. आ मध्यदेशमा एक **हेमाभा** नामनी नगरी छे त्यां एक **दृढमित्र** नामनो क्षत्रिय (राजा) तथा **नलिना** नामनी तेनी स्त्री छे ६८ अने तेने **सुमित्र** आदि केटलाक पुत्र छे, जेमा एक हु पण छु अमे बधा भाई यद्यपि उमरमा मोटा थया छीए, परतु विद्यामा मोटा थया नथी, अर्थात् अमने विद्या आवडती नथी. ६९. तेथी अमारा पूज्य पिता एवा पुरुषनी

शोधमां छे के जे धनुर्विद्यामां प्रवीण होय. जो आप तेमां कंई दोष न समजो. तो ते पण जुओ अर्थात् मारा पिताने मळो. ७०." ते पुरुषनां उपरनां वचन साभळीने विद्वान स्वामीए कंई विरोध कर्यो नहि, अर्थात् ते तेना पिताने मळवाने राजी थईने गया. सत्य छे के देव मनुष्यने जातेज इष्ट पदार्थो मेळवी आपे छे. ७१ त्यार पछी **जीवंधर कुमार** राजाने जोईने अने तेनाथी आदरसत्कार पामीने तेने वश थई गया. संसारमां एवो कोण सचेतन छे के जे अनुसारप्रिय न होय, अर्थात् पोतानी ईच्छानुसार चालनारना वशमा बधाज रहे छे. ७२. राजाए पण क्षण मात्रमां तेमनु महात्म्य जोई लींधु, कारण के शरीर मनुष्यना प्रभावने अक्षर रहित परंतु स्पष्टरुपथी कही दे छे; अर्थात् **शरीरनी चेष्टाथी मनुष्यनो प्रभाव** जणाई आवे छे ७३. पछी राजाए पोताना पुत्रोने शीखववाने तेमने बहु प्रार्थना करी, कारण के विद्या गुरुनी आराधना करवाथीज प्राप्त थाय छे अने बीजा कशा साधनथी नहि. ७४. वारवार प्रार्थना करवाथी जीवधर कुमार पण विद्या भणाववाने तैयार थया, कारण के उत्तम विद्या तो ते पोते जातेज आपवी जोईए, पछी प्रार्थना करवाथी तो कहेवुज शु ? अर्थात् अवश्य आपवी जोईए. ७५. पछी पवित्र जीवधर स्वामीए राजाना पुत्रोने खरा मनथी विद्या शीखवी, कारण के जे कृतार्थ अने धर्मात्मा छे ते पोताना संसारीक प्रयोजननी ईच्छा नहि करतां बीजानु हित करे छे. ७६. राजाना पुत्रो पण परिश्रम करीने प्रत्यक्ष आचार्यरुप

अर्थात् पोताना गुरु जीवंधरना जेवा थई गया, कारण के विनय विद्यारूपी दूधने तरतज आपनारी कामधेनु समान छे; अर्थात् विनय करवाथी विद्या बहु जल्दी प्राप्त थाय छे. तात्पर्य ए छे के ते पुत्रो विनयपूर्वक भण्या, तेथी तेमने विद्या पण तरतज प्राप्त थई. ७७. पोताना पुत्रोने विद्यामां प्रवीण जोईने राजा बहु संतुष्ट थयो. पिताने ज्यारे पुत्र मात्रज आनन्दनुं कारण छे, तो विद्वान पुत्र तो होयज. आ बाबतमा तो कहेवुंज शुं ? ७८. पवित्र जीवंधर कुमारनुं तेणे बहुज सन्मान कर्युं एम करवुंज जोईए कारण के जो पडितोनु सन्मान न थाय, तो तेमा सन्मान न करनारनोज दोष छे. ७९. पछी तेणे ए विचार्युं के, हुं आ महान उपकार करनारनो शो उपकार करु ? आ संसारमां विद्या आपनारनो प्रत्युपकार शु थई शके छे ? ८०. आखरे तेणे कुमारने पोतानी कन्या आपी देवानु उचित धार्युं. दातारथी जे कंई बने—जे ते आपी शके, ते आदरपूर्वक आपवुं जोईए. ८१. त्यारे ते पोतानी पुत्रीने परणाववाने कुमारनी सन्मुख आव्यो, कारण के जे उदार पुरुष छे, ते आ त्रणे लोकने पण आपवाने तृण समान समझे छे. पछी पुत्री आपवी ते तो वातज शी ? ८२. त्यार पछी पवित्र जीवधर स्वामी अग्निनी साक्षीथी राजाद्वारा मळेली ते कनकमाला कन्याने परण्या. ८३

आ प्रमाणे श्रीमान् वादीभसिंहे रचेल क्षत्रचूडामणि ग्रन्थमां "कनकमालालम्भ" नामे सातमु प्रकरण पूर्ण थयुं.

प्रकरण ८ मुं.

नकमाला साथे परण्या पछी बुद्धिमान जीवंधर कुमार तेमां अतिशय अनुरक्त रह्या नहि–तट-स्थ रह्या, कारण के जे अनुराग अथवा• विषय-भोगना समुद्रमा अवगाहन करे छे, ते जीवता नथी, अर्थात् विषयसमुद्रमा डूबी जाय छे. अने तेज जीवे छे के, जे आ समुद्रना किनारापरज रहे छे; अर्थात् जे विषयभोगथी अलग रहे छे—निमग्न थता नथी, तेज सुखी रहे छे. १. हेमाभा नगरीमा बुद्धिमान कुमार पोताना साळाना प्रेमथी बहु वखत मुधी रह्या, कारण के पोताना प्यारामा मोहज थइ जाय छे अने प्रेमभाव बहुज मनोहर होय छे. २. त्या बहु वखत वीती गयो, परतु तेमने तेथी कई पण खेद थयो नहि, कारण के प्यारा मित्रोनी साथे रहेवाथी एक वर्ष पण एक क्षण समान वीती जाय छे ३.

हवे एक दिवस कोई स्त्री तेमनी पासे मश्करी करती आवीने बेठी. सत्य छे के स्त्रीओनी चेष्टा स्वभावथीज चित्तने मोहित करनार होय छे. ४. त्यारे कुमारे कोई मतलबथी आवेली ते स्त्रीने आदरपूर्वक पूछ्यु के-''तमे अहीं केम आव्यां ?'' ठीकज छे, के जे कोई पुरुष कई वार्तालाप करवानुं इच्छे छे,

तेने पहेलां प्रश्न करवानुज कुतूहळ थाय छे. ५. ते बोली, " हे स्वामी ! आयुधशाळामा में आपने एकज वखत अभेद रुपथी दीठा छे, अर्थात् जे वखते आप अहीं हता, ते वखते आपनाज सरखो कोई पुरुष आयुधशाळामा पण हतो. " ६. पवित्र जीवंधरने आ वात साभळीने बहु आश्चर्य लाग्यु, कारण के अयुक्त अथवा न थवानी वात जोवा सांभळवाथी आश्चर्य थाय छेज. ७ पछी तेमणे तर्क कर्यो—विचार कर्यो के, शु अहीं नन्दाढय आव्यो छे ? (तेणे खास तेनेज दीठो हशे, कारण के ते मारीज सीकलनो छे) सत्य छे, के संसारना विषयोमां मनना तरंग तत्काळज अने आपोआपज चाले छे. ८ नन्दाढयना स्नेहने लीधे जीवधर कुमारनु शरीर मनना व्यापारथी पहेलुज आयुधशाळामा पहोच्यु, अर्थात् त्या बहु जल्दी जइ पहोच्या, कारण के आस्था होवाथी कोई कोई वखत यत्न वगर पण वचन अने कायानी चेष्टा थइ जाय छे ९. अने त्या जइने ते नन्दाढयने जोइने बहुज प्रसन्न थया, कारण के प्रथम तो भाईनु मळवुज प्रीतिकर अथवा आनन्ददायक होय छे, पछी वियोगी भाइनु तो कहेवुज शु ? अर्थात् वियोगीनु मळवु वधारे हर्षनु कारण होय छे १० नानो भाई पण तेमने जोईने दु खसागरथी तरी गयो, कारण के लांबा वखत सुधी दु ख सहेवा पछी सुख मळवाथी दु खनुं विस्मरण थई जाय छे. ११ पछी मोटा भाईए नानाने एकान्तमा पूछ्यु के, तमे अही केम आव्या छो ? " कारण के

बुद्धिमान पोतानी ठगाई अने अपमानने प्रगट करता नथी.

१२. त्यारे तेणे खेद साथे दु खनु ध्यान करतां करता पोतानुं वृत्तान्त कह्युं,–कारण के पहेलां दु खनु ध्यान करवाथी मनुष्यने बहु दु ख थाय छे १३.—" हे पूज्यपाद ! अमारा पापना उदयथी ज्यारे आप चाल्या गया, त्यारे हु मुडदा जेवो थई गयो अने में मरवानो संकल्प करी दीधो. १४. पछी विद्याना बळथी बधु वृत्तान्त जाणनार मारी भोजाई (आपनी स्त्री) ना शा समाचार छे ? एवो विचार करताज मने योग्य समयमां ज्ञान थयु, अर्थात् में विचार्यु के भोजाईथी आपनो पत्तो मेळववो जोईए, कारण के ते अवलोकिनी विद्याथी आपनु वृत्तान्त जाणती हशे. १५ पछी ए रीते भविष्यमां आपना दर्शननु सुख मळवानी आशाथी हु मारी भोजाईने घेर गयो अने त्या विषाद करतो रह्यो. १६ ज्यारे में तेने ए कहेवानो प्रारंभ कर्यो के, ' हे स्वामिनि' (भोजाई), जेना पति नथी, एवी (विधवा) स्त्रीना सुखनी स्थिति केवी थाय छे ? ' त्यारे मारा हृदयनी वात जाणनार गंधर्वदत्ताअे कह्यु,—१७. ' हे वत्स ! तु खेद केम करे छे ? तारा भाई सर्व प्रकारथी उपद्रव रहित छे ते तो मोटा सुखमा छे. हुज बहु पापी छुं के जे दु खना समुद्रमां पडी छु. १८. एमनो तो प्रत्येक देश, प्रत्येक गाम अने प्रत्येक घरमां ज्या जाय छे त्यां आदरसत्कार थाय छे, कारण के शुभ भाग्यनो उदय थाय छे, त्यारे

विपत्ति पण संपत्ति अथवा सुखनुं कारण बने छे. १९. हे वत्स ! जो तमे तमारा मोटा भाईने मळवाने इच्छता हो, तो दु:खी केम थाओ छो ? जाओ, हुं पापणी स्त्री कंई जई शकुं ? " २०. एवुं कहीने भोजाइए मने मंत्र भणीने पलगपर सुवाड्यो अने आ पत्र आपीने अहीं मोकल्यो. २१. "

जीवंधरस्वामी पोताना भाइना करुणाजनक वाक्योथी बहु दु:खी थया. सत्य छे, के ज्यां सुधी संसार छे, त्यां सुधी प्राणीओना स्नेहनी फांसीथी छुटको थतो नथी. २२. पछी तेमणे गंधर्वदत्ताए आपेली चीठ्ठी वांची, तेमा गुणमालानी विरह पीडानु वृत्तान्त लखेलुं हतु. सत्य छे, के चतुर माणस पोताना मुखथी पोताना कामनी वात कहेता नथी बीजाना बहानाथी कही दे छे. २३. जो के ते पत्रमा जे सदेशो लखेलो हतो, ते गुणमालाना बहानाथी हतो, परतु ते वाचीने कुमारने गंधर्वदत्ता विद्याधरीना विषयमाज खेद थयो, कारण के द्वेष अने पक्षपात प्रत्येक पात्रनी अथवा वस्तुनी अपेक्षाथी भेदरुप होय छे. २४ परंतु पोतानी स्त्रीना शोकने साभळवाथी कुमारने जे शोक थयो, ते तेमणे प्रगट कर्यो नहि. कारण के विवेकी पुरुष सुख अने दुःखमां माध्यस्थभाव राखे छे. २५

पछी राजा दृढमित्रना घरवाळांए पण कुमारना नाना भाई नन्दाढय साथे केटलोक वार्तालाप कर्यो—अथवा आदर सत्कार कर्यो. सत्य छे, के भाईओ भाईमा पण प्रेम त्यारेज थाय छे के ज्यारे ठगाइ रहित खरी बंधुता होय छे. २६.

हवे एक दिवस घणाज गोवाळीआ गायोना रोकावाने लीधे राजाना आगणामां आवीने रडवा लाग्या, कारण के अत्यन्त पीडा थवाथी प्राणी पोतानी रक्षा करनार पासे रक्षानी आशा करे छे. २७. क्षमावान् जीवंधर तेमनु करुणाजनक रुदन सांभळीने रही शक्या नहि. कारण के जो कोईने नाश थवाथी अने दु खथी न बचाववामा आवे, तो लोकनी मर्यादा केम रहे? २८. ससराए रोक्या, पण ते तेमना रोक्या न रह्या अने गायोने छोडाववाने गया. कारण के ज्यारे शक्ति वगरनो पुरुष पण अपमान सहन करी शकतो नथी, तो शक्तिवाळा अथवा प्रबळ पुरुषोनुं ता कहेवुज शु ' ते केवी रीते सहन करी शके ' २९. परतु त्या जताज जे लोक गायोने चोरीने लइ गया हता, ते स्वामीना मित्र बनी गया, कारण के ज्यारे भाग्यनो उदय थाय छे, त्यारे लाकडां शोधनारने पण रत्न मळी जाय छे. ३० एक बीजाने जोवाथी स्वामी अने स्वामीना ते मित्रोमां एक सरखी प्रीति थई गई. निश्चयथी एक कोटीगत स्नेह अर्थात् एकगी प्रीति मूर्खोनीज चेष्टा छे. बुद्धिमानोनी नथी. अभिप्राय ए के, बुद्धिमानोमां बन्ने तरफथी एक सरखोज प्रेम होय छे ३१

शत्रुओने मित्र थएला जोईने पोताना जमाईना विषयमा राजाने बहुज आश्चर्य थयु सत्य छे, के पुण्यात्मा पुरुषोने सेना आदि समृद्ध सामग्रीथी रहित होवा छता पण तेथी रहित नही

गणवा जोईए, अर्थात् कंई नहि होवा छतां पण ते सर्व कंई करी शके छे. ३२. विद्वान जीवंधर कुमार पोताना नानाभाई अने मित्रो सहित अत्यन्त हर्षित थया, कारण के श्रेष्ठ पुरुषोने माटे समान अभिप्रायवाळाना सगमथी वधीने कोई बीजुं सुख नथी. ३३.

त्यार पछी मित्रोद्वारा पोतानुं कदी नहि थएलुं एवुं सन्मान थएलु जोईने स्वामीने संदेह थयो, अर्थात् तेमने संशय थयो के, ते आटलो आदरसत्कार केम करे छे. ? कारण के जे लोक विशेषताने ओळखनार छे, ते विशेष आकृति जोईने सन्देह करे छे ३४ तेथी तेमणे मित्रोने एकान्तमा तेनु कारण पूछ्यु सत्य छे, के जेनो अभिप्राय एकज होय छे, जे एक बीजाथी पोतानी वात छुपावता नथी, तेमनामा उत्पन्न थएली मित्रता स्थिर रहे छे ३५ त्यारे तेमाथी जे पद्मास्य नामनो प्रधान मित्र हतो ते बोल्यो,—कारण के सज्जनोनी ए शैली छे के, ते अनुक्रमे कोई कार्यनो आरभ करे छे. ३६.—"हे स्वामिन् ! आपना वियोगमा अमे लोक मानो के आगळ उदय थनार बहु भार भाग्यना हस्तावलम्बन मळवाथी दग्धप्राण थईने पण जीवता रह्या छीए, अर्थात् जे पुण्यकर्मना उदयथी आपनुं आ दर्शन थवानु हतु, तेना अवलम्बनथी अमे हजु सुधी जीवता रह्या छीए ३७ पछी देवीए (गंधर्वदत्ताए) अमने पोताना हाथनु अवलम्बन आपीने बचाव्या अने धीरज आपी. त्यारे अमे घोडा वेचनारनो वेष धारण करीने त्यांथी

आव्या. ३८. पछी रस्ते लांघीने मार्गनो थाक दूर करवा माटे अमे तपस्वीओना प्रसिद्ध दंडकारण्यमां विश्राम कर्यो. ३९. पछी चार तरफ नवी नवी मनोहर वस्तुओ जोता जोता अने ते वनमां विहार करता करता अमे कोई एक स्थानमा आपनी पुण्यस्वरुपा माताने दीठी ४०. अमने जोताज माताए प्रश्न कर्यो के, तमे क्याथी आव्या ' त्यारे अमे पण माताना प्रश्ननो यथाक्रम उत्तर आपवानो प्रारभ कर्यो,—४१" राजपुर नगरमां एक पडितोनो अने वैश्योनो शिरोमणि जीवक नामे पुरुष छे. अमे बधा तेना अनुजीवी अथवा दास छीए ४२. त्यां कोई काष्ठांगार नामे पुरुष ते निरपराधीने मारवाने माटे—" बस अमे एटलुंज कह्यु के, माता मूर्छा खाईने पडी गई. ४३. " हाय ! हाय ! हे माता ' जीवक मर्यो नथी. " ज्यारे में आ प्रमाणे कह्यु, त्यारे ते जेनो प्राण नीकळवाने रोकाई गयो हतो, सचेत थईने प्रलाप करवा लागी. ४४. जेम मेघमाळा वज्रपात अने पाणीनी वर्षा एक साथ करे छे, तेमज माताए प्रलाप करता करतां पोतानी वीतेली बधी कथा सभळावी अर्थात् तेमनो प्रलाप अमारा हृदयमां वज्रपात समान प्रतीत थयो अने आपनु वृत्तान्त जळधारा समान. ४५. तेमना मुख-रुपी आकाशथी वरसती आपनी उन्नतिरुपी रत्नोनी वर्षा पामीने अर्थात् माताना मुखथी आपनी उन्नतिना समाचार सांभळीने अमे ए समज्या के, मानो बधी पृथ्वीज अमने मळी गई छे. ४६. त्यार पछी आपना वैभवना महिमाना वर्णनथी माताने

धीरज आपीने अने तेमने पुछता ज्यारे तेमणे आज्ञा आपी, त्यारे अमे आ देशमा आव्या छीए. ४७ "

मातानेे जीवती पण मरेली समझीने अर्थात् मारी माता यद्यपि जीवती छे, तोपण देशान्तरमा होवाथी मरेला समानज छे एवुं जाणीने, तत्वोना जाणनार जीवधरने पण खेद थयो. कारण के प्राणीओनो मातृस्नेह (मातानो प्रेम) बीजा उपायथी नष्ट थतो नथी. ४८ पछी ते बहु भारे गौरवना धारण करनार जीवंधर कुमार माताने जोवा माटे आतुर थई गया तेनी पासे तरतज जवा लाग्या भला एवो कोण छे, के जे पोतानी पहेलां न दीठेली माताने जोवानुं ईच्छे नहि ? ४९ ते वखते माननीय स्वामी पोताना माताना स्नेहमा बीजा बधाने सर्वथा भूली गया. अने तेमना ते बळवान स्नेहे रागद्वेषादि विकार नष्ट करी दीधा ५०. पछी तेमणे पोतानी स्त्री अने बीजा पुरुषो पासे पण पोताने जवानी वात प्रगट करी, कारण के आवश्यक कामने माटे पण बंधुओने विना पुछ्ये विमुख थईने जवुं दुःखदायी थाय छे. ५१. पछी पोताना साथीओ तथा बधुओने समझावीने ते हठपूर्वक त्याथी चाल्या गया. कारण के समझाववा बुझाववाथी अथवा अनुनयथी महान पुरुषोनो महिमा वधे छे ५२.

त्यार पछी कार्यने पुरु करवानी बुद्धिना धारण करनार चतुर स्वामी दंडकवनमां गया अने त्यां पोतानी माताने जोईने प्रेमान्ध थइ गया, कारण के तत्त्वज्ञान अथवा विचारना जता रहेवाथी रागादिभाव प्रबळ थाय छे. ५३ पुत्रने जन्मताज

त्यागवाथी माताने जे दु ख थयु हतु. ते हवे तेने जोवाथी बधुं दु.ख जतु रह्यु. कारण के **पुत्रज माताओना प्राण छे.** ९४. पुत्रने जोईने ते दु.खीणी माताए ए इच्छयुं के, हवे आ राजा थाय कारण के, **एक वस्तु पामवाथी मनुष्य बीजी कोई वस्तु पामवानी इच्छा करे छे.** तेने कदी सतोष थतो नथी. ९५. पछी माताए कह्यु,— " हे पुत्र ! तने तारा पितानु राज्य हवे क्यारे मळशे ? कारण के लोकमा कोई पण कार्य एवु दीठामा आवतु नथी के, जे सामग्री विना बनी शके. " ९६ पुत्र बोल्यो—" हे माता ! व्यर्थ खेद करवाथी शु ? तु खेद केम करे छे ? राज्य मने अवश्य मळशे." चतुर पुरुषोए मूढ मनुष्यो सन्मुख पोताना बळनी प्रशसा करवी. ९७. पुत्रनु आ वचन साभळीने माताए जाण्यु के, पृथ्वी तो हवे मारा हाथमाज आवी गई. कारण के मूढ मनुष्य सांभळीनेज निश्चय करे छे, युक्तिद्वारा तर्क वितर्क करवानी शक्ति राखता नथी. ९८

राज्यनी वात कहीने माताए जीवधरने कठिणाइथी रक्षा थवा योग्य एक बहु भारे नाशना स्थाननी सन्मुख करी दीधा अर्थात् युद्धने माटे तैयार कर्या **सत्य छे, के बीजुं तो शुं, क्षत्रीओनी स्त्रीओ पण शत्रु थाय छे.** ९९ त्यार पछी स्वामीने जे कई करवु हतु ते विषे पोतानी माता साथे सल्लाह करी. कारण के जे लोक काम करवामां चतुर होय छे ते जे काम होय छे ते बीजा साथे विचार करीनेज करे छे.

६०. पछी बुद्धिमान स्वामीए पोतानी माताने तो पोताना मामाने त्यां मोकली दीधी. कारण के पोतानी मातानी दुर अवस्था कोई पण सजीव पुरुष सहन करी शकता नथी. ६१. अने पोते **दंडकारण्यना** तपस्वीओनी पासेथी संतोषथी पोताना नगरमा गया अने त्या पासेना एक बागमां उतर्या. ६२.

पछी मित्रोने त्या बेसाडीने पोते नगरमा चारे तरफ ज्यां त्या विहार करवा लाग्या, कारण के **बन्धनरहित इंद्रियरुपी हाथी कांइ एक जग्याए रहेतो नथी.** ६३ पछी बुद्धिमान कुमार राजपुरीने जोईने अत्यत खुशी थया, कारण के प्राणीओए ममतानी बुद्धिथी करेलो मोह बहु वधारे होय छे, अर्थात् जे वस्तुमां एवी बुद्धि होय छे के. आ मारी छे. तेमा प्राणी बहु **मोह** करे छे. ६४ ते वखते कोई क्रीडा करती स्त्रीए पोताना महेलना अग्रभागथी एक दडो नाखी दीधो सत्य छे, के **सम्प-त्ति अने आपत्तिनी प्राप्ति कोईने कोई बहानाथीज थाय छे.** ६५. ज्यारे अतरग बुद्धिवाळा स्वामीए उंचे मुख करीने जोयु, त्यारे ए दडो नाखनारी तरुण स्त्रीने जोईने ते मोहित थई गया. कारण के जीतेंद्रिय अथवा इद्रिओने वशमा राखनार पुरुषोना मन योग्य वस्तुपरज जाय छे ६६ पछी मोहने वश थईने ते तरतज तेना महेलना छजापर चढी गया. कारण के **पुण्यवानोनी ईच्छा पण निष्फळ थती नथी;** अर्थात् विचार करताज तेमना कार्यनी सिद्धि थई जाय छे ६७. तेमने ए रीते छजापर चढता जोईने कोई वेश्यपति (शेठ) आव्या अने बोल्या,–कारण के

प्राणी पोतानी लांबा वखतथी इच्छेली वस्तुने पामीने बहु प्रसन्न थाय छे. ६८—" हे भद्र ! हुं सागर-दत्त नामे वैश्य छुं. आ मारुं घर छे. अने आ मारी सहधर्मिणी कमळाथी उत्पन्न थएल विमळा नामनी कन्या छे. हवे ते तरुण थई गई छे. ६९. जे वखते आ कन्या उत्पन्न थई हती, ते वखते ज्योतिषीओए ए विचार कर्यो हतो, के जेना आववाथी तमारो नहि वेचानार रत्नोनो समूह वेचाई जशे, तेज पुरुष आ कन्यानो पति थशे. ७० ते आपना अहीं आव-वाथी ए वात एवीज थई, अर्थात् मारां बधां रत्न अने मणि वेचाई गयां, तेथी हे भाग्याधिक (बहु भाग्यवान्) ! आपज आ कन्याना लग्नने योग्य छो. तेथी अधिक शु निवेदन करुं ? ७१. तेना आ विषे बहु आग्रह करवाथी तेमणे पण स्वीकार करी लीधो. कारण के जीतेंद्रिय के वशी पुरुष के वस्तुने इच्छे छे, तेने पण लेवामां अधीरता प्रकट करता नथी. भाव ए छे के, जोके ते विमळाने चाहता हता, तोपण तेमणे तेनु ग्रहण करवु सागरदत्तना आग्रहथीज स्वीकार्युं, धीरज छोडी नहि. ७२.

त्यार पछी सत्यंधरना पुत्र सागरदत्ते आपेली कन्या साथे अग्निनी साक्षीथी लग्न कर्युं ७३.

आ प्रमाणे श्रीमान् वादीभसिंहसूरिए रचेल क्षत्रचूडामणि ग्रन्थमां " विमळालम्भ" नामे आठमु प्रकरण पूर्ण थयु.
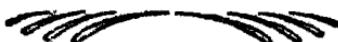
प्रकरण ९ मुं.
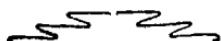
त्यार पछी अत्यत स्नेही स्वामीए आ नवी परणेली विमळा स्त्रीने बहुज प्यारी अनुभवी जेने अमे चाहीए छीए अने जो ते पण अमने चहाय, तो आ ससार पण साररुप जणाय छे, अर्थात् **आ संसारमां परस्पर खरो प्रेम होवाथी बहु सुख प्राप्त थाय छे.** १

पछी ते स्त्रीने प्रसन्न करीने तेने छोडीने आप पोताना मित्रोने आवी मळ्या कारण के **जीतेंद्रिय पुरुषोना मनने कोई कदी रोकी शकतुं नथी.** २ ते वखते स्वामीना शरीरपर वरना चिन्ह जोईने बधुओए तेमनो बहु आदर-सत्कार कर्यो. कारण के जीवोनी प्रीति आ लोक सबधी अतिशयोमाज बहु होय छे, अर्थात् कोईनी ससारिक चढती जोईनेज लोक ते पर प्रीति करे छे ३ ते मित्रोना साथमा जे **बुद्धिषेण नामे विदूषक** हतो तेणे हसीने कह्यु,—कारण के बीजाने प्रसन्न करवाने जे सेवकाई करवामा आवे छे, ते नाना प्रकारनी होय छे, अर्थात् जे रीते बने छे ते रीते विदूषक पोताना स्वामीने प्रसन्न करे छे. ४ दुर्भाग्यने लीधे जे कन्या-ओने कोई पूछतुं पण नथी, जनी लोक उपेक्षा करे छे ते तो सहेलाईथी मळी शके छे (तेथी तेनी साथे लग्न करीने आप

शुं प्रसन्न थाओ छो ? तेमा आपनी शी वडाइ ?) ज्यारे सुरमंजरीनी साथे लग्न करशो त्यारे आप भाग्यशाळी थशो, अर्थात् बीजानी माफक सुरमंजरीनुं मळवुं सहज नथी !" ५. विदूषकना तानथी उत्तेजित थइने जीवंधर कुमारे ते मानिनी (मानवाळी) सुरमजरीने परणवानी मनमां इच्छा करी (के जेना चूर्णने जीवधरे सुगधरहित खराब बताव्युं हतुं) कारण के कोई बहानुं मळी जवाथी दुराग्रह वधी जाय छे ६

हवे कुमारे आ विषे यक्षे बतावेल ते उपायभूत मंत्रनु स्मरण कर्युं, कारण के पंडितोनी इच्छा स्थिर अने अटल उपायथीज पूर्ण थाय छे. ७. अने उपाय जाणनार स्वामीने वृद्धनु रुप धारण करवानो उपाय सारो लाग्यो, कारण के जीवोने बाळक अने वृद्ध दया पात्रज छे; अर्थात् लोक बाळको अने वृद्धोथी जो कोई अपराध पण थई जाय छे, तो पण तेपर दया करे छे. ८. मत्रना महिमाथी कुमारने तेज वखते बुढापो आवी गयो शु निर्दोष अने प्रशसनीय विद्या कदी निष्फळ थई शके छे ? नहि ९.

त्यार पछी ए बुढ्ढो ते नगरीनी चारे तरफ विहार करवा लाग्यो, कारण के जे लोक नीतिना जाणनार छे, तेमनी वर्तणुकपर कोई शका करता नथी १०. बुढ्ढा ब्राह्मणनो वेश तेणे एवो धारण कर्यो हतो के, ते जोईने विवेकी पुरुष विषयथी विरक्त थई जाय, कारण के बुढ्ढापण विरक्तिने माटेज होय छे.

तेने जोईने वैराग्य थवोज जोईए ११. बुड्ढापण मूढ माणसोने ए बतावे छे के, माखीओनी पांखथी पण पातळा मांसने ढांकनार चामडीमां (शरीर उपरनी पातळी छालमां) सुंदरता मानवी एक प्रकारनी भ्रान्ति के भ्रम छे. १२ हे मूर्खो! खेद छे के, आ आयुष्य अने शरीर क्षण क्षणमा नाश पामनार छे. परंतु अमे ए वातने जाणता नथी फक्त समयनेज क्षयात्मक अर्थात् नाश पामनार जाणीए छीए १३. हाय! बीजु तो शुं, बुड्ढापो आववाथी लोक पोतानी माताने पण तरणा बराबर गणता नथी, अर्थात् तरणाथी पण तुच्छ समजे छे तथा बुड्ढापाथी तो मरवुंज सारुं छे. १४. पडितोमा आ रीते विचार अने मूर्खोमा हासी उत्पन्न करावतो ते बुड्ढो केटलीक वारे सुरमंजरीने घेर पहोंच्यो १५ ज्यारे त्या घरनी द्वारपालिनी स्त्रीओए तेने आववानु कारण पुछ्यु, त्यारे बुड्ढाए कह्यु के–"हु मारा कल्याणने माटे कुमारी तीर्थमा स्नान करवा आव्यो छु. (अहीं कुमारी एक तीर्थनुं नाम छे, अने कुमारी सुरमजरीनी तरफ बनावट छे). ठीकज छे के सज्जनोना वचन मिथ्या थता नथी; अर्थात् ते ते माटेज आव्या हता १६ द्वाररक्षक स्त्रीओ तेनी आ अजायब जेवी वात साभळीने हसी पडी. कारण के मूर्खोने सज्जनोना वाक्य कौतकज लागे छे १७ पछी तेमणे कृपा करीने तेने रोक्यो नहि, तेथी बुड्ढो सुरमजरीना घरमा चाल्यो गयो, जे लोकोने कोई प्रकारनी ग्लानि रही नथी, ते बळेला बीजनी माफक निर्लज क्यां जीवे छे? ते तो मरेलाज छे. भाव ए छे

के आ रीते आदर विना कोईनी कृपाना भरोशाथी जवुं, ए तो लज्जावानने माटे मरवुंज छे. १८, द्वाररक्षक सुंदरीओए डरता डरतां आ वात सुरमंजरीने कही दीधी. कारण के स्वामीने आधीन रहेनार सेवकोने भय अने स्नेहनुंज बळ रहे छे. १९. पुरुषोथी द्वेष करनार सुरमजरीए पण ते अतिशय वृद्ध पुरुषने दीठो अने बेसाडयो. सत्य छे के प्राणीओनां बधां काम कुदरतने अनुसारज थाय छे. २०. पछी ते बुढ्ढाने भूख्यो जोईने ते श्रेष्ठ कुमारीए भोजन कराव्यु, कारण के अतःस्वरुपनी यथार्थतामा वेष नियन्ता होतो नथी, अर्थात् बहारनी आकृतिथी अंदरनो खरो भेद खुलतो नथी. २१. भोजन कर्या पछी ते बुद्धिमान जाणे बुढ्ढापाथी थाकी गयेला होय तेम एक शय्यापर सूई गया. कारण के जे लोक विचार करीने काम करे छे, ते योग्य समयनी प्रतीक्षा करता रहे छे. २२.

त्यार पछी गायन विद्याना जाणनार ते बुढ्ढाए संसारने मोहित करनार गायन गायु, कारण के पांचे इंद्रिओथी उत्पन्न थएल मोह एक बीजा साथे अधिक अधिक प्रीतिजनक होय छे. २३. सुरमंजरीए गावानी कुशळता जोईने बुढ्ढाने बहु शक्तिवान मान्या. कारण के जे विशेषज्ञ होय छे, ते कोईने कोई प्रकारथी विद्वानो अने अविद्वानोने ओळखीज ले छे. २४. अने तेथी ते आ वृद्ध ब्राह्मण पासे पोताना कामनी पण आदरपूर्वक परीक्षा कराववाने तत्पर थई.

कारण के जीवोने स्वभावथीज पोताना काममा तत्परता रहे छे. २५. तेणे पूछ्युं के,—गायन विद्या समान तमारी बीजा कोइ विषयमां शक्ति छे ? अर्थात् बीजी पण कोई विद्यामां तमे निपुण छो के नहि ? सत्य छे के जो ज्ञानी पुरुषोने कई प्रार्थना करवामा आवे अने ते निष्फळ जाय, तो ते जीवता नथी—तेमने मरवुज थई जाय छे. अभिप्राय ए छे के, जो सुरमंजरी एवो प्रश्न करे के, तमो अमुक विद्या जाणो छो, अने कदाच ते न जाणता होय, तो ते उत्तर आपवामा तेने मरवु थई जाय छे के, 'हु जाणतो नथी.' तेथी तेणे एवी युक्तिथी पुछ्यु के, जेथी ते कोईने कोई विद्यामा पोतानी गति बतावी दे. २६. त्यारे ते बहु चतुर बुद्धाए उत्तर आप्यो के, " हा ! बधा विषयोमा मारी शक्ति छे, अने ते खूब छे " कारण के कहेवानी चतुराईथी कहेला विषयमां बहु दृढता आवी जाय छे. २७. आ साभळीने सुरमजरीए पोते ईच्छेला वरने पामवानो उपाय पूछ्यो, कारण के जो कोई प्रीतिमा अध थई जाय छे, तो तेना मनमा ए वातनो विचार नथी थतो के, आ याचनाथी दीनता प्रगट थशे. २८. बुद्धाए बताव्यु के—" सर्व मनोरथोने सफळ करनार कामदेव छे " कारण के इष्ट मनोरथने अनुकूळ वचनज प्राणीओना मनने प्रसन्न करे छे. २९. आ साभळीने सुरमजरीए पोताना ईच्छित पदार्थने पोताना हाथमा आव्योज समझी जे माणस मनोरथोथीज सतुष्ट थई

जाय छे, तेने जो मूळ वस्तु मळी जाय, तो पछी कहेवुंज शु छे ' ३०.

त्यार पछी ते बुड्ढो ब्राह्मण सुरमंजरीने पोते धारेला कामदेवना मंदिरमा लई गयो. सत्य छे, के जे लोक सारी रीते विचार करीने काम करे छे, तेना काममां दोष केवी रीते आवी शके ? तेनुं काम तो सफळज थाय छे. ३१ त्यां ते कुमारीए जीवंधर स्वामीने प्राप्त करवानी इच्छाथी कामदेवने बहुज प्रार्थना करी. सत्य छे के जे राग अने द्वेष जन्मोजन्मथी बाधेला होय छे ते नाश पामता नथी ३२. ते वखते "तें पोताना वरने प्राप्त करी लीधो" ए रीते बुद्धिषेण विदूषके कहेला वचनने साभळीने पतिव्रता सुरमजरी समझी के, आ वचन साक्षात् कामदेवे कह्यु छे कारण के भोळापणज स्त्रीओनुं आभूषण छे. अभिप्राय ए छे के, ते कामदेवना मंदिरमा जीवंधरनो मित्र बुद्धिषेण विदूषक पहेलेथीज सताई बेठो हतो. ते ज्यारे सुरमजरीए प्रार्थाना करी के, मने जीवंधर वर मळे, त्यारे ते मूर्तिनी पासेथी कही दीधु के, 'तने तारो वर मळ्यो.' अने तेने ते भोळी कुमारी समझी के, कामदेवे मारी प्रार्थनाथी प्रसन्न थईने वर आप्यो छे. ३३ ते वखते जीवधर कुमारे पोतानु असलरुप प्रगट कर्युं, जे जोईने कुमारी लज्जित थई गई. अने एम थवुज जोईए, कारण के जेने लज्जा नथी, ते लोक दया विनाना पुरुषो समान जीवता पण मरेलाज छे. ३४. पछी त्या कुमारने तेणे पतिभावथी बहुज संतुष्ट कर्या. सत्य छे

के स्त्री अने पुरुषना एक कंठ अथवा एकरुप थवाथी अने तेमा अति प्रेम होवाथी आ संसार पण साररुप थई जाय छे ३५.

त्यार पछी जीवंधर कुमारे कुबेरदत्तद्वारा ग्रहण करेली **सुमतिनी** पुत्री **सुरमंजरीनी** साथे विधिपूर्वक लग्न कर्युं. ३६.

आ प्रमाणे श्रीमान् वादीभसिंहसूरिए रचेल **क्षत्रचूडामणि** ग्रन्थमा " **सुरमंजरीलम्भ**" नामे नवमु प्रकरण पूर्ण थयुं.

प्रकरण १० मुं.

त्यार पछी ते बहु प्यार करनार कुमारे ते परणेली सुरमंजरीनु बहु सन्मान कर्युं. कारण के जे वस्तु बहु यत्नथी मळे छे, तेमां प्रेम पण विशेष होय छे १.

पछी तेने कोईने कोई रीते प्रसन्न करीने समझावीने कुमार पोताना मित्रो पासे आव्या. जे कुलिन स्त्रीओ होय छे, ते पोताना स्वामीनी इच्छा विरुद्ध आचरण करती नथी. २.

त्यार पछी सुरमजरी सहजज मळवाथी जे मित्र बहुज आश्चर्य करता हता, तेमनी साथे कुमार पोताना मातपितानी पासे गया. मित्रोने आश्चर्य थवुज जोइए. कारण के जे वस्तु पोताने दुर्लभ होय छे-कठीणाइथी पण मळती नथी, ते जो बीजाने सहजज मळी जाय छे, तो आश्चर्यकारक लागे छेज. ३ तेने जोईने माता पिताने पण अतिशय स्नेह थयो. काळना मोढामाथी नीकळेल पुत्र कोने आनन्ददायक के स्नेहनु कारण होतु नथी ? सर्वनेज होय छे. ४. पछी तेमणे पोतानी बन्ने प्यारी स्त्रीओने वारवार प्रसन्न करी. कारण के ससारनी एज नीति छे ५.

त्यार पछी जीवंधर कुमार गंधोत्कट साथे मंत्रणा करीने-विचार करीने त्यांथी चाल्या गया, कारण के पडित

पुरुष जे कार्य करवा ईच्छे छे, ते ज्या सुधी पूर्ण थतु नथी, त्या सुधी विश्राम लेता नथी. ६. अने विदेह देशनी धरणी-तिलका नामनी राजधानी के जे धरणीमा (पृथ्वीमा) तिलक स्वरुप उत्तम नगरी छे, त्या पहोंच्या ७ त्या तेमना मामा विदेहदेशना राजाए तेमनो बहु आदरसत्कार कर्यो. एवो कोण छे, जे पोतानी बहेनना महा भाग्यवान् पुत्रनो आदरसत्कार करतो नथी ? सर्व करे छे. ८. गोविन्दराज पण जीवधर कुमारना गयेला राज्यनी स्थापना करवाने तैयार थया. ज्यारे मत्त हाथी पोतेज दन्तप्रहार करवा इच्छे छे, त्यारे बीजाना करवाथी तो कहेवुज शु अर्थात् गोविन्दराज तैयार हताज. पछी कुमारना कहेवाथी तो तैयार थवानुज छ. ९

पछी शत्रुने केवी रीते जीतवा जोईए, अथवा शत्रुना विषयमा शु करवु जोईए, ए प्रकारनी वातोना जाणनार राजाए मत्रशाळामा आवीने मत्रीओ साथे सलाह करी. कारण के कोई वातनो निश्चय सलाह विना करवो जोईए नहि अने ज्यारे कोई वात करवानो निश्चय कर्यो होय, त्यारे पछी सलाह करवी जोईए नहि. १०. ते वखते मत्रीओने राजाए काष्ठांगारनो आ सदेशो कह्यो,–कारण के शत्रुनु हृदय जाणीनेज प्रतीकार प्रारभ करवो जोईए ११.– ' राजा सत्यंधरने एक मदोन्मत्त हाथीए मारी नाख्या हता, परतु पापना उदयथी तेने मारवानो अपजश मने लाग्यो छे. परतु आ अपजशने आप जेवा यथार्थ वातने जाणनार जूठीज समझो छो. १२. (हवे आप कृपा

करीने अहीं आवो.) आपना आववाथी हुं निःशल्य थई जईश; अर्थात् मारा चित्तमा जे आ अपजशनो कांटो भराई रह्यो छे ते नीकळी जशे, कारण के सज्जनोनी साथे जो संगम थई जाय, तो दुष्ट माणसोमां पण सज्जनता आवी जाय छे. १३." आ संदेशाथी ए निश्चय थयो के, शत्रु बहु जल्दी नुकशान करवा ईच्छे छे. सत्य छे, के दुर्जनोनुं नम्र थवु, पण धनुष्यना नमवानी माफक भयानक होय छे. १४. शत्रु अमने नुकशान करवा ईच्छे छे. ए जोईने पोतानुं काम करवा सिवाय जेने कंई पण सुझतु नहोतु, एवा गोविन्दराज सतप्त थइ गया. सत्य छे के—दुर्जनना आगळ सज्जनता बतावची ए कीचडमां दूध नांखवा बरावर छे. भाव ए छे के, काष्ठागारपर कोप करवोज योग्य हतो. तेनी साथे शान्तिनु वर्तन करवुं कीचडमां दूध नाखवा समान छे. १५ "तेणे अमने कोई मतलबथी बोलाव्या छे, तेथी अमे पण तेना आ बोलाववाना बहानाथी त्यां जइए छीए. अर्थात् ज्यारे तेणे अमने छळ करीने बोलाव्या छे, त्यारे अमे पण तेना आ छळथी लाभ लेवाने—तेने उलटु नुकशान आपवा त्या जईए छीए" ए वात सारी रीते गोविन्दराजे नक्की करी. सत्य छे के—जे लोक कोईने जीतवा इच्छे छे, ते बगला माफक आचरण करे छे; अर्थात् बगला सरखा बहारथी साधु बने छे, परतु अंदरथी घात करवाना प्रयत्नमां रहे छे. १६. पछी तेणे बधा लोकमां ए प्रसिद्ध कराव्युं के, मारी काष्ठांगार

साथे मित्रता थई गई छे अने ढंढेरो पण पीटाव्यो, कारण के समाचारनी सूचना गमनथी पण पहेलांज पहोंची जाय छे, अर्थात् पोताना जवा पहेलांज ए समाचार त्यां पहोंची जशे, आ विचारथी तेणे ढंढेरो पीटाव्यो. १७ त्यार पछी आ चतुर राजाए एक बहु भारे चतुरंगिनी सेना तैयार करी, कारणके पोताना शत्रुना कामोनी प्रबळतानो विचार करीनेज उपाय नक्की करवामा आवे छे. १८. त्यार पछी गोविन्दराज मुनि, आर्जीका, वगेरे पात्रोने दान आपीने सारा मुहूर्तमां पोताना नगरथी नीकळ्या, कारण के दानपूजा करनारनां तथा तप अने शीयळनुं पाळण करनारनां एवां कयां काम छे के, जे सिद्ध थतां नथी ? अर्थात् सर्व कार्य सिद्ध थाय छे १९. पछी ए बहु भारे सेनाना स्वामी राजमार्गोमा केटलाक पडाव नाखीने राजपुरी पहोंच्या अने त्या राजपुरीनी पासे कोई स्थानमा रह्या. २०.

आ वखते काष्ठांगारे गोविन्दराजने वारवार बहुज भेटो मोकली, परंतु व्यर्थ. हाय ! ए कपटी लोक चतुर माणसोनी माफक मायाथी आचरण करे छे. २१ अहींथी स्वामीना मामाए पण बदलानी भेट मोकली, कारण के ज्या सुधी मनोरथ पुरा न थाय, त्या सुधी शत्रुओनी आरधना करवीज जोईए २२.

त्यार पछी गोविन्दराजे एक चंद्रकयंत्र तैयार कराव्यु, जेमां त्रण भुंड बनावेला हतां, अमे ढंढेरो फेरव्यो के, जे कोई पुरुष आ यंत्रना त्रणे भुंडने एकी वखते छेदशे, तेने हुं

मारी कन्या परणावीश. ठीकज छे के, जे लोक उत्तम उपायोमां तत्पर रहे छे, ते कार्यने नियमथी सिद्ध करे छे.२३. ढढेरो सांभळीने त्रणे वर्णना कुळमा उत्पन्न थएल (ब्राह्मण, क्षत्रि, वैश्य) धनुर्धारी एकठा थई गया; कारण के ज्यां सुधी मोह रहे छे, त्या सुधी जीवोनो प्रयत्न एवी वस्तु पामवा माटेज होय छे, जे तेमने योग्य होतो नथी. २४. परंतु ते बधाज धनुर्धारी ते यंत्रना भूंडने छेदवामां समर्थ थया नहि, कारण के पारगामिनी अर्थात् सम्पूर्ण विद्या क्यां राखी छे ? २५. आखर विज्याना पुत्रे अर्थात् जीवंधर कुमारे चंद्रकयंत्रपर चढीने अलात चक्रथी त्रणे भूंडने रमतमां तरतज वेधी नांख्यां. सत्य छे के, शुं सूर्य अंधकारनो नाश करनार नथी ? २६.

आ वखते अवसर जोईने गोविन्दराजे त्या जेटला राजा एकठा थया हता, ते बधाने कही दीधुं के, ते महाराजा सत्यंधरना पुत्र छे. ठीकज छे, के कृती पुरुषोनी वाणी योग्य स्थानमाज होय छे; अर्थात् विद्वान पुरुष अवसर जोईनेज बोले छे. २७. ए सांभळीने ते राजाओए पण एवु कह्युं के,–' हें ! अमने पण याद आवी गयु. ' गोविन्दराजनी वात मानी अने राजपुत्रनुं अभिनन्दन कर्युं, कारण के जे पुरुष आलीढादि पाच स्थानमां चतुर होय छे, तेनुं नरेन्द्रत्व अथवा राजापणु सूचित थाय छे, अर्थात् कुमारनी धनुर्विद्यानी उपर कहेली चतुराई जोईने तेमणे जाणी लीधुं के, निश्चयेज आ राजानो पुत्र छे. २८.

काष्ठांगार जीवधर कुमारने जोईने क्षीणचित्त थई गयो, तेनो उत्साह भंग थई गयो अने राजाओनी उपली वात सांभळीने तो ते मूर्ख मरेला जेवो थईने आ रीते विचार करवा लाग्यो;—२९. "जो ते सत्यधरनो पुत्र होय, तो हाय ! हुं हमणांज मार्यो गयो, कारण के पृथ्वी वीरभोक्ता छे. जे वीर होय छे तेज पृथ्वीने भोगवे छे. अने पछी जेमा सर्व प्रकारनी योग्यता छे तेनुं तो कहेवुंज शु ? ३०. ते वखते मथने मारी आज्ञाथी आ कुत्सित वणीकने केवो मार्यो हतो, पण जो ते बची गयो. सत्य छे के, आ लोकमां पोताना हितने माटे पोताना सिवाय बीजुं कोई साचुं हितकारी नथी. ३१. अने तेना दुराशय मामाने में व्यर्थ केम बोलाव्यो ? सत्य छे, के मूर्ख लोक पोताना नाशने माटे पोतेज काम उठावे छे. ३२. गोविन्दराज साथे मळीने ए दुर्दान्त अर्थात् कठीणाइथी दमन करनार कुमार शुं करशे ? वायुनी प्रेरणाथी वायुनो मित्र अग्नि पृथ्वीनी कई वस्तुने बाळतो नथी ? भाव ए छे के, ए बन्न मळीने मारो बधो नाश करी नाखशे." ३३. ए रीते ज्यारे शत्रु (काष्ठागार) चिंताथी व्याकुळ थई रह्यो हतो, त्यारे स्वामीना मित्रोए तेनु अपमान करता करता तेथी पण विशेष चितातुर कर्यो. सत्य छे के, जेना पुण्य कर्म क्षीण थई जाय छे, तेनी पाछळ विपत्तिओ लागीज रहे छे. ३४. तेथी आ अपमानथी क्षुब्ध थईने मत्सर करनार काष्ठागारे जीवंधर साथे युद्ध करवा धार्युं, कारण के जे पुरुष मत्सरी होय छे--बीजानी भलाइथी

बळे छे, ते यथार्थ वातने विचारी शकता नथी. ३५. आखरे युद्ध थवा लाग्यु, तेमां केटलाक राजा तो जीवंधरनी तरफ थई गया अने केटलाक वेरीना पक्षमा गया, कारण के संसारमां सुजन अने दुर्जन बन्ने प्रकारना मनुष्य होय छे, अने ते आज थई गया नथी, हम्मेशाथीज छे. ३६. त्यार पछी ते युद्धमां कौरव अर्थात् जीवंधर कुमारे काष्ठांगारने परलोकमां पहोंचाडयो. हाय ! आ संसारमां दुर्बळ पुरुष बळवानथी मार्यो जाय छे. ३७. शत्रुना मरवाथी व्यर्थ जीवहत्याना डरथी कुमारे लडाई बंध करी दीधी, कारणके जे क्षत्री होय छे ते व्रती होय छे; अर्थात् क्षत्रीओने संकल्पी हिंसानो सहजज त्याग होय छे, अने विरोधीना मरी जवा पछी नरहत्या थवाथी जे हिंसा थाय छे, ते सकल्पी होय छे ३८

ते वखते गोविन्दराजे एवु कह्यु के,—" मारी बहेन विजयाए आवा वीर पुत्रने जन्म आप्यो अने मारी पुत्री लक्ष्मणा आवा वीर पुरुषनी स्त्री थई " पछी कुमारनु आनंदथी अभिनदन कर्यु. ३९. पछी आसपासना चारे तरफथी आवेला सामन्त राजा तेमनी सेवा करवा लाग्या, कारण के नाटकना सभ्यो अर्थात् दर्शकोने नाटकमा कोईनी सपत्तिनो नाश थवो अने उदय थवो बराबर छे, अर्थात् आधीनस्थ सामन्तगण जे राजा थाय छे, तेनी सेवा करवा मडे छे. एकनो उदय अने बीजानो अस्त तेमने समान छे. ४०. पछी जीवंधर स्वामी राजपुरीना जिनमंदिरमां राज्याभिषेकर्थी अभिषिक्त थवाने गया, कारण के दिव्य स्वरुप

जिन भगवानना समीप होवाथी सिद्धिओ अवश्य थाय छे. ४१. एटलामा सुदर्शन यक्ष पण प्रसन्नताथी त्या आव्या, कारण के सज्जन पुरुष फणस कठहर वृक्षोनी माफक फळज आपे छे ४२. त्यारे ते यक्षे गोविन्दराज साथे बहु गौरवथी कौरव महाराज अर्थात् जीवधर कुमारनो विधिपूर्वक राज्याभिषेक कर्यो. ४३. पछी यक्षेन्द्र राजेन्द्रने पुछीने पोताने स्थाने चाल्यो गयो, कारण के सूर्य कमळने खीलावे छे, परतु तेथी आसक्तिनी अपेक्षा राखतो नथी, अर्थात् खीलाव्या पछी तेथी कई सबध राखतो नथी पण अस्ताचल तरफ चाल्यो जाय छे. ४४. पछी बधा लोकने प्रसन्न करनार ते राजसिह अर्थात् महाराजा जीवंधर जिनमदिरथी पोताना महेलमा आव्या अने त्या तेमणे पोताना वंश परपरागत सिहासनने अलकृत कर्यु ४५.

बधा लोक बहु नवाइ पामीने तेमना वृतान्तने विचारवा लाग्या, कारण के जे संपत्ति के विपत्ति समजमां आवी शकती नथी—अचानक आवी जाय छे, ते विशेष करीने आश्चर्य-कारक होय छे ४६ " अहो ! कर्मोनी विचित्रताने जुओ, के क्यां ते पूज्य राजपुत्रपणु, क्या ते स्मशान भूमिमां जन्म लेवो अने क्या आ फरीथी राज्यनु मळवु? ४७. पुण्य अने पाप सिवाय बीजी कोई पण वस्तु सुख दुःखनुं कारण नथी, कारण के ज्यारे पापनो उदय थाय छे, त्यारे करोळीआने तेनी जाळ पण कुवामा पडवाथी बचावी शकती नथी. ४८. जेने मारवा चाहता हता, तेणे पोताने

मारनारनेज मारीने राज्य लई लीधु ! कारण के जे कई थनार होय छे, ते अवश्य थई रहे छे. भावी कोईथी टळी शकतुं नथी. ४९. पोताने जीववानी ईच्छाना विस्तारथी जेणे राजाने ठग्यो हतो–मार्यो हतो, ते काष्ठांगार पण मार्यो गयो ! सत्य छे के, बीजानो नाश करनार पोतानोज नाश करनार थाय छे. ५०. जुओ ! ते यक्ष तो फक्त क्षणवारना उपकारथी प्राणोनी रक्षा करनार थई गयो, अर्थात् तेणे जीवंधरनो जीव बचावी दीधो अने काष्ठांगार जेने सत्यंधरे बधुं राज्य सोंपी दीधुं हतुं, ते कृतघ्न थई गयो – तेणे पोताना उपकारकनोज जीव लई लीधो ! तेथी कहे छे के, स्वभाव बदलातो नथी ५१. अपकार अने उपकार करवाथी सज्जन अने दुर्जनमां कोई प्रकारनुं अंतर पडतुं नथी; अर्थात् सज्जनो साथे अपकार करवामां आवे, तोपण ते सज्जम रहे छे अने दुर्जनो साथे उपकार करवामा आवे, तोपण ते दुर्जन रहे छे जेम सोनुं बाळवाथी पण चळके छे, परतु कोयला कोई पण प्रकारथी (धोवाथी पण) शुद्ध थता नथी ५२. खाली अने भरी दशामां अर्थात् धनवान अने निर्धननी अवस्थामा पण सज्जन अने दुर्जनमा भेद पडतो नथी जुओ, सुकाई गएली नदी पण खोदवाथी मीठु पाणी नीकळे छे, परतु भरेला समुद्रथी मीठु पाणी मळतु नथी. " ५३.

जीवंधरना सुराज्यमां ते देशमां ए प्यारी कहेवत प्रसिद्ध थई गई के, "सुंदर राजावाळी उत्तम पृथ्वी सुखनो अनुभव

केम करे नहि ? " अर्थात् जे देशमां उत्तम राजा होय छे, त्यांनी प्रजा अवश्य सुखीज थाय छे, ५४. महाराजे काष्ठागारना कुटुंबने पोताना स्थानमा सुखथी रहेवानी आज्ञा आपी दीधी, तेमने कोई प्रकारनु कष्ट आप्युं नहि, कारण के सज्जनोनो क्रोध अयोग्योपर थतो नथी. ५५. पछी पोताना भाई नन्दाढ्यने युवराजना पदपर, पिता गंधोत्कटने वृद्ध क्षत्रीओना योग्य पदपर, अने बन्ने माताओने (विज्या अने सुनन्दाने) लोकपूज्य पदपर स्थापन करी ५६. पृथ्वीने बार वर्षना करथी (टेक्षथी) रहित करी दीधी अर्थात् जमीननुं महेसूल बार वर्ष माटे बीलकुल माफ करी दीधु. कारण के जे पाणीने भेसो डोळी नांखे छे, ते तरतज ठरीने निर्मळ थतु नथी. भाव ए छे के, काष्ठागारे अनुचित असह्य कर वसूल करीने प्रजाने एटली निर्धन बनावी हती के, आ रीते बार वर्ष माटे कर छोडी दीधा विना प्रजानी आर्थिक अवस्था तत्काळज सारी थवानी नहोती. ५७. त्यार पछी जीवधर महाराजे पद्मास्य आदि मित्रोने पण यथायोग्य पदवी आपी. कारण के लोक साधारण परिज्ञानथी रजायमान थता नथी, अर्थात् कोण कया पदने योग्य छे, तेनु पुरु ज्ञान थवाथी अने तेने अनुसार लोकोने योग्य पद आपवाथी ते प्रसन्न रहे छे. ५८.

ते वखते महाराजनी आज्ञाथी तेमनी पद्मा आदि बधी राणीओ आवी गई अने ते स्वामीने जोईने क्षणवारमा सपूर्ण मानसिक व्यथाओथी रहित थई गई. तेमना मननी बधी

पीडाओ जती रही. ५९. कारण के विरुद्ध पदार्थ जोवाथी चिरस्थायी पदार्थ पण नाश पामे छे; अर्थात् सुख मळवाथी पहेलांनु बधुं दु.ख जतुं रहे छे. शुं दीवो पासे आववाथी पण गुफानुं मुख अंधकारयुक्त रही शके छे ? नहि. ६०.

पछी महाराजा जीवधंरे गोविन्दराजे आपेळी नबुतिनी पुत्री लक्ष्मणा साथे लग्न कर्युं. विवाहमां खंडीआ राजाओए बहु भारे उत्सव मान्यो. ६१.

आ प्रमाणे श्रीमान् वादीभसिंहसूरिए रचेल क्षत्रचूडामणि ग्रन्थमां " लक्ष्मणालम्भ" नामे दशमुं प्रकरण पूर्ण थयुं.

प्रकरण ११ मुं.
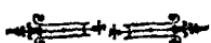
र पछी बुद्धिमान महाराज राज्यलक्ष्मी अने लक्ष्मणाने प्राप्त करीने बहुज प्रसन्न थया, कारण के लांबा वखतथी इच्छेली वस्तु मळवाथी बहु भारे तृप्ति अथवा प्रसन्नता थाय छे. १.

राज्य मळवाथी राजाना बधा गुण शोभायमान थवा लाग्या. सत्य छे के हारमां जो काच परोववामां आवे, तो ते खराब जणाय छे. परतु जो मणि परोववामां आवे, तो बहुज शोभायमान थाय छे-तेनो गुण वधी जाय छे. तात्पर्य ए के, जीवंधर जो के एवाज गुणवान हता, परतु राज्य प्राप्त करवाथी तेथी पण विशेष गुणोथी शोभायमान थवा लाग्या २. संपत्ति अने विपत्तिमां बुद्धिमानोनी एकज वृत्ति रहे छे. सत्य छे के, नदीना पाणीना आववाथी समुद्रमां कोई प्रकारनो विकार उत्पन्न थतो नथी,—ते ज्यां के त्यां रहे छे अभिप्राय ए छे के, राज्य वैभव मळवाथी पण जीवंधर कुमारनी वृत्तिमां कंई विकार थयो नहि. ३.

हवे जीवंधर महाराजनां बधा सुख दुःख प्रजाने आधीन थई गया; अर्थात् प्रजानां सुख दु.खथी ते पोतां। सुखी दुःखी समजवा लाग्या, कारण के जन्म आप्या सिवाय बीजा बधा

विषयोमां राजाज प्रजानां माबाप छे. ४. जे रीते दान आपवुं सुखदायक होय छे, तेज रीते ते राजाने कर (महेसूल) आपवो पण प्रजाने प्रीतिकर अर्थात् आनन्ददायक थयो. सत्य छे के, शुं धान्यना खेतरमा बी वाववाथी शुद्र संतुष्ठ थता नथी ? अवश्य थाय छे. भाव ए छे के, ते योग्य राजाने कर आपवामां प्रजाने आनन्दज थतो हतो, जेवोके, शुद्रने योग्य खेतरमां बी वाववाथी थाय छे तेम. ५. जो के राजाने मित्र, शत्रु अने उदासीन (मैत्र शत्रु प्रत्ये समभाव राखनार) राजाओनुं साक्षात् ज्ञान होतुं नथी (तेमने ते विषयनुं ज्ञान गुप्त अनुचरो द्वाराज थाय छे) तथापि गुप्त अनुचरो द्वारा बधो वृत्तान्त जाणीने ते तेनो उपाय तेज वखते करी दे छे. ६. ते नियमपूर्वक काम करनार थया अने रात दिवसना विभागोमा नक्की करेलां कामोने योग्य समये करवा लाग्या, कारण के जे काम वखतसर करवामां आवतुं नथी ते वखत थई गया पछी करवामा आवे छे, तो ते सिद्ध थतुं नथी. ७. जेम तपमा योग्य क्षेमनी अर्थात् मन वचन कायारुप योगोने रोकवानी आवश्यकता छे, तेज रीते राज्यमा योगक्षेमनी अर्थात् नहि पामेलाने पामवानी अने पामेलानी रक्षा करवानी आवश्यकता छे. तेथी राज्य अने तप बन्ने सरखांज छे. ८. ज्यारे ते महाराज सावधान थईने बधी पृथ्वीनी एक नगरीना समान मोटी सुविधाथी रक्षा करवा लाग्या, ते वखते त्यांनी पृथ्वी निष्कंटक शासन थवाथी पोताना रत्नागर्भा नामनुं सार्थक करवा लागी ९.

ए रीते ज्यारे ते महाप्रतापी राजाओना राजा जीवंधर विरजमान थया हता—राज्य करता हता, त्यारे तेमनी माता विज्या संसारथी विरक्त थई गयां, अर्थात् तेमने वैराग्य उत्पन्न थई गयो. १०. (ते विचारवा लाग्या के,)——" में आ श्रेष्ठ पुत्रने तेना पितानी पदवीए जोई लीधो, अर्थात् तेने राजाना पदपर प्रतिष्ठित जोई लीधो. अने पहेला जेमणे उपकार कर्यो हतो, ते पण यथायोग्य कृतकृत्य करवामा आव्या अर्थात ते बधानो प्रत्युपकार करवामां आव्यो ११ अने पुण्य पापनुं फळ शास्त्र सिवाय में पोते पोतानामांज जोई लीधु. पछी कर्मोनुं परिपक्व-पणुं अन्यत्र जोवानु शु प्रयोजन छे ? १२. तेथी हवे हुं पुत्रनो मोह छोडी दईने जेवुं जोईए तेवुं तप करीश, कारण के सर्व कंई जाणीने पण संसाररुपी कुंडमां पडी रहेवुं नीच मनुष्यनुं काम छे. १३.

विजयाना आ रीते विरक्त थई जवाथी सुनन्दाने पण वैराग्य थई गयो, कारण के पुण्य अने पापनो उदय थवामां कोईने कोई बाह्य कारण अवश्य होय छे; अर्थात् विज्याना वैराग्यनुं कारण मळवाथी तेने पण वैराग्य थई गयो. १४. अने पछी ते बन्ने शोकयुक्त राजा पासेथी कोईने कोई रीते सम्मति लईने त्यांथी चाली गई अने बन्नेए विधिपूर्वक जीनदीक्षा लई लीधी. १५. ते वखते बधी आर्जीकाओमां श्रेष्ठ जे पद्मा नामनी आर्जीका हती, ते आ बन्ने राजमाताओने आर्जीकानुं पद

आपीने जीवंधर महाराजने प्रतिबोधित करवा लागी; १६—बुद्धिमानोने ए उचित नथी के, कोईने संन्यासिनी थतां रोके. आकाशथी जो रत्नोनी वर्षा थती होय, तो ते रोकाती नथी. १७. जे बुद्धिमान छे, ते अवस्थाना अंतमां पण अर्थात् वृद्ध थवा छता पण दीक्षा लेवानी अपेक्षा करे छे—दीक्षा लेवानुं इच्छे छे, कारण के पंडितजन रत्नोना हारने भस्मने माटे बाळता नथी; अर्थात् आ मनुष्य जन्मरुपी रत्नोना हारने संसार सुखरुप निस्सार भस्म माटे नष्ट करता नथी, तपज करे छे. ” १८. जीवंधर महाराजने पद्मा आर्जीकाए ज्यारे आ रीते प्रबोधित करी दीधा—समजावी दीधा, त्यारे ते नमस्कार करीने पोताना मातानी पासेथी नम्रतापूर्वक पाछा आव्या. अने पोताना राजमहेलमां चाल्या गया. १९, बुद्धिमानोनां हृदय लांबा बखत सुधी विकार युक्त रहेतां नथी. मलिनता तो रत्नमा पण लागी जाय छे, परंतु तेनु साफ थवु कई कठण होतु नथी. भाव ए छे के,—मातानी दीक्षाथी राजाना हृदयमां जे शोकनो विकार थयो हतो, ते तरतज दूर थई गयो—बहु वखत सुधी रह्यो नहि, जेम रत्नमां लागेलो डाघ सहजज साफ थई जाय छे तेम. २०.

त्यार पछी क्षत्रविद्याने जाणनार जीवंधर महाराजे देवताओ सरखां सुखोथी पृथ्वीने भोगवीने त्रीस वर्ष एक क्षण बारना समान व्यतीत करी दीधां; अर्थात् तेमणे त्रीस वर्ष राज्य

कर्युं. अने ते समय सर्व प्रकारनां सुखने लीधे वातनी वातमां वीती गयो. २१

एक वखते तेमणे वसन्तरुतुमा पोतानी आठे स्त्रीओ साथे मोटा कौतकथी जळक्रीडानो महान् उत्सव कर्यो. २२ ते उत्सवमां जळक्रीडाना श्रमथी थाकीने महाराज एक लतामंडपयुक्त (वेलाओना माडवावाळा) उद्यानमा वांदरा साथे क्रीडा करवा लाग्या अने तेमनी पासे सारी सारी चेष्टाओ करावना लाग्या. २३. ते वखते कोई एक वादरे कोई बीजी वांदरी साथे उपभोग कर्यो, तेथी तेनी प्यारी वादरी क्रोध करवा लागी. वांदराए पोतानी वादरीने बहुज उपाय करीने मनावा धार्युं, परंतु ते तेने प्रसन्न करी शक्यो नहि २४. पछी ते वादरो कपटथा मरण तुल्य थईने जमीनपर पडी रह्यो ए जोईने ते वांदरी डरी गई अने वांदरानी पासे जईने तेणे तेनी ते मरणतुल्य अवस्थाने दूर करी दीधी २५. त्यारे वांदराए पण हर्षित थईने पोतानी वादरीने एक फणस फळ भेट तरीके आप्यु, परतु एक वनपाले वादरीने मारीने ते फळ छीनवी लीधु २६

आ बधी घटना जोईने विशेष वातोना जाणनार विद्वान राजाने ते वखते वैराग्य थई गयो. अने तेओ आ रीते १२ अनुप्रेक्षाओनुं चिंतवन करवा लाग्या,—२७.

१ अनित्य भावना.

आ वनपाळ मारा समान छे, वांदरो काष्ठांगार समान छे, अने फणस फळ राज्य समान छे, तेथी आ फळ मारे

त्यागवांज योग्य छे. २८. प्राणीओनी ए प्रथा छे के, तेमणे जन्म लधो, पुष्ट थयो, अने पछी नाश थयो. स्थिर कोई रह्युं नथी, तथा हे आत्मा! स्थिरस्थान अर्थात् मोक्ष तरफ ध्यान आप अथवा मोक्ष प्राप्त कर २९ आ जीवन क्षण मात्र पण स्थायी जणातु नथी, तोपण बहु खेदनी वात छे के, प्राणीओनी ईच्छाओ करोडोथी पण अधिक छे ३०. विषयभोग लाबा वखत सुधो रहीने पण आखरे नाश पामे छे " ज्यारे एवो निश्चय छे, त्यारे तेने पोतेज छोडी देवो जोईए कारण के अमे नहि छोडीए, तोपण ते नाश थवाथी बचशे नहि. जो अमे तेने पोते छोडी दईशु, तो अमारी मुक्ति थई जशे, नहि तो जन्म मरणरुप ससारनी वृद्धि थशे. ३१. जो नाशवान् शरीरथी अविनाशी सुख अथवा मोक्ष प्राप्त थई शके, तो हे आत्मा ! व्यर्थ समय केम खुवे छे ? तारे समयने सफळ करवो जोईए अर्थात् मुक्ति प्राप्त करवानो यत्न करवो जोईए ३२.

२. अशरण भावना.

हे जीव ! जेम नावना डूबवाथी समुद्रमा पक्षीने कोई पण शरण होतु नथी, तेज रीते मृत्यु समये तारुं कांईपण शरण थई शकतुं नथी. स्वास्थ्य रहेताज अर्थात् सारी भलाइमांज हजारो शरण सहायक जणाय छे ३३ जो आ जीवनी रक्षा माटे एना प्यारा बधु बहुज आयुध लइने चारे तरफ घेराएला होय, तोपण ते जोत जोतामाज नाश पामे छे. ३४. हे आत्मा! मंत्रयंत्रादिक पण तारा साचा स्वतंत्र रक्षक नथी. पुण्य होवा-

थीज्ञ ते बधा सहाय करे छे अने जो पुण्यनो उदय न होय, तो तेनुं होवुं पण निष्फळ छे. ३५.

३ संसार भावना.

हे आत्मा! तुं पोताना कर्मने वश थईने नटनी माफक नाना प्रकारना वेष धारण करीने भ्रमण कर्या करे छे. पापथी तिर्यंच अने नरकगतिमां, पुण्यथी स्वर्गलोकमां अने पुण्य पापथी मनुष्यगतिमां जन्म धारण करे छे. ३६. हे जीव बहु खेदनी वात छे के, तु लोढाना पांजरामां पुरेला सिंहना माफक एक क्षणं मात्र पण जे सहन थतु नथी एवा दुस्सह देहमां केवी रीते रहे छे? ३७.

आ पुद्गलोमां कोई पण परमाणु एवु नथी. के जेने तें कोईवार भोगव्युं होय नहि पछी शु ए पुद्गळोना अश के जे पीधेल समुद्रना बिंदुनी माफक छे. तेथी तारी तृप्ति थई शके छे? कदापि नहि. ३८ जे वस्तु भोगवीने छोडी दीधी छे, ते उच्छिष्टने तुं फरी भोगववा इच्छे छे हवे तुं भोगव्या विनानी अने सर्वोत्तम मुक्तिना आनन्दने भोगववानी इच्छा केम करतो नथी? संसारमां रागद्वेषथी कर्म बंधाय छे, कर्मथी बीजा शरीरमां जवानुं थाय छे, शरीरथी इंद्रियो उत्पन्न थाय छे, इंद्रियोद्वारा रागद्वेषादि थाय छे अने रागद्वेषादिथी फरी आज रीते संसार चक्रमां भ्रमण करवुं पडे छे. ४०, आ कार्यकारणरुप प्रबन्ध अनादिथी चाली रह्यो छे. तेमां नित्य दुःखज मळे छे, तेथी हे आत्मा! तुं तेने हमणांज छोडी दे. ४१.

४ एकत्व भावना.

हे आत्मा ! जो के तु एक शरीरने छोडीने बीजुं धारण करे छे अने पोताना कर्मने अनुसार भ्रमण करतो रहे छे, परंतु जन्म अने मरण वखते तुं सदा एकलोज रहे छे. ४२.

बंधुजन फक्त स्मशान पर्यन्त साथे जाय छे, उपार्जीत करेलु धन घरमां रहे छे. अने शरीर भस्म थई जाय छे. केवळ एक धर्मज तारी साथे रहेशे; अर्थात् धर्म तारो साथ छोडशे नहि बीजा सर्व छोडी देशे ४३ पुत्र, मित्र, स्त्री तथा बीजा लोक जे साथे वचमांज तारे सोबत थई गई छे, ते जो तारी साथे जता नथी, तो तेमा कई आश्चर्य नथी. आश्चर्य तो ए छे के, तारु शरीर पण जे आ पर्यायना प्रारभथीज साथे छे, ते तारी साथे जशे नहि ४४. तुज कर्मोनो कर्त्ता अने फळनो भोक्ता छे अने तुज मुक्तिनो प्राप्त करनार छे, पछी हे तात ! तु पोताने आधीन मुक्तिने लेवामा इच्छा केम करतो नथी ? ४५. हे आत्मा ! कर्मोद्वाराज अज्ञानी थइने तु स्वाधीन सुख अर्थात् मोक्षसुखने पामवाने तेना उपायोमा अभिलाषा करतो नथी, अर्थात् मोक्ष प्राप्त करवाना जे जे उपाय छे, त ते करतो नथी; अने उलटो दु खनां कारणोमां लागी रह्यो छ ४६

अन्यत्व भावना.

हे आत्मा ! हु देहरुप छुं, ए वात तु कदापि पोताना चित्तमा लावीश नहि. कर्म करवाथीज तारो शरीर साथे संबंध छे. तुं तो म्यानमां रहेनार तलवार समान छे. ४७. हे आत्मा !

अनित्य, अपवित्र अने चेतनारहित होवाथी आ शरीर ताराथी जुदुं छे अने सचेतन, अविनाशी, तथा पविल होवाने लीधे तुं आ शरीरथी जुदो छे. ४८. जे बुद्धि आपोआपज अशुभ कार्यमा लागे छे अने यत्न करवाथी पण शुभ काममां प्रवृत्त थती नथी, तेनो हेतु पूर्व जन्मना दुष्कर्म छे, अने आ हेतुथी आत्मा पण तेवांज कर्म करवा माडे छे. ४९.

६ अशुचित्व भावना.

जेना संबंधथी पवित्र वस्तुओ पण अपवित्र थई जाय छे अने जे रुधिर वीर्यादि मळोथी उत्पन्न थएल छे, शुं ते शरीर अपवित्र नथी ? अवश्य छे. ५०. कर्मरुपी कारीगरनी खूबीथी आ शरीर स्पष्ट देखातु नथी, तेथी रमणीय भासे छे, परतु विचार करवाथी तेमा मळ, मास, हाडका अने मज्जा सिवाय बीजुं शुं छे ? अर्थात् शरीर एज अपवित्र पदार्थोनो पिंड छे. ५१. हे आत्मा ! बीजु तो शु, जो दैवयोगथी आ शरीरनुं अन्त स्वरुप अर्थात् अदरना भाग शरीरनी बहार नीकळी आवे, तो तेनो अनुभव न करवानी इच्छा तो दूरज रही, परतु कोई तेने जोशे पण नहि. ५२. आ रीते हे आत्मा ! नाशने प्राप्त करनार, परतु अविनाशी मोक्षना साधनभूत आ मांसपिंडमय शरीरने आथी जे मोक्षरुप फळ मळे छे, तेने तेनो नाश थवा पहेलांज प्राप्त करीने छोडी दे; अर्थात् शरीरथी तपस्यादिक करीने मोक्ष प्राप्त कर अने पछी तेने छोड. ५३. हे आत्मा ! तुं आ शरीरनो साराश लई ले, पछी

आ शरीरनो नाश थवा छता पण बुद्धिमान पुरुष शोक करता नथी. जेमके शेरडीनो रस लई लीधा पछी जो शेरडीने बाळी नांखवामां आवे, तो कंई शोक थतो नथी तेम. ५४.

७ आश्रव भावना.

हे आत्मा! कर्मरुपी पुद्गल जे मोटा दु:खथी दूर होय छे, निरन्तर आगमन कर्या करे छे, अने ते कर्मथी भरेलं थइने तुं पाणीथी भरेला नावनी माफक नीचेज नीचे चाल्यो जाय छे अर्थात् अधोगतिए पहोंचे छे. ५५. हे आत्मा! आ आस्रवनुं कारण ताराज योग अने कषाय छे, जे सदा उत्पन्न थया करे छे. आत्माना प्रदेशोमा चंचळता होवाने योग अने शुभ अशुभ रुप परिणामोने कषाय कहे छे. ५६. हे आत्मा! आ कर्मनो आ आस्रव छे, अने आ कर्मनो आ आस्रव छे, ए रीते सारी रीतं जाणीने जे जे कर्मोना जे जे आस्रव छे, तेनां त्याग करीने कर्म अने तेना कारणरुप आस्रव छोडीने मोक्षगामी थइ जा. ५७.

८ संवर भावना.

हे आत्मा! तु अनुप्रेक्षाओनुं (भावनाओनुं) चितवन करतो करतो, समिति अने गुप्तिओनुं पालन करतो करतो, अने तप, सयम तथा धर्मने धारण करतो करतो, नाना प्रकारना परिषहोने जीत. ५८. हे आत्मा! ज्यारे तु एवो थई जाय, त्यारे कर्मोनो आस्रव रोकाई जवाथी आ संसाररुपी समुद्रमा ते नावना जेवो थई जा, के जेना पाणी आववाना छेद बंध थई जाय छे, अने तेथी जे

विघ्न वगर अभीष्ट स्थानपर पहोंची जाय छे. ५९. विकथादि **पंदर प्रमादोने** छोडीने, अने **आत्मभावनामां लवलीन** थईने बाह्य परिग्रहथी ममत्व छोडी दे पछी **गुप्ति** वगेरे तो तारा हाथ परज राखी छे, अर्थात् ते तो सहजज पाळी शकाय छे ६०. आ रीते सदा आत्माधीन थईने सुखथी प्राप्त थनार **मुक्ति-मार्गमां पोतानी बुद्धि लगाड.** दु खदायी बाह्य मार्गमां बुद्धि लगाववाथी शो लाभ थशे ? ६१. हे आत्मा ! **बाह्य पदार्थो** साथे निस्सार संबंध जोडीने तु मोह करे छे, तेथी तारा हृद-यमा प्रत्यक्षज व्यथा उत्पन्न थाय छे, जे साक्षात् नरके लई जनार छे. ६२

९. निर्जरानुप्रेक्षा.

त्रणे रत्नोनी अर्थात् **सम्यग्ज्ञान, सम्यग्दर्शन अने सम्य-क्चारित्रनी वृद्धिथी** तारा पूर्व सचित कर्मोनो पण नाश थई शके छे, कारण के कोई कारणथी उद्दीप्त थएलो अग्नि शु दाह्य वस्तुमा कई बाकी राखे छे ? नहि. ६३ हे आत्मा ! तु पूर्व कर्मोनो नाश करीने अने आगळ आवनार कर्मोने रोकीने **तेरमा गुणस्थानवर्ती केवळी** थई जा ज्यारे तळावनु बधु पाणी नीकळी जाय छे, अने नवु पाणी आववा पामतु नथी. त्यारे तेमा पाणी क्यां रही शके छे ? ६४. हे आत्मा ! पछी तुं ए त्रणे रत्नोने सुगमताथी पूर्ण करी शके छे. कारण के मोहना क्षोभथी रहित थई जवाथी **परिणाम** निर्मळ थई जाय छे. **भावार्थ** ए छे के, तेरमा गुणस्थानथी चौदमा गुणस्थानमा जवु

बहुज सहज छे. ६५. परिणामनी शुद्धि माटे बाह्य तप करवुं जोईए. कारण के अग्नि वगेरेनो नाश थवाथी चोखा पकावी (राधी) शकाता नथी ६६. ज्यारे तु बाह्य पदार्थोमां ईच्छा करीश नहि, त्यारेज परिणाम विशुद्धि थशे अने ईच्छा न करवामाज सुख छे, तेथी तु बाह्य पदार्थोमा केम वृथा मोहित थाय छे ? ६७. हे आत्मा ! मोक्ष सुखनी वात तो जवा दे, हजु तुं पोतानी इंद्रियोने टुंक वशमां राखीने पोते जातेज पोताना स्वरुपने पोतामाज विचारीने तेना सुखनोज अनुभव कर. ६८. शान्त अत करणवाळा पुरुषने पोताना अनुभवमा आवनारी जे प्रीति उत्पन्न थाय छे, तेज प्रीति आ वातने माटे प्रमाण छे के, आत्माथी उत्पन्न थएल कोई अनन्त सुख पण होय छे. ६९.

१०. लोकभावना.

आ लोक त्रण पवनोथी घेराएला, चरण फेलाएला अने कमर पर हाथ राखेला पुरुष समान छे. तेना उर्ध्व, मध्य अने अधो ए त्रण भाग छे, अर्थात् उर्ध्वलोक, मध्यलोक अने अधोलोक. ७० हे आत्मा ! आ असख्यात प्रदेशवाळा लोकमा जे जन्म अने मरणनुं स्थान छे, तेमा एवो एक पण प्रदेश नथी, के ज्या तु अनन्तवार जन्म्यो अने मर्यो हशे नहि. ७१. हे आत्मा ! अज्ञान अथवा मिथ्याज्ञानमां होवाथी तुं पहेलां प्रमाणे फरी ससारमा भ्रमण करशे, कारणके कारणनुं प्रबळ थवाथी कार्यनो नाश थतो नथी. ७२. हे आत्मा ! मूढ माणसोने भोगववा योग्य सुखनो त्याग करीने तप करवामां यत्न कर, कारणके प्रकाश थवाथी चिरस्थायी अंधकार पण नाश पामे छे. ७३.

११ बोधिदुर्लभ भावना.

आ कर्मभूमियां जन्म लेवो, मनुष्य पर्यायनु पामवु, भव्यता अर्थात् त्रणे रत्नोनो प्रकाश करवानी आवश्यक्ता, स्वंग-वंश्यता अर्थात् अवयवोनु सुदर सुदृढ होवु अने सारा कुळमां उत्पत्ति, हे आत्मा ! आ बधी वातोनु मळवु एक एकथी विशेष कठीण छे अने सर्वेनु एकदम मळवुं तो बहुज कठण छे. तेनी दुर्लभताना विषयमां तो कहेवानुज शुं छे ? ७४. परंतु हे आत्मा ! जो तारी धर्ममा बुद्धि न होय, तो ए बधी वातोनुं एकत्र थवु पण निष्फळ छे. जो अन्नना छोडमां दाणा न होय, तो खेतर वगेरे सामग्रीओना उत्तम होवाथीज शु ? कई पण नहि. ७५. तेथी हे मूढ ! आ दुर्लभ शरीरने धर्ममां लगाव. जे मनुष्य राखने माटे रत्नने बाळी नाखे छे, तेथी अधिक मूर्ख बीजो कोण हशे ? अभिप्राय ए छे के, धर्म कर्या विना विषयादि सेवनमा शरीरने लगाववु राखने माटे रत्नने बाळवा जेवु छे. ७६. धर्म अने पापथी कुतरो देव थई जाय छे, अने देव कुतरो थई जाय छे, तेथी तु दुर्लभ धर्मने धारण कर, कारण के धर्मज संसारमां मनोरथोने पूर्ण करनार छे. ७७. हे आत्मा ! तने भव्यता, अन्तरगदृष्टि, जीव मात्र पर दया, अने अतमा अध करण अपूर्वकरण तथा अनिवृत्तिकरणथी परिणामोनी निर्मळता ए बधानी प्राप्ति करीने तु सम्यग्दर्शन, सम्यग्ज्ञान अने सम्यक्चारित्रनी वृद्धियुक्त था. ७८.

१२ धर्म भावना.

हे आत्मा ! धर्मनुं महात्म्य जो ! धर्म कार्य करनार कदी शोक करतो नथी बधा प्राणी धार्मिक पुरुषमां विश्वास करे छे अने आश्चर्यनी वात ए छे के, धर्मात्मा लोक बन्ने लोकमां सुखी रहे छे ७९ हे आत्मा ! ज्यां सुधी तें मोक्षप्राप्ति करी नथी, त्यां सुधी तारी आ हितकारी अने अतिशय निर्मळ जैन धर्ममां मोक्ष आपनारी अत्यन्त स्थिर रुचि रहो. ८०.

आ रीते बार भावनाओना चिंतवनथी राजाने स्थिर अथवा निश्चळ वैराग्य थई गयो. थवोज जोईए, कारण के सज्जनोनी ए प्रकृतिज छे के, तेमना विचारोमां स्थिरता होय छे. अने पछी आ विषयमा सहायता मळवाथी तो कहेवुज शुं ? अर्थात् पछी तो बीजी पण स्थिरता आवी जाय छे. ८१.

विरक्त थईने महाराजा जीवंधर पोताना राज्यने तथा बीजा पदार्थोने तृण समान पण गण्या नहि. सत्य छे के जो हाथमां अमृत आवी जाय, तो पछी कडवी वस्तुने कोण पीए ? ८२. आखरे जैन शास्त्रोना जाणनार ते जीवंधर स्वामीए त्यांथी चालीने जिनेन्द्र भगवाननी पूजा करी अने एक चारण ऋद्धिना धारण करनार योगीन्द्र पासे धर्म श्रवण कर्यो. ८३. अने तेना श्रवण करवाथी ते अतिशय निर्मळ महाराज धर्म विद्याना जाणनार थया, कारण के रत्नोना संस्कार करवामां जे मणिकार चतुर होय छे, तेने पाणीदार बनाववानो अने चळकाववानो प्रयत्न करवाथी रत्न बहुज उज्वळ थई जाय छे. ८४.

त्यार पछी राजाए पोतानो पूर्व जन्मनो वृतान्त जाणवानी ईच्छाथी ते चारण मुनिने प्रश्न कर्यो त्यारे तेमणे महाराजना पूर्वजन्मनी आ रीते कथा कही,—८५ " हे राजा ! तुं पहेलां धातकीखंडना भूमितिलक नगरमा राजा पवनवेगनो यशोधर नामे पुत्र हतो. ८६. हे राजश्रेष्ठ ! कोई वखते तु राजहंसना बच्चाने तेना माळामांथी खेलवा माटे लई आव्यो अने तेनु तें निर्दोषताथी पालणपोषण कर्यु ८७ ए वात तारा धर्मज्ञ पिताए कर्णेथी सांभळी लीधी, तेथी तेणे ते वखते तने धर्मनो उपदेश आप्यो, अर्थात् समजाव्यो के, आ रीते पक्षीओने बंधनमां राखवा ए सारुं नथी, तेमां दोष लागे छे. कारण के आ बच्चाने एकतो बंधननुं दुःख थाय छे अने बीजु तेना मावाप तेना वियोगथी अतिशय दु खी थशे. तेथी आ उपदेश सांभळवाथी तु अतिशय धर्मात्मा बनी गयो ८८. ते वखते तने अत्यन्त वैराग्य थई गयो. पिताए पण रोक्यो, परतु ते मान्यु नहि अने पोतानी स्त्रीओ सुद्धां तें जिनदीक्षा लई लीधी तु दिगम्बर मुनि थई गयो. ८९. हे भव्योत्तम ! पछी घोर तपश्चरण करीने तेना प्रभावथी तुं पोतानी आठे स्त्रीओ साथे देव थयो; अर्थात् तु देव थयो अने तारी आठे स्त्रीओ देवांगनाओ थई. पछी स्वर्ग लोकथी चवीने तु पोतानी स्त्रीओ सुद्धा अही राजा थयो. ९०. पूर्वजन्ममां ते हसना बच्चाने तेना मावापथी तथा तेना स्थानथी जुदु कर्यु हतु अने पोताने घेर लावीने पांजरामा पूर्यु हतु, तेथी तेने जुदु करवाथी तने वियोग अने तेने बांधवाथी तने बंधन

थयुं. ९१. योगीन्द्रनुं आ वाक्य सांभळीने जीवंधर महाराज राज्यथी एवा डर्या के जेमके साप वीजळीना खरवाथी डरे छे अने पछी नमस्कार करीने पोताना नगरमां आव्या. ९२.

त्यार पछी तेमना नन्दाढ्य आदि नाना भाईओए अने तेमनी आठे स्त्रीओए पण सद्धर्मरुपी अमृतनुं पान कर्युं अने तेथी ते सर्व विषयभोगोना सुखने विष तुल्य समज्या. ९३. त्यारे त्यां विद्वान जीवंधर स्वामी गंधर्वदत्ताना पुत्र सत्यंधरनो राज्याभिषेक करीने अर्थात् तेने गादीपर बेसाडीने पोते पोतानी आठे स्त्रीओ साथे भगवाननु समोसरण प्राप्त थई. ९४.

समवसरण सभामां आवीने पूज्य राजाए श्रीमहावीर तीर्थंकरनी पूजा करी अने वारवार स्तुति करी ९५.—हे भगवान! हु संसारना जन्ममरणना रोगथी सदा पीडित अने भयभीत रहुं छुं, तेथी आप जेवा अकारण वैद्यना उपस्थित होवा छतां पण शुं ते तीव्र पीडा सहेवा योग्य छे? अर्थात् आप एवो उपाय करो के, जेथी आ पीडा सहेवी पडे नहि.९६. आप बधाना हितकारी छो, सर्व कई जाणो छो, प्रारब्धना बधां कर्मोनो नाश करी शको छो, अने हुं एक भव्य छु. पछी मारो आ जन्ममरणरुप भवरोग केम दूर थतो नथी? ९७ हे मोहरहित भगवान! हु आ देहरुपी पुराणा अने मोटा वनमां मोहरुपी दावानळथी बळी रह्यो छु. अने तेथी निरन्तर मोहित थई रह्यो छुं, मारी रक्षा करो! रक्षा करो! ९८.हे वीतराग! बधी विपत्तिओनु फळ आपनार संसाररुपी विषवृक्षना मारा रागरुपी अकुरोने जडथी उखेडीने फेंकी दो! ९९. हे रक्षा करनार

भगवान ! संसार सागरना मध्यमां डूबतां में रत्नत्रयरुपी नौका बहु कठीणाईथी प्राप्त करी छे, तेथी ए नौका मने मोक्षपार पहोंचाडनारी छे. १००.

आ रीते त्रण जगतना गुरु श्रीमहावीर भगवाननी स्तुति कर्या पछी जीवंधर महाराजे आज्ञा लईने जिनदीक्षा माटे गणधर देवने नमस्कार कर्या. १०१. पछी बुद्धिमान राजाए दिगम्बरी दीक्षा लईने ते महावीर भगवान आगळ बहु कठण तप कर्युं, के जेथी ज्ञानावरणीय, दर्शनावरणीय, वेदनी, मोहनीय, अतराय वगेरे आठे कर्मोंनो अनुक्रमे नाश थई जाय छे १०२.

त्यारपछी जीवंधर महामुनि त्रणे रत्नोनी पूर्तिने माटे अनन्तज्ञान, अनन्तसुखादि गुणोथी पुष्ट थया. १०३. अने अतमा तेमणे सिद्धपदवी प्राप्त करीने अलौकिक शोभायुक्त केवळज्ञानरुपी अतुल्य, अमुल्य अने अनन्त मोक्षलक्ष्मीनो अनुभव कर्यो. १०४.

आ रीते जे महान इच्छावाळो पुरुष ते महान सुखने प्राप्त करवानी इच्छा करे छे, के जे पवित्र जैनधर्मद्वारा बधां कर्मोनो नाश थवाथी मळे छे, ते बुद्धिमाने कल्याणनी प्राप्तिने माटे पवित्र जैनधर्मनु अवलम्बन करवुं जोईए के जे जैनधर्म कुमातिरुपी हाथीने मारवामां सिंह समान छे १०५.

गुणोए करीने बधा क्षत्रीओना चूडामणि (शिरोमणि), प्रभाव अने युवावस्थाए करीने शूरवीर, अने महान ऐश्वर्यथी कुबेरतुल्य ए राजाओना राजा जविंधर शोभायमान हो! १०६.

आ प्रमाणे श्रीमान् वादीभसिंहसूरिए रचेल क्षत्रचूडामणि ग्रन्थमां मुक्तिश्रीलम्भ नामे अगीआरमुं प्रकरण पूर्ण थयुं.